अलंकारादर्श.

अलंकारादर्शनी प्रस्तावना.

अलंकार एटले शणगार. हरेक वस्तुने शणगारवाथी ते मनोरंजन थाय छे. हांडी, तख्ता, झुमर आदिक घरनो शणगार छे. वस्त्र, आभूषण आदिक माणसना शरीरनो शणगार छे. तेम वाणीने शोभावाना उपमा आदिक केटलाएक अलंकार छे. बाळक जेंवानी वातोमां अलंकार आवता नथी, पण विद्वानोनी वाणीमां रुपकालंकार, उपमालंकार, उत्प्रेक्षालंकार आदिक घणा अलंकारो आवे छे. परमेश्वरे कोइ कोइ माणसमां तो भाषण करवानी एवी शक्ति मुकेली होय छे के ते सांभळीने सांभळनारनां मन बहु रंजन थाय छे, अने तेने वधारे वधारे सांभळवानी इच्छा थाय छे. धर्मनो उपदेश करवामां पण अलंकारिक वाणीथी माणसनां मन पलळी जाय छे, अन संसारनो त्याग करीने ते चाली नीकळे छे. गमे तेवो उदाशी माणस होय ते पण अलंकारिक वात सांभळीने पोतानुं दुःख वीसारी मुके छे. परमेश्वरनी भक्ति पण अलंकारिक वाणीथी करवाथी वधारे प्रेम उपजे छे.

श्रीजी महाराजे बाइ भाइ आदिक सौना साधारण धर्म शिक्षापत्रीमां लख्या छे तेमां सौने नित्यकर्मनो पांसठमो श्लोक लख्यो छे. तेमां कह्युं छे के

श्लोक

प्रसहं कार्य मित्थं हि सर्वैरपि मदाश्रितैः।
संस्कृत प्राकृत ग्रंथा भ्यास श्चापि यथा मति ॥६५

अर्थ--आगळ कह्या प्रमाणे अमारा आश्रीत बाइ भाइ ना-

नां मोटां सर्वेए नित्यकर्म करवुं. अने पोतानी बुद्धि प्रमाणे संस्कृत अने प्राकृत ग्रंथोनो अभ्यास पण रोज करवो. एवी श्रीजी महाराजनी आज्ञा छे. माटे भगवाननी भक्ति अलंकार सहित वाणीवडे करवा सारु आ ग्रंथ पण सौने अभ्यास करवा योग्य छे. तथा उद्धव संप्रदायना बीजा ग्रंथो वांचतां पण आ ठेकाणे कयो अलंकार छे ते आ ग्रंथ भणवाथी समजाय.

माटे भाइ तथा बाइ, गृहस्थाश्रमी तथा त्यागी, सौने वाणीना अलंकार जाणवानी घणी जरुर छे. गद्य कविता अने पद्य कविता ए बेय प्रकारनी कविता अलंकारथी वधारे शोभे छे. अलंकार वगरनी होय ते नग्न कविता कहेवाय छे. कविप्रियामां केशवदास कविए कह्युं छे के—दोहा

जदपी सुजाति सुलछनी, बहु विवेक वित चित्त ॥
भूषन बिन न विराज हि, कविता बनिता मीत ॥१॥

अर्थ--हे मित्र कविता अने वनिता जो सारी जातनी होय, सारा लक्षणवाळी होय अने बहु विवेक जाणनारी चित्तमां होय पण अलंकार विना शोभे नहीं.

आपणा देशमां प्राचीन मत अने अर्वाचीन मत एवा बे प्रकारना मतना अलंकारना ग्रंथो छे. काव्यप्रकाश आदिक केटला एक ग्रंथो प्राचीन मतना छे. ते उपरथी केशवदास कविए वृजभाषामां कविप्रिया बनावी छे; अने संस्कृतमां जयदेव कविए चंद्रालोक ग्रंथ कर्यो ते अर्वाचीन मतनो गणाय छे. ते उपरथी अप्य दिक्षिते कुवळयानंद ग्रंथ कर्यो. ते उपरथी वृजभाषामां भाषाभूषण, अलंकार रत्नाकर आदीक केटलाएक ग्रंथो थया छे. ते ग्रंथोमां घणुंकरीने निर्लज उदाहरणो आपेलां छे. माटे त्यागी पुरुषोने के

नीतिमान पुरुषोने ते उदाहरणो सांभळवां गमतां नथी; केमके केटलांएक उदाहरणो तो दुराचरणनां छे. माटे आ समयमां धर्मनुं स्थापन करवाने प्रगट थएला श्री स्वामीनारायणनी श्री लक्ष्मीनारायण देवनी गादीना आचार्य वर्य श्री विहारीलालजी महाराजनी केटलाएक शिष्योए प्रार्थना करवाथी ते विद्वान महाराजाए गुजराती भाषामां अलंकारादर्श नामनो ग्रंथ रच्यो; केमके बाइ भाइ आदिक सर्वेने भणतां सुगम पडे.

ते विद्वान माहाराजाए पोताना संप्रदायनी पुष्टिना केटलाएक संस्कृत तथा भाषाना ग्रंथो रचेला छे; अने केटलाएक संस्कृत ग्रंथोनी टीकाओ करी छे; अने कवितानो शोख घणो छे; हजारो रुपीया खरचीने प्रतिष्ठामख आदिक मोटा यज्ञ करेला छे; वरतालमां गोमतीजीनो घाट सारा पथ्थरथी बंधाव्यों छे अने स्वमत तथा परमतना विद्वानोनुं सन्मान करे छे.

घणुंकरीने आ ग्रंथ रचवामां कुवलयानंद ग्रंथनो आधार राख्यो छे; तथा वृजभाषानो अलंकार रत्नाकर जे मेवाडना उदेपुरमां छपाएलो छे ते तथा काशीमां छपाएलो टीका सहीत कविप्रिया ग्रंथ तथा चमत्कार चंद्रिका आदिक ग्रंथो पासे राख्या हता. अप्य दिक्षिते लख्युं छे के प्राचीन पंडितोना मत तथा अर्वाचीन पंडितोना मत सारी पेठे तपाशीने आ सो अलंकार में नीरुपण कर्या छे. मतलब के प्राचीन ने अर्वाचीन मतमां जेटला अलंकार छे तेमांनो एके अलंकार में पडयो मुक्यो नथी. तेम छतां वृजभाषाना कोइ कोइ कविए प्राचीन मतमां एकवीस प्रकारना उपमालंकार कह्या छे, तेमांथी माळोपमा, संशयोपमा, निर्णयोपमा, एवा भेद पोताना ग्रंथमां दाखल करेला छे, पण विचारी जोतां ते अलंका-

र नामांतर करीने कुवळयानंदमां दाखल करेला जणाय छे. ते माटे अमे आ ग्रंथमां माळोपमा आदिक प्राचीन मतना अलंकार दाखल कर्या नथी. रसवद आदिक बीजा पंदर अलंकार बीजा भागमां छे; तेमां नवरसनुं नीरुपण करेलुं छे. त्यारपछी संकरालंकार एटले मिश्रीत अलंकारनुं प्रकरण छे. तेपछी त्रीजा भागमां अनुप्रासादिक शब्दालंकार बताव्या छे. तेपछी थोडाक चित्रालंकार पण दाखल कर्या छे.

आदर्श एटले दर्पण, जेम कपाळमां तिलक आदिक अलंकार करीने दर्पणमां मेळवी जोवाय छे, तेम वाणीनो अलंकार होय ते आ ग्रंथमां मेळवी जोवाय; माटे आ ग्रंथनुं नाम अलंकारादर्श राख्युं छे.

बाप पोतानी दीकरीने भणावी शके तथा भाइ पोतानी बेनने भणावी शके एवो आ ग्रंथ छे.

आ ग्रंथ रचवामां शास्त्री कुंजविहारीदासजी तथा वरतालनी संस्कृत शाळाना अध्यक्ष पुराणी पितांबर प्रेमजी रहीश गाम गणाना पुराणी केशवप्रसाददासजीए सहायता करी छे. ग्रंथ तैयार थया पछी केटलाएक विद्वान संतोए तपाशीने ग्रंथ प्रमाण कर्यो छे. तेमज श्रीमंत गायकवाड सरकारना नामांकित शास्त्री बद्रीनाथजीए ते ग्रंथ अथथी इती सुधी तपाशीने सारो अभिप्राय आप्यो छे. तो पण कोइ ठेकाणे भूल रही गइ होय तो विद्वानोए क्षमा करवी.

ली०

क. दलपतराम डाह्याभाइ

अलंकारादर्श.

॥ श्रीहरीकृष्णायसालंकारायनमः॥ ❁ अथ अलंकारादर्श लिख्यते ॥ ❁ शार्दुलविक्रीडित छंद ॥ वंदुं श्री वृषनंदने उर धरी आनंदना कंदने ॥ फेडी मायिक फंदने अधिक जे आपेज आनंदने ॥ जेणे सौ मुनिवृंदने सुख कर्युं छे जे प्रिय छंदने ॥ वंदु तेह मुकुंदने मति अति आपे मति मंदने ॥१॥ ❁ अथ गणपति प्रार्थना ॥ ❁ रे गौरी सुत सिद्धि बुद्धि सतियो नारी तमारी भली ॥ बुद्धी तो बुद्ध लोक उपर भली ॥ राखे कृपा एकली ॥ सिद्धीने समजाविने पण कहो ॥ कांइ कृपा ते करे ॥ सिद्धी जो नहि सानुकूल थइ तो ॥ बुद्धी थकी शुं सरे ॥२॥ आर्या गीति ॥ धर्म कुळे तनु धारी धर्माचार्ये विहारिजीलाले निजजननी विनतीथी ॥ भाषालंकृति बनावि वरताले ॥३॥ ❁ अथ ग्रंथ प्रयोजन ॥ ❁ उपजाति छंद ॥ ग्रंथो अलंकारतणा घणा छे ॥तथापि ते निर्लज शब्दना छे॥ वांचे नही पुत्र पितानि पास ॥ जो होय लज्जा लवनो निवास ॥४॥ माटे रच्यो ग्रंथ घणा विवेके ॥ आमां नथी निर्लज शब्द एके ॥ नीति तथा श्री प्रभूमांहि प्रीति ॥ तेनुं घणुं वर्णन शुद्ध रीती॥५॥ ❁ अथ देशी भाषा प्रयोजन॥ ❁ भाषा सु शाखा सम उर आणो ॥ ते सर्वनुं संस्कृत मूळ जाणो ॥ ते मूळथी तो रस कोइ ले छे ॥ शाखाज सौने फळफूल दे छे ॥६॥ ❁ अथ भाषा नियम ॥ ❁ स्रग्धरा छंद ॥ भाषा काव्ये भणीजें–इ–उ–रु–लघु तणा ॥ दीर्घ दीर्घे लघुता संयोगादी रहे तेपरथकि थ-

डके ॥ तोज पामे गुरूता ॥ जोडेला थाय जूदा पण कदि वरणो भिन्न जोड्या न जाय ॥ पादां ते प्रास लावो नहिंतर कविता अंग भंगा जणाय ॥७॥ दोहा ॥ जे अक्षर पादांतनो ॥ अकार एमां होय ॥ तेने गुरु गणवो पडे ॥ ते पण गणिये तोय ॥८॥

टीका ॥ जेम संस्कृतमां पादांतनो अक्षर गुरुनो लघु अने लघुनो गुरु मनाय छे ॥ तेम भाषामां-इ-उ-रु-ए त्रण स्वरो लघुना गुरु ॥ अने गुरुना लघु फावे तेम बोलाय छे ॥ अने जोडाक्षरथी पेहेलो लघु होय ते थडके तोज गुरु गणाय ॥ जेम छत्र धर्म ए गुरु छे ॥ पण गळ्युं तळ्युं जम्या रम्या ए थडकता नथी ॥ माटे गुरु नथी ॥ भाषामां जोडाक्षर जूदा पाडवा होय तो पडाय ॥ जेम धरम समरण इत्यादि ॥ पण पराक्रमनुं प्राक्रम जगतनुं जक्त नगरनुं नग्र लखे तो ते भूळ गणाय ॥ अने देशी भाषाओमां पादांते अनुप्रास जरूर जोइये ॥ केमके सुरदास तुळसीदास प्रेमानंद शामळ भट आदिक तथा सतसंगमां जे जे कवियो थया तेमां कोई कविनी कविता पादांते अनुप्रास वगरनी नथी ॥

अलंकार विषे ॥ दोहरा ॥ वाणी शोभे जे वडे ॥ अलंकार छे एह ॥ पंडिततणा प्रसंगथी ॥ शिखाय घडतां तेह ॥९॥ अलंकार देखी सुणी ॥ जन रंजन नहि थाय ॥ अलंकार ते तो नहीं ॥ कदिये पण कहेवाय ॥१०॥ बिभत्स भाषा बोलिने ॥ भवाइना करनार ॥ हसे हसावे ते नही ॥ अलंकार शृंगार ॥११॥

टीका ॥ नवरस अने व्यंजना ते कवितानो जीव छे ॥ अने वाणी शरीर छे ॥ ते अलंकार नथी ॥ पण वाणीने शोभावा सारू ॥ उपमा आदिक अर्थालंकार अने अनुप्रासादिक शब्दालंकार छे ॥ ते अलंकार छे ॥ माटे अलंकारना उदाहरणमां ॥ रस के व्यंजना होय ते अलंकार जांणवो नही ॥ अलंकारना लक्षणमां कह्या प्रमाणे उदाहरणमां भाव होय तेटलोज ते अलंकार जांणवो ॥

❁ अथ उपमालंकार विषे ॥ ❁ दोहरा ॥ जेनुं वर्णन कीजीये ॥ ते कहिये उपमेय ॥ दइये जेनो दाखलो ॥ ते उपमा न ठरेय ॥१२॥ मळतो गुण ते बेयनो ॥ धर्म कहे कवि तेह ॥ जेवुं पेठे जेम सम ॥ उपमा वाचक एह ॥१३॥ जो ते चारे होय तो ॥ पुर्णो-

पमा गणाय ॥ एक विना बे त्रण विना ॥ लुप्तोपमा लखाय ॥१४॥ ꕥ अथ वर्णनीय तथा अवर्णनीयनां नाम ॥ ꕥ दोहरा ॥ प्रस्तुत वर्ण्य प्रकृत विषय ॥ आस्पद ते उपमेय ॥ अवर्ण्य अप्रस्तुत विषयी ॥ ए उपमा न कहेय ॥१५॥ गुण अथवा धर्म ॥ शब्द स्पर्श रूप रस ॥ गंध दयाछल जेह ॥ क्रिया आदि मळता गुणो ॥ धर्म कहीजे तेह ॥१६॥ ꕥ अथ अधम उपमा ॥ ꕥ दांत श्वेत छे अस्थिसम ॥ मुछ कालीसम काग ॥ एवी उपमा अधमने दैरो देखी लाग ॥१७॥ द्राख खाधि में जे रीते ॥ काग लिंब फल खाय ॥ एवी उपमा आपने ॥ दे ते मूर्ख मनाय ॥१८॥ जे गुणनी उतकृष्टता ॥ जे मांही कहेवाय ॥ उपमा एनी आपिये ॥ श्रोता मन मकलाय ॥१९॥

टीका ॥ उपमानो जे गुण वखाणिये ते गुण जेनामां वधारे होय तेनी उपमा अपाय ॥ तेमां पण अयोग्य उपमा अपाय नही ॥ जेमके

दोहरो ॥ गान भलुं गणिकातणुं ॥ सौ जाणे संसार ॥ तेनी उपमा संतने ॥ दे गुण हीन गमार ॥२०॥

टीका ॥ परमेश्वरने के तेना अंगने उपमा आपीये एवि कोई वस्तु नथी पण वाणी शोभावा सारु कमल तथा चंद्र आदिकनी उपमा अपाय छे ॥

ꕥ अथ पूर्णोपमा ॥ ꕥ उपजाति छंद ॥ सुपत्र पुष्पे तरु जेम शोभे ॥ जोवा जनोनी मनवृत्ति लोभे ॥ जाणो अलंकारथि तेम वाणी ॥ पामे सुणी स्नेह मनुष्य प्राणी ॥२१॥

टीका ॥ एमां अलंकार अने वाणी ए बे उपमेय छे ॥ अने पत्र पुष्प तथा तरु ए बे उपमान छे ॥ शोभवुं ते गुण अथवा तेनो धर्म छे ॥ अने जेम ते उपमा वाचक शब्द छे ॥ एमां चारेवानां छे माटे ते पूर्णोपमा छे ॥ श्रीजीमहाराजनुं मुख पूर्णचंद जेवुं आनंदकारी छे इत्यादि ॥ जेमां शोभा के सारुं सारुं वखाण्युं होय तेज उपमालंकार छे एम नथी ॥ नठाराने नठारी उपमा दैये तेपण उपमालंकार छे ॥

जेमके दुर्जननी वाणी कडवी झेर जेवी होय छे ॥ एमां वाणी उपमेय छे ॥ झेर उपमान छे ॥ अने कडवी ए तेनो धर्म छे ॥ अने जेवी उपमावाचक शब्द छे ॥ माटे ते पूर्णोपमालंकार छे ॥

	अथ लुप्तोपमाना भेद				
	नंबर	वाचक	धर्म	उपमा	उपमेय
चारेवांनां छे माटे पूर्णोपमा छे	१	१	२	३	४
वाचक लुप्ता....	२	०	२	३	४
धर्म लुप्ता	३	१	०	३	४
वाचक धर्म लुप्ता	४	०	०	३	४
उपमान लुप्ता....	५	१	२	०	४
वाचकोपमान लुप्ता	६	०	२	०	४
धर्मोपमान लुप्ता	७	१	०	०	४
वाचक धर्मोपमान लुप्ता....	८	०	०	०	४
उपमेय लुप्ता	९	१	२	३	०
वाचकोपमेय लुप्ता....	१०	०	२	३	०
धर्मोपमेय लुप्ता........	११	१	०	३	०
वाचक धर्मोपमेय लुप्ता....	१२	०	०	३	०
उपमानोपमेय लुप्ता........	१३	१	२	०	०
वाचकोपमान उपमेय लुप्ता	१४	०	२	०	०
धर्मोपमान उपमेय लुप्ता....	१५	१	०	०	०
चारे लुप्त बनी शके नहि	१६	०	०	०	०

ए रीते जोतां प्रस्तारमां सोळ प्रकार थाय तेमां पहेलो प्रकार तो पूर्णोपमानो छे ॥ अने बारमा प्रकारमां मात्र उपमान रहे छे ते तो रुपकातिशयोक्ति अलंकार छे ॥ अने बाकीना–९–१०–११–१३–१४–१५–अने १६–एटलामां उपमेय लुप्त थाय एवा अलंकार बनवा घणा मुशकेल छे तोपण तेमांनो एक नवमो प्रकार ता-

णी तोडीने उपमेय लुप्ता आमां बतावीशुं ते सहित आठ प्रकारनी लुप्तोपमा थइ शके पण खरुं जोतां सात प्रकारनीज लुप्तोपमा छे ॥

❁ अथ लुप्तोपमा ॥ ❁ इंद्रवज्रा छंद ॥ श्रीजी तणो छे घनशाम देह ॥ छे कंज जेवा कर बेय तेह ॥ चंद्रास्यनी आगळ एकवार ॥ सत्संगिने संत मळ्या अपार ॥२२॥

टीका ॥ एमां लुप्तोपमा त्रण्य छे॥ श्रीजीनुं शरीर घनशाम कह्युं॥ एमां देह उपमेय छे ॥ घन उपमान छे ॥ अने शाम गुण छे माटे ते वाचकलुप्ता थइ ॥१॥ कमळ जेवा बे कर कह्या एमां कर उपमेय छे ॥ कमळ उपमान छे ॥ अने जेवा ए वाचक शब्द छे ॥ पण गुण कह्यो नथी ॥ माटे धर्मलुप्ता थई ॥२॥ चंद्रास्य एमां आस्य मुख्य ते उपमेय छे॥ अने चंद्र उपमान छे॥ माटे वाचक धर्मलुप्ता थई ॥३॥

दोहरो ॥ भगुजी बहुधा बळ वडे ॥ जय करी जुद्धस्थान ॥ मनमां माने ते पछी ॥ भडनर भीम समान ॥२३॥

टीका ॥ एमां जय करवो ते गुण ॥ भीम उपमान ॥ समान वाचक ॥ पोताने भीम जेवो माने ते ॥ पोताने ए उपमेय शब्द नथी माटे उपमेयलुप्ता छे ॥४॥

हरिगीत छंद ॥ हरि दर्शने हुं तो गयो प्रभु प्रसादी देता हता ॥ ते प्रसादी मुजने मळी ॥ इच्छे अजादिक देवता ॥ जे त्यां जवुं मळवी प्रसादी तेनुं आस्वादन थवुं॥ अणचिंतव्युं ए अवसरे तें कीरदाडमियुं हवुं॥ हे हरिजनो ए अवसरे ते कीरदाडमियुं हवुं ॥२४॥

टीका ॥ एमां पण चार लुप्तोपमा छे ॥ मारुं जवुं अने अणचिंतवी प्रसादी मळवी ते किरदाडमियुं थयुं॥ मतलबके पोपटनुं आववुं अने दाडमनुं पडवुं॥ प्रसादीनो स्वाद लेवो ते पोपटे दाडमनो भक्ष कर्या जेवुं थयुं ॥ जवुं अने प्रसादी मळवी ते उपमेय छे अने पोपटनुं आववुं अने दाडमनुं पडवुं ते उपमान छे॥ प्रसादीनो स्वाद उपमेय छे ॥ अने दाडमनो भक्ष उपमान छे ॥ अणचिंतव्युं थवुं ते समान धर्म छे ॥ कीरदाडमियुं ते शुक दाडमना जेवुं जेमके मजीठियो रंग ते मजीठना जेवो रंग एमां जेवो ए शब्दनो आभास छे माटे केवळ ॥ उपमान लुप्ता छे ॥१॥ जो आभास मात्रथी वाचक शब्द मानीये नही तो वाचकोपमान लुप्ता छे ॥२॥ चोथा चरणमां अणचिंतव्युं ते समान धर्म कह्यो छे तेने बदले पांचमुं चरण बोलीये तो ते

धर्म जतो रहे तेथी एकवार धर्मोपमान लुप्ता थाय ॥३॥ अने बीजीवार वाचक धर्मोपमान लुप्ता थाय छे ॥४॥ मूर्ख बहु विचारीने काम करे तोपण मंछा कांकाना जेवुं दुखकारी करे ॥ एमां मूर्खनुं काम उपमेय छे ॥ जेवुं ए वाचक छे दुखकारी धर्म छे मंछा कांकानुं काम उपमान छे पण ते स्पष्ट बताव्युं नही माटे उपमान लुप्ता छे॥ उपमान लुप्तानां उदाहरणो पंचोपाख्यानमां घणां छे॥ एक कवि लुप्तोपमानां उदाहरण एवी रीतनां आपे छे के ॥

दोहा ॥ श्रीहरीनी शुक नासिका ॥ रक्तदाडमी दांत ॥ गजसम गति कटि सींहसम भलीज सूक्षम भ्रात ॥२५॥

टीका ॥ शुक नासिका एमां ॥ नासिका उपमेय छे ॥ वाचक शब्द के धर्म नथी ॥ अने शुक जेवी नासिका नथी पण शुकना नाक जेवी छे ॥ ते नाक कह्युं नथी माटे॥ वाचक धर्मोपमान लुप्ता छे॥ रक्तदाडमी दांत॥ एमां दांत उपमेय छे॥ रक्त धर्म छे॥ पण उपमावाचक शब्द नथी अने दाडमना जेवा दांत नही पण दाडमना बीज जेवा दांत छे ते बीज कह्यां नही माटे ॥ वाचकोपमान लुप्ता छे॥ गजसम गति ॥ एमां गति उपमेय छे॥ ते हाथी जेवी नथी पण हाथीनी चाल जेवी छे॥ ते चाल कही नही माटे ।। धर्मोपमान लुप्ता छे ॥ सिंहना जेवी सूक्ष्म कटि कही ॥ एमां कटि उपमेय छे सूक्ष्म धर्म छे ।। सम उपमा वाचक शब्द छे ॥ ते कटि सिंह जेवी नथी पण सिंहनी केड जेवी छे ॥ ते केड कही नही माटे॥ उपमान लुप्ता छे ॥ कुवलयनंदमां प्रत्येक अलंकारनां एकथी वधारे उदाहरण आप्यां छे ॥ पण लुप्तोपमानां विशेष उदाहरण आप्यां नथी ॥ तेथी जणाय छ के लुप्तोपमानी झाझी प्रवृत्ति नहि होय ॥ माटे भाषाभूषण आदिकमां लुप्तोपमाना भेद कह्या नथी ॥

❀ अथ अनन्वयालंकार ॥२॥ ❀ लक्षण ॥ दोहरो ॥ जे वस्तू उपमेय छे ॥ एज होय उपमान ॥ अनन्वयालंकार छे ॥ सौ समजे ते स्थान ॥२६॥ उदाहरण ॥ सवैया ॥ सूरतनो सरदार भलो अरदेशर ते कहिये नर केवो ॥ मान मळ्युं सरकारतणुं वळि गाम मळयां गुण उत्तम एवो ॥ फारशि ने अंगरेजी भण्यो सतसंग विषे पण शोभित तेवो॥ खानबहादुर स्वामि नही अरदेशर ते अरदेशर जेवो ॥२७॥ पुनः॥ दोहा ॥ गर्धव चाल्यो वस्त्रपर ॥ कविये देखी कह्युंज ॥ अरे तने केवो कहुं ॥ तु जेवो ते तुंज ॥२८॥

टीका ॥ आकाश जेवो आकाश छे ॥ अने समुद्र जेवो समुद्र छे इत्यादि ॥

۞ अथ उपमेयोपमालंकार ॥३॥ ۞ लक्षण ॥ दोहा ॥ उपमा ज्यां अन्योन्यनि ॥ कहे कोइ कविराय ॥ तो ते उपमेयोपमा ॥ अलंकार कहेवाय ॥२९॥ उदा०॥ सज्जन आ संसारमां ॥ बे बंधन बळवान ॥ कांता समान कनक छे ॥ कांता कनक समान ॥३०॥ पुनः॥ आदि अंतविण बेय छे ॥ में जांण्या मुज पास ॥ काळ कहुं आकाश सम ॥ काळ समो आकाश ॥३१॥ ۞ अथ प्रतिपालंकार ॥४॥ ۞ दोहरा ॥ जोतां जे उपमान छे ॥ ते कहिये उपमेय ॥ पांच प्रकार प्रतीपमां ॥ प्रथम कहीजे तेय ॥३२॥ श्री हरिना मुखसम शशी ॥ ओपे छे आकाश ॥ तारा मंडळ त्यां दिसे ॥ मुनि मंडळसम पास ॥३३॥ पुनः॥ कवित ॥ परणेलो पचीश वरसनो मरण पाम्यो कुटुंबियो मळी बहु कल्पांत करे छे ॥ अफीणीये वाटे जतां पुछ्युं आ शामाटे रुए ॥ कह्युं बाळा बीचारीनो चोटलो उतरे छे॥ अफीणीए कह्युं ते अमलपाणी लेतो हतो॥ तेनी पाडीना त्यारे अफीणियो उचरे छे ॥ एवा मरनारने ते आटलुं बधुं शुं रोवुं ॥ धाननां धनेरां एवां तो अनेक मरे छे ॥३४॥ पुनः॥ लोधीका पति अभेसिंहजीए देह मुक्या पछी एक कविये कहेलुं॥ कवित ॥ तारा विना कविता करी करी सुणावुं केने ॥ तारी तुल्य धनद ते हरनी हजुर छे॥ केने कहुं कष्ट जइ जगतनो मित्र जे छे ॥ तारा जेवो इंद्र पण ते तो इंद्रपुर छे ॥ शीतळ कथन कही कोण मन शांत करे ॥ चंद्र पण दुर जेनुं तारा जेवुं नुर छे ॥ वियानो विनोद केनी साथे करुं अभेसींह ॥ देव गुरु तारा जेवो पंडित ते दूर छे ॥३५॥ दोहरा ॥ उपमा ते उपमेय कहि ॥ जो तेथी जे ठार ॥ करे अनादर वर्ण्यनो ॥ बिजो प्रतीप प्रकार ॥३६॥ रे खल नर भसवातणुं ॥ तुं न धरिश अभिमान ॥ तुज सरखा भसनार तो ॥

दिसे सैकडो श्वान ॥३७॥ वर्ण्यनेज उपमेय करि ॥ वळि तेनाथकि जेह ॥ करे अनादर अन्यनो ॥ त्रीजो प्रतीप तेह ॥३८॥ रे तारा मंडळ तमें ॥ तजो गर्व ततकाळ ॥ तमसरखी श्री हरि गळे ॥ छे मोतीनी माळ ॥३९॥ पुनः॥ लेखणनी प्रशंशा ॥ हें हळ तुं हरखीश नहि ॥ उपकारीपणुं धारि ॥ लेखण पण तुज तुल्य छे ॥ जनने जिवाडनारि ॥४०॥ जे उपमा उपमेयनी ॥ व्यर्थ कहे कवि जेह ॥ चारु चतुर्थ प्रकारनो ॥ प्रतिप प्रमाणो तेह ॥४१॥ दशरथ राजा देशमां ॥ थया स्वतंत्र समर्थ ॥ एने उपमा इंद्रनी ॥ आपे ए तो व्यर्थ ॥४२॥ वर्णनीय उत्तम छतां ॥ अन्यतणुं शुं काम ॥ एम गणे उपमानने ॥ छे प्रतीप ते ठाम ॥४३॥ ज्यारे हरिना मुखतणो ॥ पेखे परम प्रकाश ॥ रविने ढांके छे विधि ॥ अभ्र वडे आकाश ॥४४॥ पुनः॥ दीपक माग्यो नृप सुते ॥ कहे कवि ते ठाम ॥ कुळदीपक छो कुंवर त्यां ॥ दीवानुं शुं काम ॥४५॥ पुनः॥ उपजाति छंद ॥ पवित्र तीर्थोदकथी थवाय ॥ तीर्थे विचारी जन एम जाय ॥ मळया सदाचारि सुसंत जेने ॥ शाकामनुं छें पछि तीर्थ तेने ॥४६॥ ❁

अथ रूपकालंकार ॥५॥ लक्षण कवित ॥ उपमेयनेज उपमान रुपे वरणवे ॥ अलंकार रुपक तो एहनुंज नाम छे ॥ जुदापणुं जरिये न भासे ते अभेद रुप ॥ जुदापणुं भासे तो ताद्रुप तेह ठाम छे ॥ सम गुण न्युन गुण अथवा अधिक गुण ॥ अकेकाना त्रण त्रण भेद भला आम छे ॥ छ प्रकारनो छे एवो रुडो रुपकऽलंकार ॥ आ जुओ कह्याथी ओळखाय ते तमाम छे ॥४७॥ सम अभेद रुपक उदाहरण ॥ दोहरो ॥ विभूति छे शशि चाप छे ॥ नीलकंठ विख्यात ॥ हे संतो स्नेहे जुओ ॥ आ शंकर साक्षात ॥४८॥

टीका ॥ एमां श्रीजीने अने शंकरने अभेदपणे सरखा गुण वरणव्या ॥ एक एकथी वधारे के ओछो गुण कह्यो नही ॥ माटे सम अभेद रुपकालंकार छे ॥ शि-

वने विभूति छे ॥ अने श्रीजीने वैभव छे ॥ शिवने कपाळे चंद्र अने हाथमां धनुष छे ॥ अने श्रीजीना चरणमां चंद्र तथा धनुष छे माटे बेय सरखा कह्या ॥

❁ अथ न्युन अभेद रुपक ॥ ❁ छे तो शंकर आस्वयं ॥ जीत्यो जेणे मेन ॥ चंद्र भलो छे भाळमां ॥ पण नथि त्रीजुं नेन ॥४९॥

टीका ॥ एमां श्रीजीने शंकर साथे अभेद वर्णन कह्युं के जेणे कामदेवने जीत्यो ॥ अने जेना कपाळमां चंद्र छे ॥ एटले श्रीजीने कंकुनो चांदलो छे ने शिवना कपाळमां चंद्र छे ॥ पण श्रीजीना कपाळमां त्रीजुं नेत्र नथी एटलुं ओछुं छे ॥ माटे न्यूना भेद रूपक थयुं ॥

❁ अथ अधिका भेद रुपक ॥ ❁ ब्रह्मचारी रुप श्रीजी तथा शिवजीने विषे ॥ दोहा ॥ आ शंकर शिर छे जटा ॥ भूत अधीश तथापि ॥ तेह करे छे तीव्र तप ॥ क्रोध न करे कदापि ॥५०॥

टीका ॥ एमां नीलकंठ ब्रह्मचारीने शिव रुपे अभेद कह्या ॥ पण ते भूत प्राणी मात्रना नाथ क्यारे पण क्रोध करता नथी ॥ एटलुं शिवनाथी अधिक कह्युं ॥

❁ अथ ताद्रुप्यसम रुपक ॥ ❁ सोरठो ॥ निरखो हरिमुख चंद ॥ हे मुज नेत्र चकोर आ ॥ मुनि गण तारा वृंद ॥ ते निरखो ते पास छे ॥५१॥

टीका ॥ एमां मुख अने चंद्र नेत्र अने चकोर मुनि मंडळ ने तारा मंडळ ए रीते उपमेय उपमान स्पष्ट वताव्यां ॥ पण ओछा वधतापणुं कांई कह्युं नही ॥ माटे समताद्रुप्य रूपक छे ॥

❁ अथ न्यूनताद्रुप्य रुपक ॥ ❁ दोहा ॥ भजे नही भगवानने ॥ जन पशु जाणो तेह ॥ पाछळ न मळे पुंछडुं ॥ स्वामि खरेखरि एह ॥५२॥ ❁ अथ अधिकताद्रुप्य रुपक ॥ ❁ निरखे हरिमुख चंदने ॥ नारी नरो निशंक ॥ शीतळता शोभा भली ॥ न मळे कांई कलंक ॥५३॥ इंद्रवज्रा छंद ॥ राजा कही जे पुर नाथ जेह ॥ बीजो कही जे कविराज तेह ॥ सेवाय राजा निज देश ठामे ॥ सर्वत्र सेवा कवि राज पामे ॥५४॥ ❁ अथ परिणामालंका-

र ॥६॥ ۞ लक्षण कवित ॥ उपमान उपमेय रुपे उपमेयतणु ॥ काम करे परिणामालंकार ते थाय छे ॥ चरणारविंद एनो अर्थ तो बे रीते थाय ॥ एक तो चरणरुपी कमळ गणाय छे ॥ बीजो अर्थ कमळने चरण रुपे मनाय ॥ रुपकने परिणाम एथी ओळखाय छे ॥ चरणारविंदमां सुगंध लेवा भमे भ्रंग ॥ चरणारविंदे चांपी दीधो बळिराय छे ॥५५॥ उदाहरण ॥ वसंततिलका छंद ॥ जे पादपद्मथकि अंडकटाह फोडयुं ॥ जे पादपद्म शकटासुर रुप तोडयुं ॥ जे पादपद्मथि कर्यो दुखि काळिनाग॥ ते पादपंकजतणो महिमा अथाग॥५६॥

टीका ॥ पद्मवडे अंडकटाह फोडाय नही ॥ पण पद्मे चरण रुपे थईने अंडकटाह फोडयुं ॥ माटे परिणामालंकार थयो ॥

पुनः॥ दोहा ॥ करेल पोते कीर्तिगिरि ॥ ते जोवाने काज ॥ उत्तम भूपति रुप थई ॥ अर्जुन आव्यो आज ॥५७॥ बीजुं उदा०॥ वसंततिलका छंद॥ कन्यानुं दान करवा धन कोई राये॥ आप्यु गरीब द्विजनेज उदारताये ॥ आप्यो द्विजे तरत त्यां बदलो अनूप ॥ चित्ते विचारि शुभ आशिरवाद रूप ॥५८॥

टीका ॥ एमां उत्तम बदला जेवो आशिर्वाद आप्यो ॥ माटे बदलो उपमान छे ॥ अने आशिर्वाद उपमेय छे ॥ ते बदलाये आशिर्वाद रुपे थइ काम कर्युं ॥

۞ अथ उल्लेखालंकार ॥७॥ ۞ दोहा ॥ बहु जन देखे एकने ॥ जूदे जुदे प्रकार ॥ तो कविजन तेने कहे ॥ उल्लेखालंकार ॥५९॥ शार्दुलविक्रीडित ॥ श्रीजीने शिव रूप सत्य निरखे शंभु उपासी घणा ॥ देखे वैष्णव विष्णु रूप हरिने जैने जिनादी गण्या ॥ भाळे भक्त गणेशना गणपती देवीज देवीतणा ॥ जाणे छे जवनो खरेखर खुदा तेमां न कांइ मणा ॥६०॥ उल्लेख बीजो ॥ दोहरो ॥ अनेक रूपे एकने ॥ कहे एक जण कोय ॥ जूदा जूदा गुणवडे ॥ ए

उल्लेखज होय॥६१॥ श्रीजी विषे॥ उपजाति छंद॥ विद्वान जोतां अज देव ए छे॥ तपस्वि जोतां नरभाइ ते छे॥ जो चिन्ह सोळे चरणो विषे छे॥ श्रीकृष्ण हे सज्जन आ दिसे छे॥६२॥ ꙮ अथ स्मृति॥ ॥ भ्रांति॥ ॥ संदेह॥ ॥ अलंकार॥ ꙮ दोहरो॥ स्मृति॥ भ्रांति॥ संदेहनां॥ लक्षण नाम प्रमाण॥ अलंकार त्रण तेह छे॥ समजे जेह सुजाण॥६३॥ ꙮ अथ स्मृति मान॥८॥ ꙮ वैतालीय छंद॥ विचर्या जन ज्ञान बागमां॥ निरख्या होज भलाज भागमां॥ हरि रंग रम्या सखा लई॥ स्मृति ते होज निहाळतां थइ॥६४॥ ꙮ अथ भ्रांति अलंकार॥९॥ ꙮ घडियाळमां भूतनी भ्रांति॥ कवित॥ भूपना भवनमां सुतो गमार गमाडियो॥ घडियाळ घोष सुणी॥ भडकीने भागे छे॥ बुम सुणी बहु लोके कारण पुछयुं तो कहे॥ छे तो घर ठीक पण बीक बहु लागे छे॥ नकी भूत थाय मरी जाय जे नवा घरमां॥ आ घरमां भाइ भारे भूतावळ जागे छे॥ रात अरधीक ज्यारे जायने अंधारूं थाय॥ घणणण घणणण घंटडीयो वागे छे॥६५॥ अन्योन्य भ्रांति विषे॥ शार्दुलविक्रीडित छंद॥ ग्रीष्मे ताप अमाप जाणि वणिजो राते मळी चालिया॥ सामासामि पुरे जवा कर विषे भाला भला झालिया॥ सामासामि मळया महा वन विषे गै रात बारे घडी॥ लूटारातणि टोळि आवि लुटवा अन्योन्य भ्रांति पडी॥६६॥ ꙮ अथ संदेहालंकार॥१०॥ ꙮ वडोदरा विषे॥ श्रीजीनी असवारी सारि अतिशे ऐरावतो हाथियो॥ पेखीने परदेशी एक जनने संदेह स्वांते थियो॥ शुं हुं जागृत छुं जरूर उरमां के स्वप्ननी वात छे॥ साचुं आज वडोदरूं शहर छे के स्वर्ग साक्षात छे॥६७॥ ꙮ अथ शुद्धा पन्हुति अलंकार॥११॥ ꙮ दोहा॥ बीजानो गुण मूकवा॥ करे एकनो लोप॥ शुद्धा पन्हुति तेह छे॥

गुणपरनो आरोप ॥६८॥ कुपुत्र तें तो पुत्र नही ॥ एम जाणजो आप ॥ ते तो मात पितातणुं ॥ पूर्वजन्मनुं पाप ॥६९॥ हेत्व पन्हुति ॥ अलंकार ॥ अन्यारोपण जो करे ॥ युक्ति करीने कोय ॥ अलंकार एतो भलो ॥ हेतु अपन्हुति होय ॥७०॥ लाज नही ते नर नही ॥ न खर न लांबा कान ॥ भला भुंडा सौने भसे ॥ समजो आ तो श्वान ॥७१॥ लटकता मोटा पंखा विषे ॥ उपजाति ॥ ले वींजणाने लटकावि वाय ॥ एवुं नथि क्यांई पुराणमांय ॥ दशाननें तोडि उडाडि जेह ॥ जटायुनी पांख जणाय एह ॥७२॥ ❁ अथ पर्यस्ता पन्हति ॥ ❁ दोहा ॥ वर्ण्य विषे आरोपवा ॥ अवर्ण्य गुण ढंकाय ॥ पर्यस्ता पन्हुति भलो ॥ अलंकार ते थाय ॥७३॥ कवित ॥ भटकतो भाट एक आव्यो अमदावादमां ॥ धान खावा वेची खाधि त्यां पोतानी ढालडी ॥ प्रभातें उठीने गयो कोचरब पालडिये ॥ कहाणी सुणी लोके ओढाडि सारी शालडी ॥ खानपान मान पामि ॥ गामना वखाण कर्यां ॥ वाहवाह वारिजाउं पालडी वहालडी ॥ अहमदावाद ते तो अहमदावादडीज ॥ शहेर तो सारुं कहुं कोचरब पालडी ॥७४॥ ❁ अथ भ्रांता पन्हुति ॥ ❁ दोहा ॥ भ्रांती भागे कोइनी ॥ सत्य कहीने वात ॥ भ्रांता पन्हुति तेह छे ॥ अलंकार साक्षात ॥७५॥ शार्दुलविक्रीडीत ॥ श्रीजीनी अस्वारी विषे ॥ गाजे छे घन हे सखी नहि सखी वाजे वडी नोबतो ॥ बोले मोर नहि सुछंद उचरे छे संतनी सोबतो ॥ बोले दादुर वृंद वृंद जननां बोले बहु ठाम छे ॥ जो आ मेघ गिरी शिरे गज शिरे ते तो घनश्याम छे ॥७६॥ ❁ अथ छेका पन्हुति अलंकार ॥ ❁ दोहा ॥ छेका पन्हुति पूछतां ॥ सत्य छुपावे वात ॥ प्रथम कहेलुं फेरवि ॥ समजावे भलि भात ॥७७॥ कवित ॥ पुछयुं एके वणिकना पुत्रने तें भाळि भाई ॥ सारी घोडी मारी ते चोराइ छे सवारमां ॥ बाळक

त बोल्यो एक जणो चोरी जतो हतो ॥ बहु वार ते तो आवि बेसे छे बजारमां ॥ त्यारे तो तुं कोरटमां साक्षी पूरी जैश साची ॥ एवुं सुणी एणे वात फेरवि ए वारमां ॥ कारवमां राखिने तेनो टेको देतो जतो हतो ॥ साचेसाची साक्षी हुं पुरिश सरकारमां ॥७८॥ भुपतिने संभळावा कोई व्यासे कथा वांची ॥ तलमात्र मांस खाय ते नरके जाय छे ॥ जे प्राणीनुं मांस खाधुं ते प्राणीयो वाघ बनी ॥ तेनुं मांस तोडी खाय तेथी दुःखी थाय छे ॥ सांभळीने शंका करी राजाये करीने रीस ॥ वात उलटावा त्यारे व्यासजी चहाय छे ॥ ते माटेज तलमात्र मांस कोई खाता नथी ॥ खाय छे ते तलमात्रथी विशेष खाय छे ॥७९॥ ۞ अथ कैतवा पन्हुति ॥ ۞ दोहा ॥ तेह कैतवा पन्हुति ॥ एकतणे मिश ज्यांय ॥ वर्णन करिये अन्यनुं ॥ समजे बुध मनमांय ॥८०॥ विचर्या श्रीहरि वन विषे ॥ हरख्या वन वसनार ॥ तरुवर सौ कंपन मिषे ॥ नृत्य करे ते ठार ॥८१॥ पुनः॥ हे हरिजन आ तो जुओ ॥ उमंग राखी ऊर ॥ प्रभुनि प्रदक्षणा करे ॥ फरवा मिश शशि सूर ॥८२॥

टीका ॥ एमां फरवाने मिशे ॥ प्रदक्षणा करे छे कह्युं ॥ आशा धरे टीका करेली कारिकामां कैतवा पन्हुति पछी छेका पन्हुति छे अने कुवलयानंदमां एथि उलटुं छे ॥

۞ अथ उत्प्रेक्षा अलंकार ॥१२॥ ۞ दोहा ॥ करे अन्यथा कल्पना ॥ वस्तु हेतु फळमांहि ॥ उत्प्रेक्षालंकार छे ॥ ते तो जांणो त्यांहि ॥८३॥ वस्तूत्प्रेक्षा द्विविध छे ॥ उक्तास्पदा अनुक्त ॥ भेद भणुं छुं तेहना ॥ समजे जे मति जुक्त ॥८४॥ जे कोई वस्तू विषे ॥ करि कल्पना सोय ॥ उक्तास्पदमां होय छे ॥ अनुक्तमां नहि होय ॥८५॥ हेतू फळ उत्प्रेक्षणा ॥ बे बे विधनी जाण ॥ आस्पद सिद्ध असिद्ध ते ॥ पंडित करे प्रमाण ॥८६॥ हेतूनी के फळतणी ॥ अन्य कल्पना

जेह ॥ दीसे सिद्ध असिद्ध के ॥ तमे तपासो तेह ॥८७॥ कवित ॥ हेतु बतावामां त्रीजी पांचमी विभक्ति होय ॥ फळ बतावामां चोथी विभक्तिज होय छे॥ कां तो पामवा ने लेवा एवा एवा शब्द होय॥ फळ उतप्रेक्षा तमे जाणो भाई तोय छे ॥ हेतु जे कहेलुं होय ते हेतु जो सिद्ध होय ॥ तो ते सिद्ध विषया छे कहे सहु कोय छे ॥ फळ उतप्रेक्षामां ते फळ सिद्ध जो थयेलुं॥ तो ते सिद्ध विषया अलंकार गण्योय छे ॥८८॥ ❁ अथ उक्तास्पदा वस्तूत्प्रेक्षा ॥ ❁ उ०॥ दोहा ॥ लक्ष्मीनारायणतणुं ॥ मंदिर उज्वळ एह ॥ शिखर धवळ गिरिनुं हशे ॥ हुं जाणु छुं तेह ॥८९॥

टीका ॥ एमां मंदिर उपमेय छे॥ ते कही बताव्युं ॥ माटे ते उक्तास्पदा वस्तूत्प्रेक्षा छे ॥ अने हुं जाणुं छुं ए उत्प्रेक्षावाचक शब्द छे ॥

पुनः॥ दोहा ॥ चक्षू विलोक्यां वृद्धनां ॥ चसमां सुद्धां चार ॥ शुंप्रज्ञा चक्षू दिसे ॥ अंतरतणां बहार ॥९०॥

टीका॥ एमां चसमां वर्ण्य छे ते बताव्यां माटे वस्तूत्प्रेक्षा छे॥ अने शुं उत्प्रेक्षादर्शक शब्द छे ॥

पुनः॥ दोहा ॥ जाणुं मानुं शुं नकी ॥ जांणे हशेज होय ॥ उत्प्रेक्षादर्शक भला ॥ शब्दो कहिये सोय ॥९१॥

टीका ॥ ए शब्दो होय तो वाच्योत्प्रेक्षा ॥ अने तेनो अध्याहार थतो होय तो गम्योत्प्रेक्षा कहेवाय ॥

❁ अथ अनुक्तास्पदा वस्तूत्प्रेक्षा ॥ ❁ गीति छंद ॥ जज्ञ कर्यो महाराजे॥ विप्र हजारो जमे जुओ आजे॥ जमतां द्विज हरषे छे॥ घृत तो जांणे घणुज वरषे छे ॥९२॥

टीका॥ बीजा उदाहरणमां घी वरसे छे कह्युं पण कहेवानुं ए छे के॥ एवी रीते घी पीरसाय छे ते पीरसाय छे कह्युं नही॥ माटे अनुक्तास्पदा वस्तूत्प्रेक्षा छे॥

❀ अथ सिद्धस्पदा हेतूत्प्रेक्षा ॥ ❀ दोहा ॥ कोकिल तो कूकू कहे ॥ सुणिने सौनां नाम ॥ ते निंदकनुं तेथि शुं ॥ थयुं हशे तन शाम ॥९३॥

टीका ॥ कोयलने पुछिये के मोर केवो ॥ पोपट केवो ॥ मेनां केवी ॥ ते सौनां नाम सांभळीने कुकु एटले कुत्सित एटले खोटां एम कहे छे ॥ ते कारणथीज ते निंदा करनारिनुं आखुं शरीर काळुं थयुं हशे के शुं ॥ एमां कुकु बोले छे ते आस्पद कहेतां विषय छे ते तो सिद्ध छेज ॥ तेने पांचमी विभक्ति जोईए ते पण छे माटे सिद्ध विषया हेतुत्प्रेक्षा छे ॥

❀ अथ असिद्धास्पदा हेतु०॥ ❀ दोहा ॥ मळ्यो लेख मेराइने ॥ जतां गांभूनुं राज ॥ जाजम पाथरि तेथि शुं ॥ बेसारे सौ आज ॥९४॥

टीका ॥ एमां मेराईने जाजम पाथरी आपे छे ते उपर कल्पना करी छे ॥ पण तेने गांभुनुं राज जतां लेख मळ्यो ते कारण बताव्युं पण ते लेख मळ्यो नथी॥ माटे असिद्ध विषया हेतूत्प्रेक्षा छे ॥

पुनः॥ असिद्धास्पदा हेतुत्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ जोगि कहे जन सौ मने ॥ एवि धरी उर आश ॥ जटा वधारी तेथी शुं ॥ वडे कर्यो वन वास ॥९५॥

टीका ॥ एमां वडे जोगी कहेरावानी आशाथी जटा वधारी नथी ॥ पण एवि आशाथी वधारी एवुं कारण बताव्युं ते विषय छे ॥ वडने एवी आशा नथी ॥ माटे ए असिद्ध विषया हेतूत्प्रेक्षा छे ॥

❀ अथ सिद्धास्पदा फळोत्प्रेक्षा ॥ ❀ दोहा ॥ अधर राखवा आभने ॥ थंभ सरिखुं आज ॥ आ मंदिर उंचुं घणुं ॥ रच्युं हशे महाराज ॥९६॥

टीका ॥ आभ स्वभावे उंचो रहेलो छे ते फल सिद्ध छे ॥ माटे सिद्ध विषया फळोत्प्रेक्षा छे ॥

❁ अथ असिद्धास्पदा फळोत्प्रेक्षा ॥ ❁ दोहा ॥ ऊंधे शिर लटकी रही ॥ वडे जुओ वागोळ ॥ राज पामवा पुनर्भव ॥ शुं तप करे अडोळ ॥९७॥

टीका॥ एमां वागोळ आवते भवे राज्य पांमवा सारु तप करती नथी॥ पण एवा फळनी कल्पना करी ते विषय छे पण तेने इच्छा नथी माटे असिद्ध विषया फळोत्प्रेक्षा छे॥ ए रीते उत्प्रेक्षाना छ प्रकार कह्या॥ ते वाच्योत्प्रेक्षा छे॥ तेमज उत्प्रेक्षा वाचक शब्दो विना पण छ प्रकारनी गम्योत्प्रेक्षा थाय ॥ तेमां बेनुं उदाहरण कहीये छैये ॥

❁ अथ सिद्धास्पदा वस्तू गम्योत्प्रेक्षा॥ ❁ उपजाति छंद॥ दीवाळिनी दीपकमाळ सारी ॥ देखा कह्युं काई जने विचारी ॥ हीरातणा आ सणगार सारा॥ धरी त्रिये छे निज अंग धार्या॥९८॥

टीका॥ एमां दीपमाळ आस्पद छे तेमां हीराना हार वस्तूनी उत्प्रेक्षा करी॥ अने उत्प्रेक्षा वाचक शब्द नथी तेथी सिद्धास्पदा वस्तु गम्योत्प्रेक्षा थइ ॥

❁ अथ हेतु गम्योत्प्रेक्षा॥ ❁ वसंततिलका वृत्त ॥ पादाब्ज पेखि प्रभुनां सुकुमार सारां ॥ पद्मो रह्यां जळ विषे जइने बिचारां ॥ पेखि प्रभूनि गति गर्व नहीज राखे ॥ मातंग लाजि निज मस्तक धूळ नाखे॥९९॥ ❁ अथ रुपकातिशयोक्ति अलंकार॥१३॥ ❁ दोहा॥ रुपक अतिशय उक्ति ते ॥ केवळ ज्यां उपमान ॥ गुणथी तथा क्रियाथकी ॥ थाय वर्ण्यनुं ज्ञान ॥१००॥ छ प्रकार रूपकतणा ॥ प्रथम जणाव्या जेह ॥ रूपक अतिशय उक्तिना ॥ एवा छ भेद एह ॥१०१॥

टीका॥ पण ग्रंथ वधी जाय माटे एक भेदनुं उदाहरण कहेशुं उत्प्रेक्षामां एम मानुं छुं॥ अथवा हशे एम कह्युं छे॥ अने अभेद रूपकमां वर्ण्य जणाय ने आ अद्य इत्यादिक कांईपण शब्द होय॥ अने रुपकातिशयोक्तिमां वर्ण्य जुदो जणावानुं कांइ चिन्ह होय नहि ॥ अने लुप्तोपमामां उपमा वाचकनो आभास होय अने भ्रांति मतमां ते वस्तूमां भ्रांति पडि होय छे ॥

उपजाति छंद ॥ सुधां शु छें स्वच्छ समीपमांय ॥ सुधानि वृष्टि पण तेथि थाय ॥ चकोर प्रेमी मळिने अनेक ॥ जोई रह्या छे करि दृष्टि एक ॥१०२॥

टीका ॥ आ चंद्रमांथि अमृतनि वृष्टि थाय छे ते तुं जो ॥ अने अनेक प्रेमी चकोर एक नजरथी जोई रह्या छे॥ एमां गुण अने क्रिया विचारतां जणाय छे के॥ श्रीजी महाराजनुं मुख आल्हादकारी चंद्र छे ॥ अने तेमांथि वचनामृत वरसे छे अने प्रेमी भक्त मळीने एक नजरे जोई रह्या छे ॥ नहितो अनेक चकोर मळीने चंद्रने जुए नही ॥ कोई चकोर क्यांई होय ॥ अने कोई क्यांई होय ॥

पुनः॥ स्त्रगधराछंद॥ बे पद्मो उपरे बे कदलि तरु तणा थंभ रुडा धर्या छे॥ ते माथे कूप दीठो पछी त्रिसरितनां स्थान त्यां तो ठर्यां छे॥ उंचे छे शंख सारो तदुपरी शशि छे ताप ते तो हरे छे॥ मोटो आनंद पामी मुनिजन सघळा ध्यान तेनुं धरे छे ॥१०३॥

टीका ॥ एमां मुनिजनो तेनुं ध्यान धरे छे एम कह्युं॥ ते उपरथी समजाय छे के ते श्रीजीना अंगनु वर्णन कर्युं छे ॥ रणवगडामां राता खीला ते गाजर ॥ रणवगडामां होला हींचे ते नाळियेर॥ रणवगडामां लोहिनां टीपां तें चणोठी॥ ए बधां रुपकातिशयोक्तिनां उदाहरण छे ॥

❀ अथ सापन्हवरूपका तिशयोक्ति ॥ अलंकार ॥ ❀

दोहा ॥ पर्यस्ता पन्हुति दिसे ॥ अतिशयोक्तिमां ज्यांय ॥ रूपक अतिशयउक्तितो॥ सापन्हव समजाय॥१०४॥ कवित॥ थलमां कमळ चार पांच पांच पांखडीनां॥ नजरोनजर सर्व संतोये निहाळ्यां छे ॥ कहुं शुं वखाणी ते तो कमळ छे कांत्तिमान ॥ रंगमां कहुं तो राता रंगनां रुपाळां छे ॥ पांखाडिये पांखाडिये मोति तो अकेक पेरव्युं ॥ कमळने रंगे दिसे राता रंगवाळां छे॥ जळना कमळमांहि मोती कहे छे ते जुठुं ॥ थलना कमळमां में मोती भलां भाळ्यां छे ॥१०५॥

टीका॥ एमां श्रीजीना चरणकमळनुं तथा नख रुपी मोतीनुं वर्णन कर्युं तेथी रुपकातीशयोक्ति छे॥ पण एमां जळनां कमळमां मोतीनो निषेध कर्यो तेथी साप-

न्हतिशयोक्ति छे ॥

❁ अथ भेदकातिशयोक्ति अलंकार ॥ ❁ दोहा ॥ जो कहिये सर्वेथकी ॥ न्यारी वस्तू आज ॥ भेदक अतिशय उक्ति ते ॥ कहे महा कविराज ॥१०६॥ पुरपुरमां पेंडा भला ॥ करे भले सौ कोय ॥ पण ते मथुरांपुरतणो ॥ पेंडो न्यारो होय ॥१०७॥ पुनः॥ सवैयो ॥ काम सुणी अरधे कथनें ॥ जइ कासद तुल्य करो कदि कूदी ॥ शीत वृषा न विचार करो न विचार करो रजनी वदि शुदी॥ लाडु जलेबि जमाडि जुओ ॥ अछते पिरसो कदळिफळ छुंदि ॥ साकर खांड समर्पि जुओ पण जीभ मिठाशनी वातज जुदी॥१०८॥

❁ अथ संबंधातिशयोक्ति अलंकार ॥ ❁ दोहा ॥ जेह थवा संभव नहिं ॥ थयुं कल्पिये तेम ॥ संबंधातिशयोक्ति तो ॥ अलंकार छे एम ॥१०९॥

टीका ॥ संबंध अने संभव ए बे शब्दोनो भावार्थ एक छे॥ ते थवानो योग नहि तोपण एम थयुं एवी जुठी कल्पना करे ते संबंधातिशयोक्ति अलंकार ॥

कवित ॥ मुंबईमां ठाम ठाम वैद तो विशेष वध्या ॥ अनेक प्रकारनां ते ओसड बनावे छे॥ गण्या न गणी शकाय कोटमां नही समाय ॥ संख्या तेनी जोतां अचरज उपजावे छे ॥ शेरीये शेरीये तथा चौटामां ने चकलामां ॥ वैद वैद वैद एवां नाम तो धरावे छे ॥ कुतराने मारवा ज्यां कांकरो नमीने लैये ॥ त्यां तो एक वैदराज हाथमांही आवे छे ॥११०॥

❁ अथ असंबंधातिशयोक्ति ॥ ❁ ते संबंधातिशयोक्तिथी उलटी छे ॥ दोहा ॥ बनवानो संभव छतां ॥ न बन्युं कहिये तेह ॥ अण संबंधातिशयतो ॥ उक्ति कहिये एह ॥१११॥ श्रेष्ठ समैये डुर्गपुर ॥ माणस मळ्यां अथाग ॥ जोतां खाली क्यांई पण ॥ तलपुर

न मळे माग ॥११२॥ ❁ अथ अक्रमातिशयोक्ति अलंकार ॥ ❁ दोहा ॥ उपजे साथे एकदम ॥ कारण कारज बेय ॥ अक्रम अतिशयउक्तितो ॥ कहे कविजन तेथ ॥११३॥ आपे उत्तम रामजी ॥ ओषड ते वखणाय ॥ खावुं जावुं रोगनुं ॥ बेय एकदम थाय ॥११४॥

टीका ॥ उत्तमरामजी डाकतर रांदेरना सत्संगी सारा छे ॥ ते औदिच्य ब्राह्मण छे ॥

पुनः ॥ दोहो ॥ राम रामना शत्रुओ ॥ तजे क्षमा समकाळ ॥ तजेज साथे कोश पण ॥ राम खडग भूपाल ॥११५॥

टीका ॥ एमां कह्युं के रामचंद्रजी शत्रु उपरनी क्षमा तजे एटले शत्रुओ तरत क्षमा कहेतां पृथ्वी तजीने जता रहे छे ॥ अने रामनुं खडग कोश कहेतां मीयांन तजे छे ॥ एटले शत्रु राजाओ कोश कहेतां खजानो तजे छे ॥ ए उदाहरणमां श्लेषार्थ छे ॥ जे अलंकारना लक्षणमां कह्युं होय के आमां श्लेषार्थ लाववो ॥ तेमां श्लेषार्थनी जरुर छे ॥ ते विना बीजा अलंकारोमां श्लेषार्थ लावे छे ते तो पंडिताई जणाववा वास्ते छे ॥

❁ अथ चपलातिशयोक्ति अलंकार ॥ ❁ दोहा ॥ कारण जाण्याथी तरत ॥ कार्योत्पत्ति जणाय ॥ चपलातिशयोक्ती भले ॥ अलंकार कहेवाय ॥११६॥ आगम सुण्युं हनुमाननुं ॥ चमक्यो रावणराय ॥ पड्या मुगट शिर उपरथी ॥ थर थर कंपी काय ॥११७॥ पुनः ॥ थाय पापनो नाश जो ॥ जाय महाप्रभु पास ॥ एवुं सुणवा मात्रमां ॥ थयो पापनो नाश ॥११८॥ ❁ अथ अत्यंतातिशयोक्ति ॥ ❁ दोहा ॥ प्रथम थयानुं पछि बने ॥ पछिनुं प्रथमज थाय ॥ अत्यंतातिशयोक्ति ते गुणवंता कवि गाय ॥११९॥ कवित ॥ सारा दैवी जने एम सांभळ्युं जे श्रीजी आज ॥ कोटि भव केरां कर्म चरणे मुकावे छे ॥ तेथी एवी आशा राखी सोंपवा संचितकर्म ॥ सभा मध्ये श्री हरिनी आगळ ते आवे छे ॥ नीयम धरावा कर्म चरणे मुकावा सारु ॥ जइ एकजण तहां जळ मात्र लावे छे ॥ संचित करम

त्यां तो प्रथम प्रलय थयां पछी कर्म अर्पवानो संकल्प करावे छे ॥१२०॥ ❁ अथ तुल्पयोगिता ॥१४॥ ❁ दोहा ॥ बहु वर्ण्योनो एक गुण ॥ बहु अवर्ण्यनो एक ॥ तुल्प योगिता तेह छे ॥ वांचो करी विवेक ॥१२१॥ ❁ अथ वर्ण्यैक गुण ॥ ❁ उपजाति छंद ॥ जो भाई सूर्योदय थाय ज्यारे ॥ अंधारुंने तस्कर घुड त्यारे ॥ खद्योत तारा गण सर्व जेह ॥ अदर्श थै क्यांई रहेज एह ॥१२२॥ साखी जुनी ॥ बिल्लां कुत्तां ब्राह्मणां ॥ चोथां चुनारां ॥ खावुं थोडुं ने वेर बहु ॥ पांचमां पींजारां ॥ ए तुल्पयोगिता छे ॥१२३॥ ❁ अथ अवर्ण्यैक धर्म ॥ ❁ उपजाति छंद ॥ श्रीजीनि जेणे मुरती निहाळी ॥ प्रत्पंगमां कोमळ ने रुपाळी ॥ शशि कळा केळ सरोज जेह ॥ कठोर भासे तनमांहि तेह ॥१२४॥ ❁ अथ बीजा प्रकारनी तुल्पयोगिता ॥ ❁ दोहा ॥ करे वृत्ति रिपु मित्रपर ॥ राखी एकज रीत ॥ तुल्पयोगीता बीजी ते॥ समजे समजू चित्त ॥१२५॥ उपजाति छंद ॥ सत्संगि सारो गणतां गणाय ॥ ज्यारे हरि दर्शन काज जाय ॥ तथा कुतर्की जन वाद कामे ॥ श्रीजी समीपे जइ हार पामे ॥१२६॥

टीका ॥ सत्संगी पुष्पनो हार पामे ॥ अने कुतर्की हार पामे एटले हारी जाय॥

पुनः॥ दोहा ॥ छे आ चंदन वृक्षने ॥ शत्रू मित्र समान ॥ पाळे कापे तेहने ॥ दे सुगंधनुं दान ॥१२७॥ ❁ अथ तुल्पयोगिता त्रीजी॥ ❁ जेओमां उत्कृष्ट गुण॥ ते सहवर्ण्य गणाय ॥ तुल्पयोगिता त्रीजी ते ॥ समजे सुजन सदाय ॥१२८॥ कवित ॥ प्रवासमां कवि एक परा विषे रात रह्यो ॥ करे क्यां मुकाम कोइने नहि पिछाणीआ ॥ सराणीय स्नेहथी उतार्या निज सदनमां ॥ चाकरि करी विशेष सारा जन जाणिया ॥ कहे कवि काठि कोळी कणबीने फळिये ॥ हुं फर्यो कोईये न आवकार भाव आणिया ॥ नीची नातना

शुं जांणे परोणानी चाकरीमां ॥ ब्राह्मण के वाणिया के समजे स-
राणिया ॥१२९॥ ۞ अथ दीपकालंकार ॥१५॥ ۞ दोहा ॥ ज्यां
अवर्ण्यने वर्ण्यनो ॥ एक धर्म उचराय ॥ अलंकार दीपक तहां ॥
दीपकसम दरशाय ॥१३०॥

टीका ॥ जेम दीवो घरना बारगामां कर्यो होय ॥ ते घरमां तथा ओसरीमां पण प्रकाश करे ॥ तेमज एकज धर्म वर्ण्यनो अने अवर्ण्यनो बतावे ते दीवा जेवो ॥ माटे दीपकालंकार तेनुं नाम छे ॥

दोहा ॥ नभ शशिथी जळ कमळथी ॥ नदि जळ वडे सदाय॥
तरु शोभे फळ फूलथी ॥ राजनीतिथी राय ॥१३१॥

टीका ॥ एमां राजा वर्ण्य छे ॥ अने नभ जळ नदी अने तरु ए बधां अवर्ण्य छे ॥ पण शोभवुं ए धर्म सौने एक छे ॥ माटे दीपकालंकार छे ॥

۞ अथ आवृत्ति दीपक ॥१६॥ ۞ दोहा ॥ शब्दावृत्ति एक
छे ॥ अर्थावृत्ति एक ॥ शब्द अर्थ ए बेयनी ॥ छे आवृत्ति छेक ॥१३२॥
ते दीपक आवृत्तिमां ॥ वर्णनीय सौ होय ॥ अवर्ण्य तो एके नही॥
समजे कविजन सोय ॥१३३॥ ۞ अथ शब्दावृत्ति ॥ ۞ आर्या
गीति ॥ श्री हरितणा विजोगे ॥ अतिशय उत्तम नरेश अकळाय ॥
तेंना तननी पीडा ॥ नाडी परीक्षक नरोथि अकळाय ॥१३४॥

टीका ॥ एमां अकळाय एटले मुंझाय अने छेले अकळाय एटले ॥ न कळी शकाय एम एक शब्दना अर्थ जुदा छे ॥ माटे शब्दावृत्ति छे ॥

पुनः॥ हरिगीत ॥ शब्दावृत्ति ॥ हरिभक्त आ हरिनी प्रसादी
पामिने हरखाय छे ॥ धंतूर फळने भांग्य आ जो ॥ हरषथी हरखाय
छे ॥१३५॥ अर्थावृत्ति ॥ श्री धर्म सुतनुं धाम देखी संत मन विक-
से घणा ॥ उन्मत्त गंगा नीर निरखी ॥ मन फुले हरिजनतणां ॥
१३६॥ उभयावृत्ति ॥ हरिने निहाळी हरिजनो आनंद पांमे छे अ-
ति ॥ श्रीजीनि वाणि सांभळी ॥ आनंद पांमे सौ यति ॥१३७॥

टीका ॥ एमां हरखाय छे ॥ एटले राजी थाय छे ॥ अने धंतूर फळ हर ॥ एटले शिवजी खाय छे ॥ एमां शब्दनी आवृत्ति थै ॥ पण अर्थ जुदा छे ॥ माटे शब्दावृत्ति छे॥ बीजामां देखी अने निरखी ते शब्दो जुदा छे पण अर्थ एकज छे॥ तेमज विकसे छे॥ अने फुले छे ते बेय शब्दो जुदा छे पण अर्थ एक छे माटे अर्थावृत्ति छे ॥ त्रीजामां हरिजन आनंद पामे छे ॥ अने यति एटले संतो आनंद पामे छे॥ एमां शब्द अने अर्थ बेय एकज छे॥ माटे उभयावृत्ति छे॥

अथ प्रति वस्तूपमालंकार ॥१७॥ दोहा ॥ प्रति वस्तुपमा वाक्य बे॥ उपमे ने उपमान॥ धर्म एक ते बेयनो॥ जुदे जुदे पद मान ॥१३८॥ उपजाति छंद ॥ अज्ञान तो संत मळ्याथि जाय ॥ अंधारुं आदित्य उगे पळाय ॥ माहात्म्य संतोनुं गुणीज्ञ जाणे॥ न मूल्य मूर्खो मणिनुं प्रमाणे ॥१३९॥

टीका॥ अर्थावृत्ति दीपकमां अने आमां एटलो फेर छे के अर्थावृत्ति दीपकमां जुदां जुदां बे वाक्योमां वर्ण्य वस्तूओ होय ॥ अने आमां एक वाक्यमां उपमेय॥ अने एकमां उपमान होय छे॥ अने जुदा जुदा शब्दो वडे धर्म एकज बताव्यो होय छे॥ आमां संत उपमेय छे॥ सूर्य उपमान छे॥ अज्ञान उपमेय॥ अने अंधारुं उपमान छे॥ जाय अने पळाय ए बे क्रियामां धर्म एकज छे॥ छंदना उत्तरार्धमां बीजुं उदाहरण छे॥ तेमां संतनुं माहात्म्य गुणी होय ते जाणे॥ अर्थात्॥ गुण हीन होय ते जाणे नहीं ॥ जेमके मूर्ख मणीनुं मूल्य जाणे नहीं ॥ एमां एक एक वाक्यमां जाणे कह्यु अने बीजामां प्रमाण करी शके नहीं कह्युं ॥ तोपण गुण हीन होय ते संतनुं माहात्म्य जाणे नहीं॥ अने मूर्ख मणीनुं मूल जाणे नहीं ए बेय वाक्यनो भावार्थ एक छे॥ माटे॥ प्रति वस्तूपमालंकार छे॥ तथा॥

दोहा॥ सदगुणि जनना सदगुणो॥ लोको करे कबूल॥ हीरो मुखथी नव कहे॥ लाख टका मुज मुल ॥१४०॥

टीका ॥ जेम हीरो पोते कहेतो नथी के मारुं मूल आटलुं छे ॥ लोको कहे ते खरुं ॥ तेम गुणवानना गुण लोको पोतानी मेळे कबुल करे ते खरा ॥ ए रीत्ये बे वाक्यनो धर्म एकज छे॥ माटे प्रति वस्तूपमा छे॥

अथ द्रष्टांतालंकार ॥१८॥ दोहा ॥ उपमा उपमे वाक्य बे॥ धर्म जुदा ते ठार ॥ उपमा वाचक शब्द नहिं॥ द्रष्टां-

तालंकार १४१॥ कीर्त्तिमान नृप अभय छे ॥ रवि छे प्रतापवान ॥ मशालची देखे नहीं ॥ पुराणिने नहिं ज्ञान ॥१४२॥

टीका ॥ एमां अभय राजा कीर्त्तिमान छे ॥ अने रवी प्रतापवान छे कह्युं ॥ ते राजा उपमेय छे ॥ अने रवी उपमान छे ॥ कीर्त्तिवान अने प्रतापवान ए बे धर्म जुदा छे ॥ बीजा उदाहरणमां पुराणी उपमेय छे ॥ अने मशालची उपमान छे ॥ मशालची मशालना तेजथी अंजाइ जवाथी देखतो नथी॥ तेम पुराण भण्याना गर्वथी पुराणी ईश्वरनुं खरुं ज्ञान पामतो नथी॥ बीजाने ज्ञान आपे छे ए बे धर्म जुदा छे ॥ माटे दृष्टांतालंकार छे ॥ प्रति वस्तूपमामां अने आमां भेद एटलो छे के प्रति वस्तूपमामां उपमा उपमेयनो धर्म एक होय छे ॥ अने दृष्टांतालंकारमां धर्म जुदा होय छे ॥

❁ अथ निदर्शनालंकार ॥१९॥ ❁ दोहा ॥ सरखा बे वाक्यार्थनो ॥ धर्म जुदो देखाय ॥ पण ऐक्यारोपण करे ॥ निदर्शना कहेवाय॥१४३॥ उपजाति छंद॥ कुपात्रने दान कर्युं कराव्युं॥ ते खारमां बीज खचीत वाव्युं ॥ कुशिष्यने जेह कह्युं मिठाशे ॥ बजावियो शंख बधीर पासे ॥१४४॥

टीका ॥ दृष्टांतालंकारमां जुदा धर्मनां पण मळतां बे वाक्यो छे ॥ तेवां बे वाक्योनुं जे अथवा ते शब्दवडे ऐक्यारोपण थाय ते निदर्शना छे ॥

❁ अथ बीजा प्रकारनी निदर्शना ॥ ❁ दोहा ॥ गुणसमान बे वस्तुनो ॥ एक विशे देखाय ॥ बीजी तेह निदर्शना ॥ कहे महा कविराय ॥१४५॥ उन्नतता गिरि शिखरनी ॥ लिधी मंदिरे एह ॥ कोमळता हरि चरणनी ॥ दीठी कमळमां तेह ॥१४६॥

टीका ॥ ज्यां उपमा उपमेयनो सरखो धर्म होय ते उपमानमां के उपमेयमां एक ठेकाणे कलपवो ते बीजी निदर्शना छे ॥ पर्वतनी उन्नतता ते पदार्थ छे ॥ ते मंदीरे लेवाय नहि ॥ पण जेवी पर्वतनी उन्नतता छे॥ तेवी मंदीरनी उन्नतता छे॥ एवो उपमान उपमेयनो सरखो धर्म छे॥ ते बेयनो मंदीरनी उन्नततामां ऐक्यारोप कर्यो तेमज श्रीजीना चरणनी कोमळता ते कमळमां दीठी ए उपमेयनो गुण उपमानमां ऐक्यारोप कर्यो माटे ते पदार्थ वृत्ति निदर्शना छे ॥

अथ निदर्शना त्रीजी ॥ दोहा ॥ बोध शुभाशुभ अर्थनो ॥ करे क्रियाथि एह ॥ करिये एवि कल्पना ॥ त्रिजी निदर्शना तेह ॥१४७॥ अथ शुभार्थ बोध निदर्शना ॥ उपजाति ॥ जे दर्शनार्थे जन आवनार ॥ आपे जुओ आ ध्वज आवकार ॥ पामी वडुं स्थान सु मान देवुं ॥ सौ लोकने ते सुचवेज एवुं ॥१४८॥ पुनः॥ दोहा ॥ पाळयुं पोख्युं जेहने ॥ नभावि लेवुं तेह ॥ निर न बोळे काठने ॥ एम जणवतुं एह ॥१४९॥ अथ अशुभार्थ बोध ॥ उपजाति ॥ मांखी घृतादी रसमां पडे छे ॥ घणा रसास्वादथकी मरे छे ॥ तेवी क्रियाथी जनने जणावे ॥ घणा रसास्वादथी मोत आवें ॥१५०॥ अथ व्यतिरेकालंकार ॥२०॥ दोहा ॥ उपमा के उपमेयमां ॥ कहिये कांई विशेष ॥ व्यतिरेकालंकार ते ॥ नहि एमां अंदेश ॥१५१॥ चिंता चितासमान छे ॥ देह दहन करनार ॥ अनुस्वार छे एटलो ॥ अधिक दिसे आकार ॥१५२॥ पुनः॥ व्यतिरेकालंकार ॥ हरिगीत छंद ॥ निस्नेहि छे जड भरत सरखा ॥ संत पण विद्वान छे ॥ खर तुल्य खळ छे खर अधिकता ॥ पुच्छ लांबा कान छे ॥१५३॥

टीका ॥ एमां चिंता उपमेय छे ॥ अने चिता उपमान छे ॥ तेमां चिंताने माथे अनुस्वार छे एटलु विशेष छे ॥ बीजा उदाहरमां संत उपमेय छे ॥ अने जड भरत उपमान छे ॥ तेमां जड भरत कांई भण्या नहोता ॥ अने संत विद्वान छे ॥ एटलुं उपमेयमां विशेष बताव्युं ॥ खळ पुरुष उपमेय छे अने खर उपमान छे ॥ खरने पुंछडुं अने लांबा कान छे ॥ एटलुं उपमानमां विशेष कह्युं ॥ व्यतिरेकमां उपमा वाचक होय अने न्युनाधिक रुपकमां ते शब्द न होय ॥

अथ सहोक्ति अलंकार ॥२१॥ दोहा ॥ जन मन रंजन ज्यां भलो ॥ भाखे कवि सहभाव ॥ सहोक्ति ते तो सरस छे ॥ कहे रुडा कविराव ॥१५४॥ जेम जेम जन जगतमां ॥ अधिक थाय

धनवान ॥ तेम तेम वधि जाय छे ॥ धन साथे अभिमान ॥१५५॥ उपजाति छंद ॥ पुनः॥ थैने गया वामन दान पात्र ॥ मागीज पृथ्वी त्रण्य पाव मात्र ॥ उंचा वध्या वामन देव ज्यारे ॥ साथे वधी लाकडी तेहवारे ॥१५६॥

टीका ॥ कारण ने कारज साथे थाय एमां सहभाव छे पण ते तो अक्रमातिशयोक्ति अलंकार छे ॥ अने गुरु चेलो साथे आव्या एम कहीये तेमां सहभाव छे पण ते मन रंजन नथी माटे ते सहोक्ति अलंकार नथी ॥ पण गोळा साथे गोफण गई एम कहीये तो ए मन रंजन छे ॥ माटे सहोक्ति अलंकार छे ॥ तेमज वामन साथे लाकडी वधी ते सहोक्ति छे ॥

दोहा ॥ जुडे जळमां जे समे ॥ द्रढ पकड्यो गज राज ॥ नाम कथन करी वर छुटन ॥ थयां साथ बे काज ॥१५७॥ ❁ अथ विनोक्ति अलंकार ॥२२॥ ❁ दोहा ॥ वर्णनीय कांईक विना ॥ गणतां हीन गणाय ॥ विना शब्दना अर्थथी ॥ ते पण विनोक्ति थाय ॥१५८॥ अरे कदी जन एकमां ॥ सघळा सदगुण होय ॥ विना विनय गुण तेहनो ॥ करे न आदर कोय ॥१५९॥ पुनः॥ सवैयो ॥ देश विशेष विषे विचर्यो ॥ वरवाण चाडि परदेश वह्यो ॥ उद्यम शोधि अनेक कर्या ॥ भटक्यो बहुधा शीर भाव वह्यो ॥ स्वारथ सिद्ध थवा समजी नर ॥ कंजुसने नृप भोज कह्यो ॥ कल्पित कोटि उपाय कर्या ॥ पण भाग्य विना धन हीन रह्यो ॥१६०॥

टीका ॥ विना एवो शब्द न होय ॥ पण ज्यां विना एवो अर्थ होय ॥ ते पण विनोक्ति अलंकार छे ॥ गुरु विना चेलो एकलो आव्यो एमां मन रंजनपणुं नथी माटे ते अलंकार नथी ॥

उपजाति छंद ॥ जे कृष्ण भक्ति न करे कदापि ॥ मनुष्यनो देह मळ्यो तथापि ॥ साध्यो नही जो निज जीव अर्थ ॥ तो तेहनो तें जन जन्म व्यर्थ ॥१६१॥

टीका ॥ एमां विना शब्द नथी ॥ पण अर्थ एवो निकळे छे के नर देह पाम्यो पण कृष्णनी भक्ति विना अने पोताना आत्मानो अर्थ साध्या विना तेनो माणसनो जन्म व्यर्थ छे ते पण विनोक्ति अलंकार छे ॥

विनोक्ति अलंकार बीजो ॥ दोहा ॥ जे प्रस्तुत कांईक विना ॥ वाह वाह वखणाय ॥ ते पण तेम विनोक्ति ते ॥ अर्थ थकी पण थाय ॥१६२॥ शोभे विद्यादिक गुणो ॥ विना धरे अभिमान ॥ जाय अहं ममता टळी ॥ गणाय साचुं ज्ञान ॥१६३॥

टीका ॥ एना उत्तरार्धमां विना शब्द नथी पण अर्थ एवो निकळे छे के अहं ममता विना होय त्यारे साचुं ज्ञान गणाय ॥ माटे ते विनोक्ति अलंकार छे ॥

❀ अथ समासोक्ति अलंकार ॥ ❀ दोहा ॥ ज्यां प्रस्तुत वर्णन विषे ॥ अप्रस्तुत आभास ॥ समासोक्ति सौको कहे ॥ जेने ज्ञान उजास ॥१६४॥ जो बहु जन मज्जन करे ॥ चंद्रकळा मोझार ॥ एथी उपजे अंगमां ॥ शीतळता गुण सार ॥१६५॥

टीका॥ एमां कोई नहीं होय तेमां बहु माणसो नहातां होय ॥ तेथी तेनां शरीर ठंडा थतां होय एवो आभास थाय छे ॥ माटे समासोक्ति अलंकार छे ॥ बीजुं उदाहरण काठीने विप्रे कह्युं के तमारे पुजा अने मंत्र जपवो ते शुं त्यारे ए काठीये कवित कह्युं

कवित ॥ ब्राह्मणनी रीतिने तो ब्राह्मणे भगाडी मुकी ॥ एतो काठीयोने घेर आवी चाली चाली छे ॥ अमे जाण्युं ईश्वरेज आपी एतो आपणने ॥ पवित्र जाणीने अमे पुत्रीसम पाळी छे ॥ पूरुं मान पामी तेथी तेने पण त्यांज गम्युं ॥ एनापर हेतनी तो अमे हद वाळी छे ॥ काठीयोनी रीति हति तेने अमे काढी मुकी ॥ घणा ब्राह्मणोये तेने घरमांही घाली छे ॥१६६॥

टीका ॥ एमां रीति नामे कोई स्त्रीने काढी मुकी होय एवा अर्थनो आभास थाय छे माटे समासोक्ति छे ॥

पुनः ॥ दोहा ॥ सारो धर्म सुवर्णनो गुण जे सरस गणाय ॥

कहोजी केना घरथकी पाम्या काठी राय ॥१६७॥

टीका ॥ एमां सुवर्णनो एटले सारी जातिनो ब्राह्मणनो धर्म जे सारो गुण गणाय ॥ ते कीये ठेकाणेथी पाम्या एम कह्युं ॥ पण सारो सुवर्णनो एटले सोनानो गुण कहेतां दोरो किया सोनीनी दुकानेथी मळ्यो एवा अर्थनो आभास थाय छे ॥ सुवर्णनो अने गुण ए बे शब्दो विशेषण छे तेना बे अर्थ थाय छे पण आ ठेकाणे धर्म प्रस्तुत छे॥ ते शब्दना बे अर्थ थता नथी ॥ तेमज समोक्तिमां प्रस्तुत नामना बे अर्थ होय नहीं ॥ विशेषण आदिकना बे अर्थ करवा होय तो कराय ॥

❁ ॥ अथ परिकरालंकार ॥२४॥ ❁ दोहा ॥ कहे विशेषण वर्ण्यनुं ॥ सज्जन साभिप्राय ॥ निश्चे परिकर नामनो ॥ अलंकार ए थाय ॥१६८॥ उपजाति छंद ॥ पदे धर्या चिन्ह सुवज्र छाप ॥ हे श्रीहरी छो जगदिंद्र आप ॥ छे काम वृत्रासुर तुल्य भारी ॥ तेनाथी रक्षा करजो अमारी ॥१६९॥

टीका ॥ एमां अभिप्राय एवो छे के तमे इंद्र छो माटे वृत्रासुर जेवाथी रक्षा करो॥

पुनः इंद्रवज्रा छंद ॥ किर्ती सहस्रानन शेष गाय तेणे नही पार कदी पमाय ॥ तो केम हुं एक मुखे उचरुं ॥ कीर्ति प्रभूनी अति एम धारुं ॥१७०॥

टीका ॥ एमां शेष पार न पामे ॥ तो हुं एक मुखवाळो शामात्र छुं ॥ एवो अर्थ छे ते काव्यार्थापत्ति अलंकार जणाय ॥ पण काव्यार्थापत्तिमां साभिप्राय विशेषण नथी एटलो फेर छे ॥

❁ अथ परिकरांकुरालंकार ॥२५॥ ❁ दोहा ॥ साभिप्राय विशेष्यजो ॥ कहे कविजन कांई ॥ परिकर अंकुर प्रगट ते ॥ समजो सौ मन मांई ॥१७१॥ हें श्री सहजानंदजी ॥ सुखदाता सुख कंद ॥ अमने आप स्वरुपनो ॥ द्यो सहजे आनंद ॥१७२॥ पुनः ॥ हुं आव्यो तुज घेर पण ॥ तें न कह्युं मुज काज ॥ कह्या विना शुं जाणुं हुं ॥ जाणे श्री महाराज ॥१७३॥

टीका ॥ श्रीजी महाराज अंतर्यामी छे माटे ते कह्या विना तो जाणे ॥ एमां श्री महाराज साभिप्राय विशेष्य छे ॥

अथ श्लेषालंकार ॥२६॥ दोहा ॥ अर्थ अनेक प्रकारना ॥ जे सुणतां समजाय ॥ ते श्लेषालंकार छे ॥ सुणि हैयुं हरखाय ॥१७४॥ वर्णन अनेक वर्ण्यनुं ॥ के अवर्ण्यनुं एह ॥ कांतो वर्ण्य अवर्ण्यनुं ॥ त्रण प्रकार छे तेह ॥१७५॥

टीका ॥ वर्णन करवा योग्य एकथी वधारे वस्तुने अर्थ लागु पडे ॥ ते वर्ण्य श्लेष कहेवाय ॥ अने एकथी वधारे अवर्ण्यने अर्थ लागु पडे ते अवर्ण्य श्लेष कहेवाय ॥ अने एकथी वधारे वर्ण्यने तथा अवर्ण्यने बेयने लागु पडे ते वर्ण्या वर्ण्य श्लेष कहेवाय ॥ ए रीते त्रण प्रकारनो श्लेषालंकार छे ते विना कोई शब्दोना वधारे अर्थ थाय ते श्लेषार्थ खरो ॥ पण श्लेषालंकार नही ॥

अथ लक्ष्मी तथा नारायण विषे ॥ दोहा ॥ नमुं जलधि जामातने ॥ वर जेनो बळवान ॥ अंबरादि छे अंगमां ॥ शक्ति सर्व निधान ॥१७६॥

टीका जलधिजा एटले समुद्रथी जन्मेली माताने हुं नमस्कार करुं छुं ॥ जेनो वर एटले पति बळवान छे ॥ अने जेना अंगमां वस्त्र आदिक छे ते शक्ति सर्व वस्तुनो भंडार छे ॥ ते रुपैया मानिये तो रुपैयामां जे वस्तु जोइये ते छे हवे नारायण विषे समुद्रना जामात एटले जमाइने हुं नमुं छुं ॥ जेनो वर केतां वरदान बळवान छे ॥ अने अंबर कहेतां आकाश आदिक पंच भूतात्मक ब्रह्मांड जेना शरीरमां छे ॥ अने सर्व शक्ति कहेतां सर्व ऐश्वर्यना भंडाररूप ते नारायण छे ॥ एमां लक्ष्मीजीनुं तथा नारायणनुं बेयनुं वर्णन छे ॥ माटे ते वर्ण्य श्लेष छे ॥ वळी बीजुं उदाहरण लखीये छैये ॥

उपजाति छंद ॥ विभूतिवाळा वृष पाळनारा ॥ उन्मत्त गंगा धरि शीश धारा ॥ छे नाग माळा प्रिय भूत नाथ ॥ छे दक्ष जामात सुदेवि साथ ॥१७७॥

टीका ॥ एमां श्रीजीमहाराजनुं अने शीवजीनुं वर्णन छे ॥ श्रीजीमहाराज विभूति कहेतां वैभववाळा छे ॥ अने वृष जे धर्म तेने पाळनारा छे ॥ अने घेला नदीना खलखलीयाना जळनी धाराओ मस्तके धरनारा छे ॥ अने दादाखाचरना बनेवी

नागमाळाना प्रिय वहाला छे ॥ भूत प्राणी मात्रना नाथ छे अने दक्षप्रजापतिनी पुत्री भक्तिमाता ते दीव्य रूपे तेमनी साथे छे ॥ हवे शिवजी विषे ॥ तेमणे अगें विभूति चोळी छे पोठीयाने पाळनारा छे उन्मत्त छे॥ अने गंगाजळनी धारा मस्तकें धारण करी छे॥ कंठे नागनी माळा छे ते तेमने प्रीय छे ॥ भूत प्रेतना नाथ छे॥ दक्षप्रजापतिनी पुत्री पारवती देवी तेमनी साथे छे॥ इति वर्ण्यश्लेष ॥

❀ अथ अवर्ण्य श्लेष ॥ ❀ दोहा ॥ गंगाधर विष चापधर॥ नाग धरण शशिधार ॥ ए सम उत्तम नृपति छे ॥ हरि आज्ञा धरनार ॥१७८॥

टीका ॥ दादोखाचर श्रीजीनी आज्ञा पाळवामां समुद्र जेवा अथवा शिवजी जेवा छे ॥ ते समुद्र गंगा नदीनुं धारण करे छे ॥ तथा झेर पण तेणेज धर्युं हतुं॥ सारंग धनुष नाग कहेतां ऐरावत हाथी तथा चंद्रमानुं पण तेणे धारण कर्युं हतुं ॥ अने श्रीजीनी आज्ञा धारी समुद्र मर्यादामां रहे छे तेना जेवा उत्तम राजा छ॥ हवे शिवजी केवा छे तो गंगाना धरनारा छे ॥ विष तथा पिनाक नामनुं धनुष धार्युं छे॥ नाग तथा चंद्रमानुं धारण कर्युं छे ॥ अने हरीनी आज्ञा धरे छे ॥ एवा उत्तम राजा पण हरीनी आज्ञा धरनारा छे॥

❀ अथ उभयश्लेष॥ ❀ दोहा ॥ उन्मत सरिता पति प्रबळ॥ मलिया हरि मराल॥ अमर जनक जीवन धरण॥ मर्यादा प्रतिपाळ॥१७९

टीका ॥ उत्तम राजा मर्यादा पाळनार समुद्र जेवा छे ॥ घेला नदीना ते मालेक छे तथा बळवान छे॥ हरी तथा परमहंसोने पण मळेला छे॥ अमरा खाचरना पिता छे॥ पोताना जीवननुं धारण करे छे॥ अने मर्यादा पाळे छे अने समुद्र उनमत्त छे॥ नदियोनो पति छे॥ बळवान छे अने हरी कहेतां सर्प तेमां मळेला छे॥ तथा हंसो तेने मळ्या छे ॥ अने चंद्र देव आदिक अमरनो पिता छे ॥ अने पोतानी मर्यादा एटले हद्य तेने पाळे छे॥

❀ अथ अप्रस्तुत प्रशंसालंकार ॥२७॥ ❀ तेनुं लक्षण हरीगीत ॥ करवानुं वर्णन जेहनुं नथी ॥ तेहनुं वर्णन करे ॥ करवानुं वर्णन जेहनुं छे॥ तेह उपर ते ठरे ॥ तेनुंज अप्रस्तुत प्रशंसा ॥ नाम तो कहेवाय छे॥ पंडित जनो जाणेज ते॥ पांचे प्रकारें थाय

छे ॥ उपमेय ने उपमानना ॥ सरखा गुणो जे ठाम छे ॥ सारुप्य नाम निबंधना ॥ निश्चेज तेनु नाम छे ॥१८०॥ ❀ अथ सारूप्य निबंधना अप्रस्तुत प्रसंसा भेद ॥१॥ ❀ उपजाति छंद ॥ छे ताड तो वध्यो विशेष ॥ कर्यो न तेणे उपकार लेश ॥ ढांक्यो नहींरे निज देह कांई ॥ कोई न बेसे वळि छांयमई ॥१८१॥

टीका ॥ एमां कृपण माणस मोटाई पामीने कोईनो उपकार करे नहीं ॥ अने पोताने शरीरे पण पूरां लुगडां पेहेरे नहीं ॥ एवानुं वर्णन करवुं ते अप्रस्तुत छे ॥ तेने बदले ताड अप्रस्तुत छे ॥ तेनुं वर्णन कर्युं माटे अप्रस्तुत प्रशंसा छे ॥

पुनः॥ कवित ॥ उंट कहे आ सभामां वांका अंगवाळा भुंडा ॥ भूतळमां पक्षीओने पशुंओ अपार छे ॥ बगलानी डोक वांकी पोपटनी चांच वांकी ॥ कुतरानी पुंछडीनो वांकोज विस्तार छे ॥ वारणनी सुंढ वांकी वाघना छे नख वांका ॥ भेंसने तो शीर वांकां शींगडानो भार छे ॥ सुणी एक शुक कहे सुणो भला उंट भाई ॥ अन्यनुं तो एक वांकुं आपना अढार छे ॥१८२॥

टीका ॥ एमां पारकी निंदा करनार विषे कह्युं ए तो निंदा परत्व कह्युं ॥ हवे स्तुति परत्व कहीये छैये ॥

दोहा ॥ नाव तने तो धन्य छे ॥ तुं आश्रय दातार ॥ आश्रय आवे तेहने ॥ उतारे छे पार ॥१८३॥

टीका ॥ एमां नावनुं वर्णन कर्युं पण जे माणस पोताना आश्रितने निर्धनपणामांथी पार उतारे छे ते विषे कह्युं ॥ माटे अप्रस्तुत प्रशंसा छे ॥ आशाधर ॥ एने अप्रस्तुताव गति कहे छे ॥ अने अप्रस्तुत जे कृपण तेना सरखा गुणवाळा ताडनुं वर्णन कर्युं ॥ माटे कुवळयानंदमां तेने सारूप्य निबंधना अप्रस्तुत प्रशंसा कही छे ॥ अने जूना ग्रंथोमां तेने अन्योक्ति अलंकार कह्यो छे ॥ कोईनी निंदा के वखाण परोक्षपणे करवां होय त्यारे अन्योक्ति अलंकार काममां आवे छे ॥ वळी अप्रस्तुत प्रशंसाना बीजा चार भेद छे ते कहीये छैये ॥

❀ अथ कारण निबंधना अप्रस्तुत प्रशंसा ॥२॥ ❀ दोहा ॥

कारणनुं वर्णन करे ॥ कार्य तेथी समजाय ॥ ते कारण निबंधना ॥ कहे महा कवि राय ॥१८४॥ विप्रे निज सुतने कह्युं ॥ अभण मूर्ख हे बाळ ॥ तेथी ते तो काशिये ॥ नाशि गयो ततकाळ ॥१८५॥

टीका ॥ एमां काशिये जवानुं कारण बताव्युं ॥ माटे कुवळयानंदमां तेनुं नाम कारण निबंधना कह्यु छे ॥ ते कारणमांथी विद्याभ्यासरुपी कारज थयानुं समजाय छे ॥ माटे आशा धरे ॥ एनुं नाम कार्याव गति राख्युं छे ॥

❁ अथ कार्य निबंधना अप्रस्तुत प्रशंसा ॥३॥ ❁ दोहा ॥ कार्यनुंज वर्णन करे ॥ कारण तेनुं जणाय ॥ ते तो कार्य निबंधना ॥ त्रिजो भेद कहेवाय ॥१८६॥ पद्म वृंद प्रफूल्लित थयां ॥ तारा थया अदर्श ॥ चकवा चकवी आ जुओ ॥ हैडे पाम्या हर्ष ॥१८७॥ बीजु उदाहरण ॥ कवित ॥ वाटे लुटनार गया धाड पाडनार गया ॥ चाळीश जोजन चार प्रहरे जवाय छे ॥ शुभ के अशुभ समाचार सगा स्नेहीयोने ॥ पांचसे गाउ तो एक पळे मोकलाय छे ॥ सो रुपैये भागवत पुस्तक न सांपडतुं ॥ दश रुपैयाथी पूरेपुरुं ते पमाय छे ॥ संत जन सर्व ठाम सुखथी स्वधर्म पाळे ॥ आजनो समय जोतां अचरज थाय छे ॥१८८॥

टीका ॥ पेहेला उदाहरणमां ॥ कमळ प्रफुल्लित थयां आदिक कारजनुं वर्णन कर्युं ॥ तेनुं कारण सूर्योदय समजाय छे ॥ बीजा उदाहरमां जे कारज बताव्युं ॥ तेनुं कारण परमेश्वरनी इच्छाये आवेलुं अंग्रेजनुं राज्य समजाय छे ॥ माटे आशाधरे एनुं नाम कारणाव गति राख्युं छे ॥

❁ अथ सामान्य निबंधना अप्रस्तुत प्रशंसा ॥४॥ ❁ हरिगीत ॥ सामान्य सौ जन कारणे ॥ जे कांई वर्णन थाय छे ॥ ते कोई एक विशेषनेज ॥ विषे कह्युं समजाय छे ॥ सामान्य तेह निबंधना ॥ को विद जनो सुखथी कहे ॥ ते भेद अप्रस्तुत प्रशंसानोज चोथो थै रहे ॥१८९॥

टीका ॥ कोई एक वस्तुने के एक समुदायनें लागु पडे ते ॥

उपजाति छंद ॥ स्त्रीने तजे अष्ट पुरा प्रकारे ॥ जे द्रव्यनो स्पर्श करे न क्यारे ॥ वदे नही जे अपशब्द वाचा ॥ ते तो कहीजे मुनी संत साचा ॥१९०॥

टीका ॥ एमां कह्युं जे कोई आवो धर्म पाळे ते साचासंत कहेवाय ॥ एम सौने सामान्य कह्युं ॥ पण एवा तो आज स्वामीनारायणना साधु छे ॥ एम समजाय छे माटे तेनुं नाम विशेषाव गति पण कहेवाय ॥

अथ विशेष निबंधना अप्रस्तुत प्रशंसा ॥५॥ पांचमी ॥ दोहा ॥ एकजनुं वर्णन करे ॥ सौपर कह्युं जणाय ॥ तेह विशेष निबंधना ॥ गुणवंता कवि गाय ॥१९१॥ उपजाति छंद ॥ मोटो छतां जो गजराज एह ॥ माथुं नमावि विचरेज तेह ॥ चाले सदा ते अति सारी चाल ॥ तेमां न पामे जस दैव काळ ॥१९२॥ पुनः॥ मोटो हतो श्रीपुरमांहि राय ॥ निंदा करे ते हरिनी सदाय ॥ बधी समृद्धी गई तेनी भाई ॥ तेमां कहो शी कहीये नवाई ॥१९३॥

टीका ॥ एमां कह्युं के हाथी मोटो छतां माथुं नमावीने चाले छे ॥ तथा सारी चाल चाले छे माटे ते मान पामेज ॥ ते वात सौने लागु पडे छे के जे कोई नम्रताथी चाले ॥ तथा जेनी सारी चाल एटले वर्त्तन सारुं होय ते मान पामेज ॥ बीजा उदाहरणमां ॥ श्रीपुरनो अमलदार श्रीजी महाराजनी निंदा करतो हतो ॥ तेनी बधी समृद्धि गई तेमां नवाई शेनी ॥ केमजे कोई हरीनी निंदा करे ॥ तेनी समृद्धि जायज ॥ एमां एकनुं वर्णन छे ते सामान्य सौने लागु पडे छे ॥ माटे ते सामान्याव गति अप्रस्तुत प्रशंसा कहेवाय ॥

अथ प्रस्तुतांकुरालंकार ॥२८॥ दोहा ॥ जहां एक प्रस्तुत वडे ॥ प्रस्तुत बीजुं जणाय ॥ प्रस्तुत अंकुर एह छे ॥ समजूथी समजाय ॥१९४॥

टीका ॥ एक हरिभक्त जुनी खुरशीने कहेवावडे पोतानी वृद्ध स्त्रीने कहे छे॥

कवित ॥ अरे खुरशी तुं मारी सारी सुण शीखामण ॥ पग

छतां तीरथे न गढपुर गई तुं ॥ प्रजा नथी पामी तोय नवरी तो थइ नही ॥ घरमां घलाइनेज रही थीर थइ तुं ॥ भुजा छतां भगवान नामनो न जप्यो जाप ॥ पाणी जोडी प्रणमी न प्रभु पास जइ तुं ॥ सतसंगीतणुं घर पामीने न पामी ज्ञान ॥ बुढापणुं छतां बेठी मुढपणुं लई तुं ॥१९५॥

टीका ॥ खुरशी जड छे तेने शीखामण देवानो संभव नथी ॥ माटे स्त्रीने शीखामण दीधी एम जणाय छे ॥ ते बेय प्रस्तुत छे ॥ माटे प्रस्तुतांकुरालंकार छे ॥ अप्रस्तुत प्रशंसामां परोक्षवाद होय ॥ अने आमां बेय प्रस्तुत प्रत्यक्ष जोईये ॥ एटलो फेर छे ॥

❀ अथ पर्यायोक्त अलंकार ॥२९॥ ❀ दोहा ॥ कहिये जे वस्तू विषे ॥ बिजी रिते कहेवाय ॥ ते तो पर्यायोक्त छे ॥ सुणि जन मन हरखाय ॥१९६॥ मेघ दान सुत सुत सुता ॥ वाहन भक्षनि माळ॥ धर्म सुते कंठें धरी॥ शोभित विमळ विशाळ॥१९७॥

टीका ॥ एमां कहेवानुं एटलुं छे के श्रीजीये मोतीनी माळा पहेरी छे तेने बदले मोतीनां जेटलां नाम छे तेमांनुं एके नाम न लेतां एवुं कह्युं के मेघ जळनु दान करे छे ॥ ते जळनुं सुत कमळ ॥ तेनो सुत ब्रह्मा ॥ ने तेनी सुता सरस्वति ॥ तेनुं वाहन हंस ॥ तेनो भक्ष मोती ॥ तेनी माळा धरी छे ॥ एम बीजी रीते मोतीनुं नाम कह्युं माटे ते पर्यायोक्त छे ॥

पुनः॥ भुजंगीछंद ॥ मळी शिष्य टोळी करे ग्राम्य वातो ॥ अकस्मात आव्या गुरुजी तहां तो ॥ कहे शिष्य सौने गुरुराज ए तो ॥ करो अच्युतं केशवं ते हवे तो ॥१९८॥

टीका ॥ एमां कहेवानुं एटलुं छे के ग्राम गपोडां हवे बंध करो ॥ तेने बदले कह्युं के हवे अच्युतं केशवं करो ॥ आज मेंहेताजीये एक निशाळियानी खूब पूजा करी ॥ ए पण पर्यायोक्त छे ॥

❀ अथ पर्यायोक्त बीजा प्रकारनो ॥ ❀ दोहा ॥ ज्यां कांईक मिश कोई पण ॥ साधे पर निज अर्थ ॥ ए पण पर्यायोक्त छे ॥

समजे सुज्ञ समर्थ ॥१९९॥

टीका ॥ ज्यां कांई मिशथी पारको के पोतानो धारेलो अर्थ साधे ॥ ते पण पर्यायोक्त छे ॥

ॐ अथ पर अर्थ साधन ॥ ॐ शार्दूल विक्रीडित वृत ॥ श्रीजी श्रीपुरमां समाज सहिते ॥ पोते पधार्या सही ॥ तेनां दर्शन काज एक सतिने ॥ द्वेषी जवादे नही ॥ जाण्युं अंतरजामिये सतितणुं ॥ अत्यंत प्रेमी मन ॥ भीक्षाने मिश झोळि झाली करमां ॥ जैने दिधुं दर्शन ॥२००॥

टीका ॥ एमां श्रीजीए भिक्षाना मिशे करीने बाईनो दर्शननो अभिलाषा पुरो कर्यो ॥

ॐ अथ स्वअर्थ साधना ॥ ॐ उपजाति ॥ श्री सच्चिदानंद मुनिंद्र जेह ॥ अत्यंत प्रेमी प्रभु भक्त तेह ॥ पळे पळे प्रश्न पुछया मिशे जै ॥ मूर्त्ति प्रभुनी मनमां धरे लै ॥२०१॥ पुनः॥ कहे मुनि ब्रह्म प्रभूजी पासे ॥ आव्यो मने तो ज्वर एम भाशे ॥ तेणे जुओ देह बधो तपाव्यो ॥ एवे मिशे हाथ शिरे मुकाव्यो ॥२०२॥ ॐ अथ व्याज स्तुति अलंकार ॥३०॥ ॐ दोहा ॥ निंदा अथवा स्तुति थकी ॥ ज्यां स्तुति निंदा थाय ॥ वदिये ते व्याज स्तुति ॥ गुणवंता जन गाय ॥२०३॥

टीका ॥ उपरथी निंदा करे ॥ पण तेमां होय वखाण ॥ अथवा वखाण करे तेमां निंदा होय ॥ ते व्याज स्तुति अलंकार कहेवाय ॥

झूलणा छंद ॥ जगत कर्त्ता कने जै विधात्री कहे ॥ सांभळो अरज आ श्रवण धारी ॥ कर्मना लेख तो हुं हवे नहि लखुं ॥ लोकमां जाय छे लाज मारी ॥ धर्मनो पुत्र अन्याइ एवो थयो ॥ कर्मनी रेखपर मेख मारी ॥ भूप जेवो गलोलो भिखारी कर्यो ॥ छेक निर्धन कर्या छत्र धारी ॥२०४॥

टीका ॥ जगत कर्त्ता ब्रह्मा तेनी स्त्री ते विधात्री ते कर्मना लेख लखनारी कही॥ तेणे श्रीजीने अन्यायी कहीने निंदा करी पण तेमांथी एवुं समजाय छे के श्रीजी महाराज एवा समर्थ छे के कर्मनी रेखा मटाडी दे छे ॥ माटे ते निंदावडे स्तुति थई ॥ राम गलोला आनंद स्वामी ॥ अने एकनी निंदा करवाथी बीजानां वखाण थाय ॥ ते पण कुवळयानंदमां व्याज स्तुति कही छे ॥

गीती ॥ मोहिनी देखी मोहित ॥ थया हता शिव जनो सउ जाणे ॥ मुक्तानंदादिकनी ॥ सभा विषे ते जतां शरम आणे ॥२०५॥

टीका ॥ एमां कह्युं के शिवजी मोहिनीथी एक समे मोहित थया हता ॥ ते मुक्तानंद स्वामि आदिक संतनी सभामां जतां सरमाय छे ॥ एमां शिवनी निंदा थइ ने संतोनी उत्कृष्टता जणाइ के तेओ मोह पामे एवा नथी ॥ माटे व्याज स्तुति छे ॥ एकनु वखाण करवाथी बीजानी निंदा जणाय ते पण व्याजस्तुतिछे जेम के॥

गीती ॥ दशरथ सूतने धन्य ॥ एकज पत्नी कर्यानुं व्रत लीधुं॥ नारि विजोगे वशिया॥ पण परनारी हरण नही कीधुं॥२०६॥

टीका ॥ एमां रामनां वखाण कर्यां ॥ तेथी सीतानुं हरण करनार रावणनी निंदा जणाय छे माटे व्याज स्तुति छे ॥

❀ अथ व्याज स्तुतिनो बिजो भेद॥ ❀ स्तुतिवडे निंदा॥ वसंततिलका॥ चेलो दिगंबरतणो परनारी पाम्यो॥ पुत्रो सुपुत्रि थई ॥ वंश विशेष जाम्यो ॥ तें तोय वस्त्र तनमां कदिये न धार्युं ॥ दीसे दीगंबरपणुं द्रढ धन्य तारुं ॥२०७॥

टीका ॥ एमां नागा बावाना चेलाने कह्युं के तुं पुत्र पुत्रियोवाळो थयो तो-पण तें लुगडां पेहेर्यां नही माटे तारा दिगंबरपणाने धन्य छे ॥ एम वखाण कर्यां पण तेमां निंदा जणाय छे ते व्याज स्तुति छे ॥

❀ अथ व्याज निंदा अलंकार ॥३१॥ ❀ दोहरो॥ बीजानी निंदावडे॥ ज्यां प्रस्तुत निंदाय ॥ निश्चे तेनुं नाम तो॥ व्याजें निंदा थाय ॥२०८॥ उदा०॥ वांक नही दुर्जनतणो ॥ छे जननीनो वांक ॥ जन्म समें पायुं नहीं ॥ झेर लइने टांक ॥२०९॥

टीका ॥ एमां तेनी मानी निंदावडे दुर्जननी निंदा थइ माटे व्याज निंदालंकार थयो ॥

अथ आक्षेपालंकार ॥३२॥ दोहा ॥ वचन वदी निज वदनथी ॥ वळती करी विचार ॥ निषेध करिये वचननो ॥ आक्षेपा अलंकार ॥२१०॥ कवित ॥ शैवे शंकराचारज पधराव्या पोते घर ॥ जैनी शेठने बोलाव्यो मित्र जे मनाय छे ॥ सौए भेट धरी शेठ सामुं जोयुं त्यारे शेठ ॥ अधमण कपाशीया आपवा चहाय छे ॥ कर जोडी कहे शेठ कहो मोटा महाराज ॥ आपना बळदने कपाशीया अपाय छे ॥ महाराजे हा कही त्यां शेठनो विचार फर्यो ॥ हशी कह्युं शेठे अमाराए बेल खाय छे ॥२११॥ पुनः॥ दोहा ॥ प्रभु मागुं छुं एटलुं ॥ आपो धन सुत क्षेम ॥ नहि मायिक सुख शुं करुं ॥ आपो तव पद प्रेम ॥२१२॥

टीका ॥ एक भक्ते प्रभु पासे धन पुत्र ने क्षेम माग्युं पछी कह्युं के नही नही एवा माइक सुखने शुं करुं ॥ मने तो तमारा पदमां प्रेम आपो ॥

आक्षेपालंकार ॥ २ ॥ बीजो ॥ दोहा ॥ निशेध शब्दार्थे दिसे ॥ भावार्थे न निषेध ॥ अलंकार आक्षेप ते ॥ समजे जेह सुमेध ॥२१३॥

टीका ॥ सारी मेधा एटले बुद्धि जेनी होय ते समजे ॥

दोहा ॥ लाडुगढवीजी कहे ॥ हुं नथि चारण भाट ॥ राम तमे कृष्णज तमे ॥ वळि छो पुरुष विराट ॥२१४॥

टीका ॥ एमां कह्युं के हुं चारण भाट नथी ॥ मतलब के हुं जुठां वखांण करुं एवो नथी ॥ वर्णन करु छुं ते साचेसाचुं करु छुं ॥ एम भावार्थे निषेध मटाड्यो ते निषेधाभास आक्षेप छे ॥

दोहा ॥ नामां हा ना हा विषे ॥ आक्षेपा अलंकार ॥ अमे कांई नथी समजता ॥ समजु रमो जुगार ॥२१५॥

टीका ॥ एमां कह्युं के अमारामां समजण एटले बुद्धि नथी ॥ तमे समजु छो ते जुगार रमो ॥ मतलब के अमारामां बुद्धि छे ॥ माटे अमे जुगार रमीये नही ॥ तमारामां समजण नथी माटे जुगार रमो ॥

आक्षेपालंकार ॥ ३ ॥ त्रीजो ॥ हा कहीये जे वातनी ॥ अंतर्गत ना होय ॥ आक्षेपालंकार ते ॥ त्रीजो कहिये तोय ॥२१६॥ भले गमे तेवां करो ॥ पुण्य पापनां काम ॥ नथी गयां नाशी पछी ॥ स्वर्ग नर्कनां ठाम ॥२१७॥

टीका ॥ एमां कह्युं के भले सारां के नरसां काम करो ॥ एम करवानी रजा आपी ॥ पण कह्युं के स्वर्गनां के नर्कनां ठेकांणां नाशी गयां नथी ॥ मतलब के जेवुं करशो तवुं पामशो ॥ माटे नरसुं काम करवुं नहीं ॥ एम निषेध कर्यो ॥

❁ अथ विरोधाभास अलंकार ॥३३॥ ❁ दोहा ॥ भासे अर्थ विरोध पण ॥ श्लेषार्थे अविरोध ॥ तेह निषेधाभास छे ॥ जांणे जेने बोध ॥२१८॥ हरिगीत छंद ॥ जो लाल लक्ष्मी बागमां ॥ अचरज अति देखाय छे ॥ पगलुं भरे नहिं एक पण ॥ जन सौ कहे ते जाय छे ॥ हरि थया अंतर्धान ते ॥ दीठा नहीं आ लोकमां ॥ ए अवसरे बहु जन इहां ॥ बेठा हताज अशोकमां ॥२१९॥

टीका ॥ जाय छे एटले ॥ जायनो छोड छे ॥ अने अशोकमां एटले शोक रहीतपणामां बेठा कह्या पण आसोपालवना झाडोमां बेठा हता एम समजवुं ॥ विरोधाभासना जात्यादी भेदवडे दश भेद काव्य प्रकाशमां कह्या छे पण ते बधामां चमत्कारी श्लेश मूळ विरोधाभास छे ॥ माटे कुवलयानंदमां ते एकज भेद राख्यो छे ॥

❁ अथ विभावनालंकार ॥३४॥ ❁ दोहा ॥ कारण विण कारज थयुं ॥ कहे कवी जे ठाम ॥ अलंकार एवातणुं ॥ विभावना छे नाम ॥२२०॥ उपजाति छंद ॥ न ढाल के बख्तर धार्युं अंगे ॥ न युद्ध किधुं निज शत्रु संगे ॥ श्री धर्म पुत्रे नहिं शस्त्र लीधुं ॥ तथापि शत्रू दळ नाश कीधुं ॥२२१॥ पुनः॥ दोहा ॥ न कर्युं व्रत तीरथ कदी ॥ न कर्युं जप तप दान ॥ पण मुजने आवी मळ्या ॥

भक्ति पुत्र भगवान ॥२२२॥

टीका ॥ भगवानने मळवानां कारण जे ॥ व्रत ॥ तीर्थ ॥ जप ॥ तप ॥ दान ॥ ए आदिक छे ॥ ते कर्या वगर भगवान मळ्या ॥ माटे विभावना अलंकार छे ॥

विभावना बीजी ॥ दोहा ॥ कारण होय अपूर्ण पण ॥ कारज पूर्ण कराय ॥ भणिये बीजी विभावना ॥ अलंकार ए थाय ॥ २२३॥ चापतणुं ने वज्रनुं ॥ चिन्ह मात्र धरि अंग ॥ श्रीहरि जीत्या आ समे ॥ सकळ शत्रुने संग ॥२२४॥

टीका ॥ शत्रुने जीतवा अस्त्रशस्त्र जोईये ते विना केवळ शस्त्रनां चिन्ह मात्रे करीने जित्या माटे विभावना छे ॥ चरणमां चिन्ह जोईनेज केटलाएक प्रतिवादी गृहस्थोने भगवानपणानो निश्चे थयो अने आश्रित थया माटे ते चिन्ह पण आश्रित थवानुं कारण छे ॥

पुनः॥ दोहा ॥ कोईक रोगी एकने ॥ देवा माटे डाम ॥ चिन्ह कर्युं ज्यां राखनुं ॥ कह्युं अरेरे राम ॥२२५॥ विभावना त्रीजी ॥ दोहा ॥ ज्यां प्रतिबंधक होय पण ॥ कारज ते तो थाय ॥ त्रीजी तेह विभावना ॥ वाग्भूषण वखणाय ॥२२६॥ छपय छंद ॥ राखे वैद विशेष ॥ खूब ओषडीयां खावे ॥ मृत्युंजयना मंत्र ॥ जाणि दररोज जपावे ॥ जीवो बहु जुग आप ॥ एम आशिष उचरावे ॥ करिने प्राणायाम ॥ प्राण ब्रह्मरंध्र चहडावे ॥ बहु एवा बंदोबस्त ज्यां ॥ जन करी राख्या जोईने ॥ पण जरुर सौए जांणवुं ॥ मोते मुक्या न कोईने ॥२२७॥ पुनः॥ दोहा ॥ वांको किल्लो वज्रनो ॥ सागर सरखी खाइ ॥ रक्षक कोटि राक्षसो ॥ पण लंका लुटाई ॥२२८॥ विभावना चोथी ॥ दोहा ॥ जहां अकारण वस्तुथी ॥ कारज उद्भव थाय ॥ चोथी तेह विभावना ॥ कहे भला कविराय ॥२२९॥ उदा०॥ दोहा ॥ अहो जुओ उपजे भलो ॥ शंख थकी घन नाद ॥ ए आश्चर्य अतिघणुं ॥ सुणो धरी आल्हाद ॥२३०॥

टीका ॥ श्रीजीना कंठरुपी शंखथी घननो नाद थयो ते अति आश्चर्य छे केमजे शंखमांथी घननो नाद थाय नहीं ते थयो ॥ रुपकातिशयोक्ति अने चोथी विभावना ए बे अंगागी भाव संकरालंकार छे माटे तेनी विशेष समजण संकरालंकारमां आपीशुं ॥ घननो नाद थवानुं कारण शंख कह्यो ॥ ते शंखमांथी नहीं ॥ पण शंख सरखा श्रीजीना कंठमांथी नाद थयो ॥ मतलब के कारण सरखा बिजा कारणमांथी नाद थयो ॥

विभावना पांचमी ॥ दोहा ॥ विरुद्ध कारणथी जहां ॥ उपजे कारण कांई ॥ ते विभावना पांचमी ॥ समजो सौ मनमांई ॥२३१॥ वचनामृत वृष वंशिनां ॥ वामीने विपरीत ॥ उपजावे एने उरे ॥ झाझुं झेर खचित ॥२३२॥ कळिजुगना राजा जुओ ॥ लुटे प्रजानां धाम ॥ चोकी करनारा जनो ॥ करे चोरीनुं काम ॥२३३॥ उपजाति छंद ॥ जुओ जुओ आ विपरीत रीत ॥ आश्चर्य जोतां उपजे खचित ॥ उन्मत्त गंगाजळ एह काळे ॥ समस्त पापो जननां प्रजाळे ॥२३४॥

टीका ॥ जळमां बाळवानो गुण नथी तेम छतां जळ बाळे छे कह्युं ते विपरीत छे ॥

विभावना छठ्ठी ॥ दोहा ॥ कारजथी कारजतणी ॥ ज्यां उत्पत्ति होय ॥ छठ्ठो भेद विभावना ॥ कहे कवी सौ कोय ॥२३५॥ स्वामि सच्चिदानंदने ॥ हरिनो विजोग थाय ॥ जुग जळजोथी जुग नदी ॥ पेदा थई वहि जाय ॥२३६॥

टीका ॥ नदीमां कमळ थाय ॥ माटे कमळ पेदा थवानुं कारण नदी छे ॥ ते नेत्ररुपी कमळमांथी नदी पेदा थइ कह्युं ॥ माटे छठ्ठी विभावना छे ॥

❀ अथ विशेषोक्ति अलंकार ॥३५॥ ❀ दोहा ॥ कारण तो पुष्कळ छतां ॥ कारज सिद्ध न थाय ॥ विशेषोक्ति ए नामनो ॥ अलंकार कहेवाय ॥२३७॥ भरत खंड नरभव मळयो ॥ वळि छे हरि अवतार ॥ तरवानां कारण छतां ॥ खळ न तर्यो संसार ॥२३८॥

पुनः॥ बळे हृदयमां हरि जतां ॥ विरहानळनी लहाय ॥ दृग जळ पडे प्रवाह बहु ॥ पण नही ए ओलाय ॥२३९॥ सदा रह्यो सतसंगमां ॥ सुणी संतनी वात ॥ अहो तोय जन आसुरी ॥ भक्त थयो नही भ्रात ॥२४०॥ ۞ अथ असंभवा अलंकार ॥३६॥ ۞ दोहा॥ सिद्ध थयेला कार्यनो ॥ कहे असंभव ज्यांय ॥ असंभवालंकार ते ॥ सज्जन समजे त्यांय ॥२४१॥ उपजाति छंद ॥ को जाणतुं जे वृष पुत्र एक ॥ उद्धारशे प्राणी अहो अनेक ॥ केने हती एवि कदापि आशे ॥ कामादि शत्रू कळिमां जीताशे ॥२४२॥ ۞ अथ असंगति अलंकार ॥३७॥ ۞ दोहा ॥ कारणनुं ने कार्यनुं॥ विरुद्ध जूदुं ठाम ॥ जाणो एह असंगति ॥ अलंकारनुं नाम ॥२४३॥ उपजाति छंद ॥ कर्यो हरीये शुभ जज्ञ ज्यांय ॥ जोवा मळेलां जन जुथ त्यांय ॥ कुंडे धर्यो पावक जेह काळ ॥ कुसंगिने अंतर उठि झाळ ॥ २४४॥ पुनः॥ वसंततिलका॥ संतो सुपंगति करे जमवानी ज्यारे॥ जोवा मळे जन घणा स्थळ तेह त्यारे॥ मिष्टान्नमां मुनिजनो जळ रेडि खाय ॥ जोनारनां मन पुरां पलळीज जाय ॥२४५॥

टीका ॥ एक वेपारी घेर बेठो चौटामां वेपार चलावे छे॥ एमां कारण ने कारज जुदे ठेकांणे थयां खरां पण तेमां एक बीजाथी विरुद्धता नथी ॥ माटे ते असंगति अलंकार नथी ॥

असंगति बीजी ॥ दोहरो ॥ जे स्थळ करवा जोग्य ते ॥ बीजे स्थळे कराय ॥ ते पण गणो असंगति ॥ अलंकार कहेवाय ॥२४६॥ उपजाति छंद ॥ वंशी सुणी गोपी उतावळी थै ॥ धर्या शरीरे सणगार तो लै ॥ कंठे धर्या लै भुज बंध जेह ॥ बांध्या भुजाये गळबंध तेह ॥२४७॥ पुनः॥ दोहा ॥ सुज्ञ पास कहेवी घटे॥ राजनीति शुभ जेह ॥ अबुद्ध रावण आगळे॥ कही अंगदे एह ॥२४८॥ असंगति त्रीजी ॥ दोहा ॥ एक काम करवा जतां ॥ विरुद्ध काम कराय ॥

त्रीजो तेह असंगती ॥ अलंकार वखणाय ॥२४९॥ रक्षण करवा सर्वनुं ॥ जन्म्या जगदाधार ॥ पण अधर्म अंशीतणो ॥ सद्य कर्यो संहार ॥२५०॥ पुनः॥ उपजाति छंद ॥ संतो अहिंसामय धर्म जेह ॥ वधारवाने विचर्याज तेह ॥ न कोईने मारवुं एम वार्या ॥ तथापि कामादिक शत्रु मार्या ॥२५१॥ ❀ अथ विशमालंकार ॥३८॥ ❀ दोहा ॥ अण मळतुं एवुं कहे ॥ क्यां आ ने क्यां तेह ॥ ते विषमालंकार छे ॥ जाणे कविजन जेह ॥२५२॥ क्यां महिमा हरि कृष्णनो ॥ अदभुत अने अपार ॥ अल्प बुद्धी क्यां माहरी ॥ करवा वर्णन सार ॥२५३॥ पुनः॥ क्यां मेरु ने टेकरी ॥ क्यां हीरो ने काच ॥ सागर अने तळावडी ॥ क्यां खलोक्ति मुनि वाच ॥२५४॥ विषम बीजो ॥ दोहा ॥ कार्योत्पत्ती ज्यां दिसे ॥ कारणथकी विरुप ॥ ते विषमालंकारनो ॥ बीजो भेद अनुप ॥२५५॥ उज्वळ दीपकथी जुओ ॥ काजळ उपज्युं शाम ॥ काळा कादवथी थयुं ॥ उज्वळ पंकज नाम ॥२५६॥

टीका ॥ ज्यां सित उष्ण अमृत विष कटु मिष्ट इत्यादीक गुण विरुद्ध होय त्यां पांचमी विभावना जाणवि ॥ अने ज्यां काळुं धोळुं वांकुं पांशरुं इत्यादी रुप विरुद्ध होय त्यां विष्मालंकार जांणवो ॥

विषम त्रीजो ॥ दोहा ॥ जे अर्थे उद्यम करे ॥ अर्थ सरे नहि एह ॥ उलटुं अनिष्ट तो मळे ॥ विषमालंकृति तेह ॥२५७॥ इष्ट लेतां अनिष्ट प्राप्ती ॥ भेद १ ॥नुं उदाहरण ॥ दोहा ॥ मोती लेवाने पड्यो ॥ मोति न मळ्युं त्यांय ॥ उलटो तेनो उदधिये ॥ जीव लिधो जळमांय ॥२५८॥ अनिष्ट मटाडवा जतां अनिष्ट थयुं ॥ भेद २॥ नुं लक्षण ॥ दोहा ॥ कांइ अनिष्ट मटाडवा ॥ आश्रयपरने जाय ॥ त्यां पण इष्ट मळे नहि ॥ अनिष्ट प्राप्ती थाय ॥२५९॥ गीती ॥ लागी घरमां लाय ॥ आश्रय लेवा गयोज वनमांय ॥ वनमां पण

दव लाग्यो ॥ वन साथे ते बळि गयो त्यांय ॥२६०॥ बीजाने दुख करवा जतां पोताने थाय ॥ भेद ३ ॥नुं लक्षण ॥ दोहा ॥ करतां अनिष्ट परतणुं ॥ पोतातणुंज थाय ॥ ते पण विषमालंकृति ॥ गुणवंता कवि गाय ॥२६१॥ उदा०॥ गीति छंद ॥ लंकेशे हनुमंतनुं ॥ सळगाव्युं पुंछडुं घणुं ज्यारे ॥ तेथी लंका तेनी ॥ बळी गइ ते बधी अहो त्यारे ॥२६२॥ केवळ अनिष्टनी प्राप्ति ॥ भेद चोथानुं लक्षण ॥ दोहा ॥ इष्ट काम करवाथी ॥ केवळ अनिष्ट थाय ॥ ते विषमालंकार पण ॥ गणतां खरो गणाय ॥२६३॥ उ०॥ राये पोपट पाळियो ॥ कनक पींजरामांय ॥ पण तेणे नृप नाकनी ॥ हरी लीधी शोभाय ॥२६४॥ केवळ इष्टनी अप्राप्ति ॥ भेद ५॥ पांचमानुं ल०॥ दोहा॥ धार्युं काम करवा जतां ॥ निज धार्युं नव थाय॥ केवळ इष्ट नही मळ्युं॥ एवो विषम गणाय ॥२६५॥ उ०॥ उपजाति॥ उपाडवा शंकरकेरु चाप ॥ लंकेश मंडयो करि जोर आप ॥ तेनाथी ते तो उपडयुं न ज्यारे ॥ हशी पडया सौ तेहवारे ॥२६६॥

टीका ॥ रावणमां शीवनुं धनुष उपाडवानी शक्ति हतीज नही माटे आ ठेकांणे विशेषोक्ति अलंकार थतो नथी ॥

अणगमतुं मटाडवानी इच्छा सिद्ध थाय नहि ॥ भेद ६ ॥ छठानुं लक्षण ॥ जेह अनिष्ट मटाडवा ॥ परने शरणे जाय ॥ ते अनिष्ट त्यां पण रहे ॥ तेह विषम कहेवाय ॥२६७॥ उ०॥ उपजाति ॥ तीर्थे गयो पाप समस्त खोवा ॥ लाग्यां स्वनेत्रो परनारि जोवा ॥ तेथी थयुं पातक वज्र लेप ॥ तेनो न छूटेज कदापि चेप ॥२६८॥ बीजानु भुंडुं करवानी इच्छा सिद्ध थाय नहि ॥ भेद ७ ॥ सातमानुं लक्षण ॥ दोहा ॥ अनिष्टपरनुं इच्छतां ॥ इच्छा पूर्ण न थाय ॥ अलंकार ए पण भलो ॥ गणतां विषम गणाय ॥२६९॥ कीधो श्रीहरि कृष्णनो ॥ द्वेषि जने बहु द्वेष ॥ तेम तेम श्रीहरि त-

णो ॥ वध्यो प्रताप विशेष ॥२७०॥ पुनः॥ दुख देवा निज शत्रुने ॥ दिधो जैने डाम ॥ तेथी तेना तनतणुं ॥ दरद मटयुं ते ठाम॥२७१॥ परद्वारा इष्टनी अप्राप्ति ॥ भेद ८ ॥ आठमानुं लक्षण ॥ दोहा ॥ पोताना हित कारणे ॥ परने प्रेर्यो होय ॥ ते साधे निज अर्थ जै ॥ विषमालंकृति तोय ॥२७२॥ गीती ॥ मने मळे महाराज ॥ जासुत तेनो तपास लेवाने ॥ तेने तो हरि मळिया ॥ साधु थयो ते तहां रहेवाने ॥२७३॥ पुनः॥ शेठे वाणोतरने ॥ मोकलियो दई दुकाननो भार ॥ तेणे तो त्यां जइने ॥ स्वारथ साध्यो चलावि वेपार ॥२७४॥ तर्त इष्ट प्राप्ति पण पछे नहि ॥ भेद ९ ॥ नवमानुं लक्षण ॥ दोहा॥ इच्छा राखीने घणी ॥ कर्यो परिश्रम होय ॥ विशेष वार टके नही॥ एवुं मळे फळ तोय ॥२७५॥ उ०॥ कवित ॥ पिता माता पुत्र मळी शिवने प्रसन्न करी ॥ लाव्यां मिष्ट अन्नने अकेको वर लावियां ॥ रामाये तो रुप माग्युं ॥ राजानी राणीजी थयां ॥ पतिये तो मागी वर वांनरि बनावियां ॥ काढी मुकी राजाये तो पति पुत्र पासे आवी ॥ पुत्रे वर मागी माता हतां तें करावियां ॥ मळ्युंतुं मिष्टान्न ते तो थोडे काळे थई रह्युं ॥ जेवां गयां हतां तेवां थैने घेर आवियां ॥२७६॥ इष्टार्थ उद्योगथी इष्ट न मळे तोपण इष्ट मळयानी भ्रांति ॥ भेद १० ॥ ल०॥ दोहा ॥ इष्ट थयानी भ्रांति ज्यां ॥ उद्यम करतां थाय ॥ ते विषमालंकारनो ॥ भेद भलो कहेवाय ॥२७७॥ असद्गुरुने गुरु गणी ॥ सेव्यो मोक्षनि आश ॥ आव्या बहु जन मोक्ष हित ॥ तेथी वध्यो विश्वास ॥२७८॥

टीका ॥ एमां असद्गुरुमां मोक्ष दातानी भ्रांति पडी ॥ अने मोक्षनी इच्छाथी तेनी पासे घणा लोको आववा लाग्या तेथी काम सिद्ध थयांनी भ्रांति पडी ॥ माटे भ्रांतिवाळो विषमालंकार छे ॥ त्रीजा विषम अलंकारना आ नव भेद छे तेमां पहेला चार भेद अनिष्ट प्राप्तिना छे॥ अने पछीना पांच भेद इष्टनी अण प्राप्तीना छे॥

भ्रांति अलंकारमां तो भ्रांति मात्र पडे ॥ पण तेथी मारुं धार्युं काम थयुं एम माने नही ॥

अथ समालंकार ॥३९॥ दोहा ॥ जुगते जुगतुं ज्यां करे ॥ वर्णन कविजन कोय ॥ सप्त समालंकार ते ॥ जन मन रंजन होय ॥२७९॥ शंकरनुं तन श्वेत छे ॥ श्वेत शशि कळा पास ॥ सुर सरिताये त्यां कर्यो ॥ निज अनुरुप निवास ॥२८०॥ पुनः॥ सवैयो॥ जे मुख श्रीहरि नाम जपे नहि जे मुख शब्द वदे नहि साचा ॥ जे मुख मान न दे जनने वळि जे मुख कान भरे जइ काचा॥ जे मुख क्लेश कुसंप करे बहु जे मुखमां विख जेविज वाचा॥ जे मुख तो अपशब्द वदे बहु ते मुख उपर योग्य तमाचा ॥२८१॥

टीका ॥ छाणना देवने कपाशियानी आंखो जोईये इत्यादि ॥

समालंकार बीजो ॥ दोहा ॥ कारणना सरखोज गुण ॥ कारजमां कहेवाय ॥ तेह समालंकारनो ॥ बीजो भेद जणाय ॥२८२॥ उ०॥ काजळ अंजन आंख्यनु ॥ तेज वधारे तेह ॥ दीपक सुत दीपन करे ॥ उचित वात छे एह ॥२८३॥ पुनः॥ गीति ॥ वन दाहक पावकथी ॥ धूम्र थयो ते थयो गगन मेह ॥ शांत करे तें दवने ॥ योग्य थयुं दव दहेज तेह ॥२८४॥ समालंकार बीजानो बीजो भेद॥ दोहा ॥ जेवी संगतिमां वसे ॥ गुण तेवो धरनार ॥ एवुं वर्णन होय ज्यां ॥ तोय समालंकार ॥२८५॥ उ०॥ हरिगीत छंद ॥ शिर मोर छे शुक नासिका॥ मुख मधुर स्वर संगे रही॥ मुरली वदे छे मधुर स्वर ॥ तें योग्य सौ जाणे सही ॥२८६॥

टीका ॥ प्रभुने माथे मोर मुगट छे ॥ नाक पोपटना जेवुं छे ॥ अने मुखमां मधुरता छे॥ ते मोर पोपटने मुख ए त्रणे मधुर स्वरवाळां छे ॥ तेनी सोबतमां रह्याथी मोरलीमां मधुर स्वर बोलवानो गुण आव्यो ॥ ते समालंकार छे ॥

अथ समालंकार त्रीजो ॥ ल०॥ दोहा ॥ अडचण

कांई पडया विना ॥ सिद्धि इष्टनी थाय ॥ तेह समालंकार छे ॥ श्लेषे पण समजाय ॥२८७॥ दोहा ॥ प्रभुनां दर्शन पामवा ॥ उद्यम कर्यो विशेष ॥ प्रगट प्रभु त्यां तो मळया ॥ अडचण न पडी लेश ॥२८८॥

टीका ॥ एमां लगारे अडचण पड्या विना उद्यम करवाथी प्रभुनी प्राप्ति थई॥ हवे त्रीजा विशममां इष्टार्थ माटे उद्यम करतां अनिष्ट थयुं माटे तेनो प्रति द्वंदि एटले एथी उलटो जे उद्यम करवाथी अनिष्ट न थाय अने इष्ट थाय तेनुं उदाहरण ॥

कवित ॥ हडाळानी हदमां थै वडुं लशकर वह्युं ॥ शुनी एक भशि भशि मरी गई ते समे॥ कोइ गाम कवि एक चारण चालीने गयो ॥ पटेलने घेर पटलाणीने ते न गमे॥ जोई पटलाणी कहे जाओ जाओ आंहि थकी ॥ अजाण्याने उतरवा आपीये नही अमे ॥ क्रोध करी कहें कवी हडाळानी होय आ तो ॥ बाई बोली उतरोजी ॥ अजाण्या नथी तमे ॥२८९॥

टीका ॥ एमां क्रोध करीने बाईने हडाळानी कुतरी कहिने जवानी इच्छा हती पण अनिष्ट न थतां उलटी इष्टनी प्राप्ति थई ॥ वळी श्लेषार्थनो चमत्कार होय अने इष्टार्थथी विरुद्ध थाय तोपण समालंकार कहेवाय जेमके ॥ उ०॥

गीति ॥ हरि मळवाने अर्थे॥ जतो हतो त्यां हरि मळ्या वनमां॥ ठीक थयुं छे आ तो॥ सोबति एके कह्युं वचन जनमां॥२९०

टीका ॥ लक्षणमां कह्युं के श्लेषथी पण समालंकारज समजाय ॥ जेमके हरि प्रभुनुं नाम छे॥ अने हरि वांदरानुं नाम पण छे ॥ माटे हरिने मळवा जवानी इच्छावाळाने वनमां वांदरा मळे ॥ एटले कोई मश्करीमां कहे के आ तने हरि मळ्या ते ठीक थयुं॥ एवी रीते समालंकार थाय॥ जेमके मश्करीमां कहेवाथी हसवुं आवे पण कांइ अनिष्ट थाय नही ॥ अने श्लेषार्थ कर्या विना तो वनमां प्रभु मळ्या ते चोखो समालंकार छेज ॥

❀ अथ विचित्रालंकार ॥४०॥ ❀ ल०॥ दोहा ॥ विपरित फळ इच्छा धरी ॥ क्रिया करे जो कोय ॥ निश्चे विचित्र नामनो ॥ अलंकार ए होय ॥२९१॥ उ०॥ रोवरावीने दुःख दई ॥ माता ओ-

सड पाय ॥ पण निज सुतने सुख थवुं ॥ उर एवी इच्छाय॥२९२॥ पुनः॥ गीती छंद ॥ तीर हठे छे पाछो ॥ पण ते आघो विशेष जावाने ॥ बीज अवनीमां नांखे ॥ पण ते प्राप्ति विशेष थावाने ॥ २९३॥ पुनः॥ दोहा ॥ सुख तजि संतो तप करे ॥ दुख वेठे दिन नीश ॥ पण अक्षय सुख पामवा ॥ रिझाविने जगदीश ॥२९४॥ ֍ अथ अधिकालंकार ॥४१॥ ֍ दोहा ॥ ज्यां मोटा आधारथी ॥ अति मोटो आधेय ॥ ए अधिकालंकार छे ॥ कोविद जनो कहेय॥२९५

टीका ॥ घडो आधार कहेवाय ॥ अने तेमां भरेलुं पाणी ते आधेय कहेवाय॥ माटे मोटा आधारमां पण आधेय समाय नही ॥ एम कहिये ते अधिकालंकार छे ॥

दोहा॥ अहो एह आकाशमां ॥ विश्व अनेक वसाय ॥ पण तेमां हरिना गुणो ॥ लखतां नही समाय ॥२९६॥ पुनः॥ ज्यां लाखो नर नारियो ॥ सुखथी वसे सदाय ॥ पण बे भाई कुसंगिया ॥ ते पुरमां न समाय ॥२९७॥ ֍ अथ अधिकालंकार बीजो ॥ ֍ दोहा ॥ ज्यां मोटा आधेयथी ॥ अधिक श्रेष्ठ आधार ॥ जाणो बीजा प्रकारनो ॥ ए अधिकालंकार ॥२९८॥ उ०॥ मन केवुं मोटुं हशे ॥ भक्त तणुं हे भाई ॥ असंख्य ब्रह्मांडो सहित ॥ श्रीहरि रहे समाई ॥२९९ ֍ अथ अल्पालंकार ॥४२॥ ֍ दोहा ॥ सूक्ष्म होय आधेय पण ॥ एथि सूक्ष्म आधार ॥ ए अल्पालंकार छे ॥ जाणे जन भणनार ॥ ३००॥ गीति ॥ जे सदगुरु सुखकारी ॥ स्वल्पज उचरे सुवाक्य शिक्षानुं ॥ ए पण गळे न उतरे ॥ आसुरी जननुं गळुं अति नानुं ॥ ३०१॥ पुनः॥ दोहा ॥ गुप्त राखवा योग्य जे ॥ छेक स्वल्प पण वात ॥ अणसमजूना उदरमां ॥ समाइ न शके भ्रात ॥३०२॥ पुनः॥ सूक्षम द्दगनी पांपणो ॥ ए तो द्दगने आज ॥ पडदो मोटो थै पडयो ॥ करतां दर्शन काज ॥३०३॥ ֍ अथ अन्योन्यालंकार ॥४३ ֍ दोहा ॥ एक बीजाने ज्यां करे ॥ परस्परे उपकार ॥ कविजन

सौ तेने कहे ॥ अन्योन्यालंकार ॥३०४॥ गीति ॥ संत समाज वडे आ ॥ शोभे आचार्य मान पण पामे ॥ आचार्य वडे संतो ॥ शोभे छे वळि मनाय सौ ठामे ॥३०५॥ पुनः॥ दोहा ॥ सुजने आप्युं संतने ॥ पवित्र भोजन पान ॥ संते पण ते सुजनने ॥ आप्युं उत्तम ज्ञान ॥३०६॥ पुनः॥ गीति॥ संत सुणावे वाणी ॥ जन तार्यानुं सुपुण्य मळवाने ॥ जन पण तेह सुणे छे ॥ ते थकि संताप सर्व टळवाने ॥३०७॥ ꙮ अथ विशेषालंकार ॥४४॥ ꙮ दोहा ॥ ज्यां वर्णन आधेयनुं ॥ विण प्रसिद्ध आधार ॥ विशेष नामे थाय छे ॥ अलंकार ए ठार ॥३०८॥ कवित ॥ ब्रह्मपुर वाशी अविनाशी सर्व सुख राशी ॥ धर्म अने भक्ति थकि धर्यो अवतार छे ॥ अधर्म उथापि धर्म थापी मोटां धाम बांध्या ॥ हरिभक्त बाई भाई हजारो हजार छे ॥ संप्रदाय साचववा उभय आचार्य कर्या ॥ आपतणी गादीतणो आप्यो अधिकार छे ॥ सर्व काम सिद्ध करी स्वधाम सिधाव्या पण ॥ प्रभुनो प्रताप आचारजमां अपार छे ॥३०९॥ पुनः॥ दोहा ॥ कंस गयो रावण गयो॥ पण तेना गुण जेह॥ आसुरी जनने उर रही ॥ नडे संतने तेह ॥३१०॥

टीका ॥ कोई ठेकाणे आधेयनुं स्थान बदलाया विना पण विशेषालंकार थाय जेमके ॥

दोहा ॥ ब्रह्मानंद मुनीतणी ॥ कविता विमळ विशाळ ॥ जो रंजन जगने करे ॥ लागे रूडी रसाळ ॥३११॥

टीका ॥ साप गया ने लीसोटा रह्या ॥ ते पण विशेषालंकार छे ॥

विशेषालंकार बीजो ॥ दोहा ॥ एकज वस्तु अनेक थळ ॥ वर्णन करे विचारि ॥ ते तो बीजो भेद छे ॥ विशेषनो मुदकारि ॥ ३१२॥ कवित ॥ भारे समैयो भरायो ज्यारे गढपुर त्यारे ॥ भगो दोशी कारभारी कर्या वनमाळिये ॥ हरि पासे भगो दोशी हाजर

हमेश रहे ॥ उतारे उतारे भगा दोशीने निहाळिये ॥ भवन भवनमांहि पण भगो दोशी दिसे ॥ भगो दोशी दीसे मेडी माळिये ने जाळिये ॥ गाममांहि भगो दोशी धाममांहि भगो दोशी ॥ ठाम ठाम भगो दोशी भगो दोशी भाळीये ॥३१३॥ विशेषालंकार त्रीजो॥ दोहा ॥ ज्यां किंचित आरंभथी ॥ अलभ्य वस्तु पमाय ॥ त्रीजो भेद विशेषनो ॥ गणतां तेह गणाय ॥३१४॥ जमुना पवित्र जाणिने ॥ तेमां करतां स्नान ॥ अक्रूरे जळमां दिठा ॥ जळशायी भगवान ॥ ३१५॥ ❁ अथ व्याघातालंकार ॥४५॥ ❁ करवानुं तेथी करे ॥ उलटुं कांइ काम ॥ वांचो ते व्याघात छे ॥ अलंकारनु नाम॥३१६ कवित ॥ कुंवरे हुकम कर्यो साकर खंडावी लावो ॥ खवास खांडीने लाव्यो रोटलीमां ते धरी ॥ खातां खातां गांगडी हती ते दांतमांही खुंची ॥ राजाना कुंवरने तो रीस अतीशे ठरी ॥ फोजदारने बोलावी फरमावियो हुकम ॥ खूब शीक्षा आ खवासने करो खरेखरी ॥ चवरावो साकरना गांगडा आखा ने आखा ॥ एवी शिक्षा आकरी कुंवरे तेहने करी ॥३१७॥ गद्यः॥ एक वस्तुवडे एक माणस जे काम करे बीजो माणस ते वस्तुवडे तेथि उलटुं करे ते पण व्याघात अलंकारनो भेद छे ॥ दोहा ॥ वचनवडे नास्तिक गुरु ॥ नास्तिक करे निदान॥ आस्तिक गुरु वचने करे ॥ आस्तिकता गुणवान ॥३१८॥ व्याघातालंकार बीजो ॥ दोहा ॥ एक क्रिया पण उभयने ॥ सुलटी उलटी जणाय ॥ व्याघातालंकारनो ॥ बीजो भेद गणाय ॥३१९॥ कवित ॥ राजा दशरथ ज्यारे जुद्धमां जवाने चाल्या ॥ राणीने अबळा जाणी कही एवी वात छे॥ तमे तो आंहिज रहो राणीने ते गम्युं नहि॥ जाण्यु क्षत्रियाणी छुं लडयानी मारे खांत छे ॥ कहे राणी स्वामी मने आपनी अबळा जाणी ॥ साथे राखो जुद्धमां जो दया भली भात छे॥ कहे राय अबळाने दयाथी-

ज मेली जवी ॥ ए तो जुओ आपनीज वाणीमां व्याघात छे॥३२०॥

टीका ॥ एमां राणीने घेर मुकी जवी राजाने ठीक जणायुं ते राणीने ठीक लाग्युं नही ॥ तथा राणीये कह्युं जे मने अबळा जाणीने दया करो तो साथे ल्यो॥ ते वाक्य राजाने विरुद्ध लाग्युं के अबळा उपर दया होय तारे घेर मुकवी जोईये॥ माटे व्याघात अलंकार छे ॥

पुनः॥ हरिगीत छंद॥ कहे ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म एक अखंड ने अविकारि छे ॥ न विकार वळगे एहने निर अंश सर्व विहारि छे ॥ ते ब्रह्म सूकर श्वान आदिक एज सर्वे जात छे ॥ अविकारि सविकारि थयो वदतांज ते व्याघात छे ॥३२१॥ दोहा ॥ एक मरणना भयथकी ॥ परणावे परिवार ॥ एक मरणना भयथकी ॥ सद्य तजे संसार ॥३२२॥ ❁ अथ कारण माळालंकार ॥४६॥ ❁ अनुक्रमे कारण घणां ॥ के कारज जे ठार ॥ ते कारण माळा कहे ॥ सारा कवि सरदार ॥३२३॥ उपजाति ॥ सत्संगथी कृष्ण कथा सुणाय ॥ कथा सुणे अंतर शुद्ध थाय ॥ शुद्धांत रे श्रीहरि ओळखाय ॥ जे ओळख्याथी भव भीति जाय ॥३२४॥ दोहा ॥ निंद्य थाय अभिमानथी ॥ वखाणथी अभिमान ॥ वखाण पामे गुणथकी ॥ गुणनुं संग निदान ॥३२५॥ ❁ अथ एकावली अलंकार ॥४७॥ ❁ ग्रहण करीनें मूकीये ॥ अर्थ पंक्ति ए रीत ॥ अलंकार एकावली ॥ चतुर विचारो चित्त ॥३२६॥ अनुचर धणि आधीन छे॥ धणि छे नृप आधीन ॥ नृप नृपवर आधीन छे ॥ ते हरि आगळ दीन ॥ ३२७॥ पुनः॥ कवित ॥ धन्य छे जे भरत भूमिमां नर देह पांम्यो॥ नर देह पामीने प्रभु भजन करवुं ॥ भजन करे ते भवसागरने तरे भाई ॥ भवसागर तरे छे तेनुं भलुं मरवुं ॥ मरवुं सुफळ ज्यारे जन्मवुं न फरी पडे ॥ जन्मवुं पडे तो भक्त घेर अवतरवुं॥ अवतरवुं तो ज्यारे हरि अवतार होय ॥ हरि अवतार होय तेनुं ध्यान धरवुं ॥३२८॥

टीका ॥ एमां एक पछी एकनुं विशेषण छे अने पछी एक पछी एक विशेषार्थनी पंक्ति होय ते पण एकावली अलंकार छे जेमके ॥

कवित ॥ दिशाओने काळतणु स्थान छे आकाश एक ॥ तेंमांही प्रकाशमान सूर्य ते संभारीये ॥ तेना कर पामेलो छे चंद्र चंद्रतणो तात ॥ सलिल छे तेनो सुत वन्हि छे विचारिये ॥ वन्हिमां हविष्य होमनार यजमान जेह ॥ तेना प्राण रूप वायु देवता छे धारिये ॥ वायु देव जेनो गंध वहे एवी वसुधा छे ॥ अष्ट मूर्ति इश्वरनी अंतरे उतारीये ॥३२९॥ ꕥ अथ माळा दीपकालंकार ॥४८ ꕥ दोहा ॥ दीपक ने एकावली ॥ मळे बे अलंकार ॥ माळा दीपक ते कहे ॥ सौ कविना सरदार ॥३३०॥ गुरु वाणी ठरि कानमां ॥ कान तेह तनमांय ॥ तन तो मनने वश अने ॥ मन ते तो प्रभु पाय ॥३३१॥

टीका ॥ एमां गुरुनी वाणी कान तन मन अने प्रभुना पाव ॥ ए रीते अर्थ पंक्ति ग्रहण करीने मुकेली छे ते एकावली अलंकार छे ॥ अन ठरी ए शब्द दीपक छे ॥ ते पांच बस्तुने लागु पडे छे ए रीते दीपक ने एकावली मळ्याथी माळा दीपक अलंकार थयो ॥

ꕥ अथ सारालंकार ॥४९॥ ꕥ दोहा ॥ एक एकथी अधिक गुण ॥ उच्चरिये उत्कर्ष ॥ ते सारालंकार सुणि ॥ हैय उपजे हर्ष ॥ ३३२॥ पुष्कर सरवर श्रेष्ट छे ॥ मान सरोवर तेथि ॥ तेथकि सागर श्रेष्ट छे ॥ मन मुनि जननुं एथि ॥३३३॥ पुनः॥ गोळथकी साकर गळी ॥ अमृत एथकी मिष्ट ॥ एथी वचनो अति मीठां ॥ उचरे जे हरि इष्ट ॥३३४॥

टीका ॥ ए तो एक एकथी सारा गुण कह्या ॥ हवे एक एकथी अधम गुणनी उत्कृष्टता कहे छे ॥

दोहा ॥ झेर अफिण पण एथको ॥ अहि मुख झेर विशेष ॥ हाळाहळ विष तेथि पण ॥ विष खळ मुख उपदेश ॥३३५॥

टीका ॥ हवे सारो अने नठारो बेयनी मिश्र उत्कृष्टता कहे छे ॥

दोहा ॥ श्रेष्ट मेरुथी मेदिनी ॥ एथकी जळ आधार ॥ एथि श्रेष्ट आकाश छे ॥ तृष्णा एथि अपार ॥३३६॥

टीका ॥ एमां मेरु पृथिवी सागर अने आकाशनी सारी मोटाइ कही ते साथे तृष्णानी नठारी मोटाइ कही ॥ माटे शुभाशुभ मिश्रित उत्कृष्टता छे ॥

अथ यथा संख्यालंकार ॥५०॥ दोहा ॥ जेजे शब्दो बोलिये ॥ राखि अनुक्रम एह ॥ वळि वदिये तेने क्रमे ॥ यथा संख्य तो तेह ॥३३७॥ वाहन हंस गरूड वृष ॥ कळश कंज अहि धार ॥ धात्री रमा उमा पती ॥ वंदुं वारमवार ॥३३८॥

टीका ॥ हंस १ ॥ गरुड २ ॥ वृषभ ३ ॥ ते जेनां वाहन छे ॥ अने अमृतनो कळश १ ॥ कंज कहेतां कमळ २ ॥ अने सर्पना धरनार छे ॥ धात्री एटले विधात्री १ ॥ लक्ष्मी २ ॥ अने पार्वतीना पति छे ॥ एवा ब्रह्मा विष्णु अने शिवने हुं वारमवार वंदन करुं छुं ॥

पुनः॥ छपय ॥ कमळ केळ ने कूप ॥ शंख शशधर शुक जेह ॥ नीर बाग शुभ भूमि ॥ सिंधु नभवननो तेह ॥ प्रफूलित युवा गंभीर ॥ स्वच्छ पूरण उच्चरतो ॥ रक्त पुष्ट ने सजळ ॥ शुद्ध अकलंकित ठरतो ॥ पद उरु नाभी ग्रीवा वदन ॥ नासा श्री भगवाननी॥ निरखे अति हेते हरिजनो ॥ शोभा तेह समाननी ॥३३९॥

टीका ॥ छेला उदाहरमां कह्युं के ॥ कमळ १ ॥ केळ २ ॥ कूप ३ ॥ शंख ४॥ शशधर एटले चंद्र ५ ॥ शुक ६ ॥ ते कमळ पाणीमांहिनुं १ ॥ केळ बागनी २ ॥ कुवो सारी भूमीनो ३ ॥ शंख समुद्रनो ४ ॥ शशधर केतां चंद्र ते आकाशनो ५ ॥ शुक एटले पोपट ते वननो ६ ॥ ते कमळ फुलेलुं १ ॥ केळ जुवान २ ॥ कुवो गंभीर कहेतां उंडो ३ ॥ शंख स्वच्छ मेलो नहि ४ ॥ चंद्र पुरण ५ ॥ पोपट बोलतो ६॥ ते कमळ रातुं १ ॥ केळ पुष्ट २ ॥ कुवो पाणीवाळो ३ ॥ शंख पवीत्र ४ ॥ चंद्र कलंक रहित ५ ॥ पोपट स्थिर रहेलो ६ ॥ तेना जेवा श्रीहरिना चरण १ ॥ साथळ २ ॥ नाभी ३ ॥ कंठ ४ ॥ मुख ५ ॥ नासीका ६ ॥ छे ते हरिं भक्तो निरखे छे॥ ए रीते अनुक्रमे शब्दनो अन्वय छे ॥ माटे यथा संख्या अलंकार छे ॥

❁ अथ पर्यायालंकार ॥५१॥ ❁ दोहा ॥ एक वस्तु थळ एक तजि ॥ बिजे त्रिजे स्थळ जाय ॥ तो तेने कवियो कहे ॥ अलंकार पर्याय ॥३४०॥ शार्दूल बिक्रीडित छंद ॥ राज्यैश्वर्य हतुं अवध्य पुरमां ते हस्ति नांख्ये गयुं ॥ त्यांथी उज्जयिनी गयुं पछी जई धारापुरिमां रह्युं ॥ त्यांथी दील्हि विषे गयुं पछि वळी पूणे रह्युं जै ठरी ॥ इच्छा श्रीहरिनी थवाथि कलकत्ते जै स्थिती त्यां करी॥३४१॥

टीका ॥ ए तो शुद्ध पर्याय छे ॥ हवे आधारना संकोचपणाथी संकोच पर्याय कहिये छैये ॥

दोहा ॥ हती दृष्टि शुभ संतनी ॥ विशाळ थळमां जेह ॥ ध्यान समे ठरीने रही ॥ नासाग्रे स्थिर तेह ॥३४२॥ ❁ अथ विकाश पर्याय ॥ ❁ कवित ॥ क्षत्री पुत्र खडगने पाणी पवरावा गयो ॥ तेणे पाणी पानारने कथन एवुं कह्युं ॥ असल तमारा बाप दादा पाणी पाता हता ॥ तेवुं तमे पाइ शकता नथी ते शुं थयुं ॥ पाणी बदलाई गयुं के तमारी कळा गई ॥ कहो भाई एते पाणी आ वखते क्यां रह्युं ॥ एवुं सुणी एणे कह्युं क्षत्रियोना खडगमां ॥ पाणी जे जगातुं ते तो गोरा देशमां गयुं ॥३४३॥

टीका ॥ एमां खडगमां पाणी जणातुं हतुं ॥ ते गोरा लोकोना देशमां गयुं एम कह्युं ॥ ते खडग करतां देश मोटो छे माटे ते विकाश पर्याय कहवाय ॥

❁ अथ उभय पर्याय ॥ ❁ दोहा ॥ गीता सुणवा मन ठर्युं ॥ पछी वेदादिकमांय ॥ पछी निज सूक्ष्म स्वरुपमां ॥ पाछि निज तत्वे त्यांय ॥३४४॥

टीका॥ एमां प्रथम गीतामां मन ठर्युं॥ पछी गीताथी मोटा वेदमां मन ठर्युं॥ पछी सूक्ष्म एवो जे आत्मा तेमां ठर्युं॥ अने पछी ते आत्मामां रहेला आत्माथी पण सूक्ष्म एवा आत्माना तत्व अंतर्यामीमां ठर्युं ॥ एम नानाथी मोटामां पछी मोटाथी नानामां गयुं माटे उभय पर्याय छे ॥

ॐ अथ पर्यायालंकार बीजो ॥ ॐ दोहा ॥ एकज विषे अनेकधा ॥ गुण के स्थिती जणाय ॥ अलंकार पर्यायनो ॥ बीजो भेद गणाय ॥३४५॥ ज्यां उजड जंगल हतुं ॥ वृत्तालयनी पास ॥ त्यां अदभुत रचना थई ॥ श्रीहरि कर्यो निवास ॥३४६॥ ॐ अथ परिवृत्ति अलंकार ॥५२॥ ॐ दोहा ॥ अदलाबदली ज्यां करे ॥ न्यून अधिकनी कोय ॥ परिवृत्ति ते जाणिये ॥ जो मन रंजन होय ॥३४७॥ तन मन धन अर्पण कर्यां ॥ निश्चय जेनो नाश ॥ तेना बदलामां लिधो ॥ अक्षर धाम निवास ॥३४८॥ पुनः॥ दिधा सुदामे कृष्णने ॥ तांदुल मुष्टि लगार ॥ ते बदले प्रभु पासथी ॥ लीधी रिद्धि अपार ॥३४९॥ ॐ अथ परिसंख्यालंकार ॥५३॥ ॐ दोहा ॥ निषेध करिने एक थळ ॥ कहिये बीजे ठाम ॥ अलंकार एवा तणुं ॥ परिसंख्या छे नाम ॥३५०॥ चोबोला छंद ॥ राम राज्यमां दंड न जननो ॥ जति कर दंड जणाय ॥ चोरी तो विवामां दीठी चोरी बिजे न थाय ॥ अन्न जार जोवामां आवे जनमां जार न कोय ॥ जड तो पाषाणादिक जोया जनमां जड नव होय ॥३५१॥

टीका ॥ बीजे ठेकाणे निषेध कर्या वगर भावार्थथीज निषेध जणाय ते पण परिसंख्यालंकार छे ॥३५२॥

चोबोला छंद ॥ कुटिलपणुं तो भृकुटिमांही ॥ करे भ्रमर मधुपान ॥ विष अंतरमां मेघज राखे ॥ दिसे छंदमां मान ॥३५३॥

टीका ॥ एमां कुटिलपणुं एटले वांकापणुं भृकुटिमांज देखाय ॥ पण कुटिलपणुं एटले खळपणुं माणसमां नही ते भावार्थथी जणाय ॥ तेमज भमरो मधनु पान करे ॥ पण मधुपान एटले मद्यपान बीजु कोई करे नही ॥ अने विष कहेतां जळ ते तो मेघ अंतरमां राखे पण बीजो कोई अंतरमां झेर राखे नही ॥ अने मान एटले माप गुरु लघु अक्षरवडे छंदमां जणाय पण मान एटले अभिमान गर्व रामना राज्यमां बीजे क्यांई देखाय नही ॥

ॐ अथ विकल्पालंकार ॥५४॥ ॐ दोहा ॥ विरोधि बे का-

रज विषे ॥ कहे आम के आम ॥ जाणनार जन जाणजो ॥ विकल्प एनु नाम ॥३५४॥

टीका ॥ मरवुं अने जीववुं ॥ जीतवुं अने हारवुं ॥ अमृत अने झेर ॥ एवी बे वस्तुओनी क्रिया एक साथें थै शके नहि माटे कहिये के कां तो आम करो ने कां तो आम करो ते विकल्पालंकार छे ॥

दोहा ॥ ध्रुव वनमां जातां कहे ॥ सांभळ मारी माय ॥ कां तो हरि दर्शन करुं ॥ कां तो पाडुं काय ॥३५५॥ ۞ अथ समुच्चयालंकार ॥५५॥ ۞ दोहा ॥ करे क्रिया एकज समे ॥ अनेकधा जे ठार ॥ समजे शुभ मति मान जन ॥ समुच्चयालंकार ॥३५६॥ बाळकृष्णनी दृष्टिथी ॥ कृत्या तो पीडाय ॥ त्रासे नासे थरथरे ॥ पडे रडे गभराय ॥३५७॥ समुच्चय बीजो ॥ बहु गुण के बहु जन जहां॥ करवा एकज काम ॥ एक बीजा आगळ धसे ॥ बीजो समुच्चय नाम ॥३५८॥ विनय विवेक मधुर वचन ॥ अदर्प दान दयाळ ॥ एक एकथी अग्र थइ ॥ दें जनने शोभाय ॥३५९॥

टीका ॥ पहेला समुच्चयमां अकर्मक क्रियापदो छे ॥ अने आमां सकर्मक छे एटलो फेर छे ॥

۞ अथ कारक दीपक अलंकार ॥५६॥ ۞ दोहा ॥ कर्ता एक करे क्रिया ॥ एक एक पछी एक ॥ कारक दीपक तेह छे ॥ नहीं एकदम छेक ॥३६०॥ स्वामि सच्चिदानंदजी ॥ हरि विरहे अकळाय ॥ रुवे जुवे क्यारे हसे ॥ नासें आवे जाय ॥३६१॥

टीका ॥ पहेला समुच्चयमां अने आमां फेर एटलो छे के पहेलामां सामटी क्रिया करवानुं ॥ अने आमां एक पछी एक क्रिया करवानुं कह्युं छे ते माटे पहेला समुच्चयनो प्रति द्वंदी आ अलंकार कह्यो छे ॥ आमां क्यारे ए शब्द बधी क्रियाने लगाडवो ॥

۞ अथ समाधिलंकार ॥५७॥ ۞ दोहा ॥ कांइ बिजुं कारण मळे ॥ कारज सुगम कराय ॥ कहे समाधी नामनो ॥ अलंकार

कविराय ॥३६२॥ अति उतकंठा थइ जवा ॥ तीरथ करवा काज ॥ त्यां तीरथ जानारनो ॥ सारो मळ्यो समाज ॥३६३॥

टीका ॥ बीजा प्रकारना समुच्चयमां एक काम करवाने एक समर्थ होय तोपण बीजा पदार्थो ते काम करवाने सहायकारक थाय एटलो भेद छे माटे तेनो प्रति द्वंदी अलंकार कह्यो छे ॥

अथ प्रत्यनीक अलंकार ॥५८॥ दोहा ॥ जो बळवाळा शत्रुना ॥ पक्ष उपर बळ थाय ॥ अलंकार ते जाणजो ॥ प्रत्यनीक कहेवाय ॥३६४॥ हरि मुख जीते चंद्रने ॥ ते माटे शशि एह ॥ हरि आयुध गणि कमळने ॥ करमावे छे तेह ॥३६५॥ पुनः॥ हरिगीत ॥ जे असुर जन निज अंतरे ॥ हरि उपर वेर घणुं धरे ॥ ते हीमत राखी हरघडी ॥ हरिभक्तने हरकत करे ॥३६६॥ दोहा ॥ प्रत्यनीक वळि तेह छे ॥ शत्रु उपर बळ थाय ॥ रवि शशिये राहु दम्यो ॥ राहु करे पीडाय ॥३६७॥ अथ काव्यार्थापत्ति अलंकार ॥५९॥ दोहा ॥ आम कर्युं तो आ करे ॥ तेमां ते शी वात ॥ काव्यार्थापत्ति कहे ॥ भला विचक्षण भ्रात ॥३६८॥ तरिने उतरे पार जे ॥ सहजे सागर सात ॥ तो तेने खाबोचियुं ॥ तरवुं ते शी वात ॥३६९॥ पुनः॥ राक्षस रावण तुल्यना ॥ कामे गाळ्यां गात्र ॥ कृष्णे जीत्यो कामने ॥ तो राक्षस शामात्र ॥३७०॥ पुनः॥ निज बच्चांने नागणी ॥ खाय करीने घात ॥ तो बीजाना प्राण ले ॥ तेमां ते शी वात ॥३७१॥ अथ काव्य लिंगालंकार ॥६०॥ दोहा ॥ दुष्कर अर्थतणी जहां ॥ दृढता करिये भ्रात ॥ काव्य लिंग ते तो भलो ॥ अलंकार साक्षात ॥३७२॥ जीत थशे पांडवतणी ॥ एम कहे कुरु राय ॥ जेने महा पराक्रमी ॥ छे श्रीकृष्ण सहाय॥३७३

टीका ॥ एमां जीत करवी ते दुष्कर छे ॥ माटे पांडवनी जीत थशे ए वाक्यनी दृढता थवा सारु जेने श्रीकृष्ण सहाय छे एवुं वाक्य कह्युं माटे ते ॥ वाक्यार्थ हेतु छे ॥१॥

۞ अथ पदार्थ हेतु भेद बीजो ॥ ۞ दोहा ॥ दृढ करवा जे वाक्यने ॥ हेतु पदार्थज होय ॥ पदार्थ हेतु तेह छे ॥ कहे कवि सौ कोय ॥३७४॥ भक्ति विरोधी मुक्ति तो ॥ मोह रूप कहेवाय ॥ तेह चतुर्धा मुक्तिने ॥ हरि जन नही चहाय ॥३७५॥

टीका ॥ एमां मोक्ष छे ते मोह रुप छे तेने हरि जन चहाता नथी ॥ ते वाक्य दृढ करवा सारु कह्युं के ते मुक्ति भक्ति विरोधकारी छे ॥ ए विशेषण पदे करीने दृढता करी ॥ जेमां कर्ता अने क्रिया होय ते वाक्य कहेवाय ॥ अने केवळ नाम के विशेषण होय ते पद कहेवाय॥ जेमके तुळसी क्यारो ते पद छे तेमज भक्ति विरोधी ते पण पद छे ते पदार्थे करीने दृढता करी॥ माटे पदार्थ हेतु काव्य लिंग छे॥

۞ अथ पदार्थ वाक्यार्थ परस्पर सापेक्ष हेतु ॥ भेद ३ ॥ ۞ दोहा ॥ वाक्यार्थ ने पदार्थ ते ॥ हेतुपणे ज्यां होय ॥ काव्य लिंगनो भेद ते ॥ सज्जन जाणे सोय ॥३७६॥ सर्वेश्वर हरिये धर्यो ॥ मुगट शिरे महा मुल्य ॥ दुष्ट राहुनुं वमन विधु ॥ कोण कहे ते तुल्य ॥३७७॥

टीका ॥ एमां सर्वेश्वर एवा हरिये मस्तके धर्यो एज वाक्यथी मुगटनी अधिकता एटले उत्कृष्टता थई ॥ अने दुष्ट राहुनु वमन चंद्र ॥ एज पदार्थथी चंद्रनी न्यूनता थई ॥ माटे काव्य लिंगनो त्रीजो भेद छे ॥

۞ अथ वाक्यार्थने विषे पदार्थ हेतु॥ भेद ४ ॥ ۞ दोहा॥ दृढ करवा वाक्यार्थने ॥ पदार्थ हेतू होय ॥ हेतूना हेतु पदो ॥ भेद चतुर्थज सोय ॥३७८॥ कवित ॥ बे नर मरण पाम्या प्रधानने राये पुछयुं ॥ कोण नरके नें कोण स्वरगे सिधांव्या छे॥ कहे मंत्रि दयाळु जे दान देतो दयाथकी ॥ दया गुण परदुख देखवाथी आव्यो छे ॥ बिजो महा क्रूर क्रूरताथी घणी घात करी ॥ घातनुं कारण स्वाद लोभ दिल लाव्यो छे ॥ माटे दयाळु ते गयो स्वर्गे क्रूर कुंभिपाके॥ एवो में तो निश्चे मारा मनमां ठराव्यो छे ॥३७९॥

टीका ॥ दयाळु स्वर्गे गयो ते वाक्यार्थ छे तेनी दृढता दान पदार्थथी थै ॥ अने दाननी दृढता दयाथी थै ॥ अने दयानी दृढता परदुखथी थै ॥ क्रुर नरकें ग-

यो तेनी दृढता घात एटले हसाथी थै ॥ अने हसानुं कारण स्वाद तथा लोभ आदिक कह्यां ॥ ए रिते वाक्यार्थनी दृढता पदार्थोवडे परंपरा थै ॥ माटे ते काव्य लिंगनो चोथो भेद छे ॥

बे विरुद्ध कार्यना बे हेतु ॥ भेद ५ ॥ पांचमो ॥ दोहा ॥ विरुद्ध कार्यो बेतणां ॥ हेतु बेय जणाय ॥ काव्य लिंगनो पांचमो ॥ भेद भलो समजाय ॥३८०॥ सापे गळि छछुंदरी ॥ गळे तोय मरी जाय ॥ मुकी दे तो सर्प ते ॥ आंख्ये अंधो थाय ॥३८१॥ बे विरुद्ध कार्यनुं हेतु एक ॥ भेद ६ ॥ दोहा ॥ विरुद्ध बे कारजतणुं ॥ कारण एक जणाय ॥ काव्य लिंगनो तेह तो ॥ छठ्ठो भेद भणाय ॥३८२॥ वखणायो विद्या भणी ॥ गण्यो सुफळ श्रम तेह ॥ पछि कुल काम कराय नही ॥ गण्यो अफळ श्रम एह ॥३८३॥ ꣸ अथ अर्थांतर न्यास अलंकार ॥६१॥ ꣸ दोहा ॥ वर्ण्य वाक्यनुं दृढपणुं ॥ अवर्ण्य वाक्ये थाय ॥ विशेषनो सामान्यथी ॥ अर्थ समर्थ जणाय ॥ ३८४॥ सामान्यनो विशेषथी ॥ अर्थ समर्थ प्रकाश ॥ बेय प्रकारे जाणवो ॥ छे अर्थांतर न्यास ॥३८५॥ ꣸ अथ सामान्यथी विशेषनी दृढता ॥ ꣸ उ०॥ उपजाति ॥ वडोदरामां मुनि मुक्त जैने ॥ सभा जीत्या हिमतवान थैने ॥ संतो बधा होय समर्थ भाई ॥ सभा जीते तेह नही नवाई ॥३८६॥

टीका ॥ एमां मुक्तानंद स्वामी सभा जीत्या ते कहेवानुं छे ॥ अने ते विशेष वाक्य छे ॥ ते वातनी दृढता सामान्य वाक्य जे बधा संतो समर्थ होय तेमां शी नवाई ए वाक्ये करीने करी ते वाक्य तो ते पहेला वाक्यनी दृढता वास्ते छे ॥ मुख्य तेनुंज वर्णन नथी माटे ते अवर्ण्य छे ॥

꣸ अथ सामान्यनी दृढता विशेषथी ॥ ꣸ दोहा ॥ जेवी संगतीमां भळे ॥ ते पण तेवो थाय ॥ गंगामां अपवित्र जळ ॥ गंगा जळ थई जाय ॥३८७॥

टीका ॥ एमां पहेलुं वाक्य सर्वने लागु पडे माटे सामान्य छे तेनी दृढता अ-

पवित्र जळ गंगामां भळे ते विशेष वाक्यथी करी ॥ ए बेय उदाहरणोमां वर्ण्यनी दृढता अवर्ण्यथी करी छे॥ केमके मुक्तानंद स्वामीनी वात करवी हती॥ तेमज जेवी संगतिमां भळे ते वात पण कहेवानी हती ॥ हवे अवर्ण्यनी दृढता वर्ण्य वाक्ये थाय तेनां उदाहरणो कहीये छैये ॥

❁ अथ वर्ण्यवडे अवर्ण्यनुं समर्थन ॥ ❁ दोहा ॥ अहो कहेवत सत्य छे॥ दिनबंधु बळवान॥ भाजि विदुरनी हरि जम्या॥ तजि नृपनुं मिष्टान्न ॥३८८॥

टीका॥ जे बळवान होय ते गरीबना बंधु छे॥ ए अवर्ण्य सामान्य वाक्यनी दृढता विदुरजीनी भाजी हरि जम्या ते विशेष वर्ण्य वाक्ये करीने करी ॥ पण मुख्य वात एक हेवी छे के भगवान राजानुं मिष्टान तजीने विदुरनी भाजी जम्या ॥ हवे एथी उलटुं अवर्ण्य विशेष वाक्यनी वर्ण्य सामान्य वाक्ये दृढता कहीय छैये ॥

❁ अथ वर्ण्यथी अवर्ण्यनुं समर्थन बीजु ॥२॥ ❁ दोहा ॥ विशेषनुं सामान्यथी ॥ वळी समर्थन थाय ॥ वर्ण्य वडेज अवर्ण्यनुं ॥ अर्थांतर कहेवाय ॥३८९॥ सत्संगे सुख सांपडे ॥ ए कहेवत नथि अस्त ॥ सुखी अन्न वस्त्रे सदा ॥ छे सत्संगि समस्त ॥३९०॥

टीका॥ एमां मुख्य कहेवानुं ए छे के सत्संगी सर्वे अन्न वस्त्रथी सुखी छे॥ ते सामान्य वर्ण्य वाक्यवडे अवर्ण्य विशेष वाक्य जे सत्संगथी सुख सांपडे ए वाक्यनी दृढता करी माटे ते अर्थांतर न्यास अलंकार छे ॥

❁ अथ विकस्वर अलंकार ॥६२॥ ❁ दोहा ॥ विशेषनुं सामान्यथी ॥ वळी विशेषथी ज्यांय ॥ अर्थ समर्थन कीजिये॥ कहे विकस्वर त्यांय ॥३९१॥

टीका ॥ विशेषार्थनुं सामान्यथी तथा सामान्यनुं विशेषार्थथी समर्थन उपमानी रित्ये थाय अथवा अर्थांतर न्यासनी रिते थाय ते विकस्वर अलंकार छे ॥

❁ अथ उपमानी रित्ये समर्थन ॥ ❁ दोहा ॥ खळ डरथी प्रल्हादनुं ॥ दिल नहि डग्युं लगार ॥ हरि जननां मन अचळ अति ॥ जेम गिरी गिरनार ॥३९२॥

टीका॥ एमां प्रल्हादनुं मन विशेष छे॥ अने हरि जनोनां मन सामान्य छे॥ तथा गिरनार उपमान छे ॥ ते सामान्यवडे विशेषनुं तथा उपमानवडे सामान्यनुं समर्थन कर्युं ॥

۞ अथ अर्थांतर रीते समर्थन ॥ ۞ दोहा ॥ सीताने हरि रावणे ॥ दुष्टो न करे भूंज ॥ निज सगिने दुर्जोधने ॥ निर्लज कथन कह्युंज ॥३९३॥

टीका ॥ एमां रावण विशेष छे ॥ दुष्ट जनो सामान्य छे ॥ वळी दुर्जोधन विशेष छे ॥ ते सामान्यवडे विशेषनुं समर्थन कर्युं, पछी सामान्यनुं विशेषवडे अर्थांतर न्यासे समर्थन कर्युं ॥ माटे विकस्वरा अलंकार छे ॥

۞ अथ प्रौढोक्ति अलंकार ॥६२॥ ۞ दोहा ॥ नहि कारण उत्कृष्टनुं ॥ ते कारण ते माट॥ कहे कोई तो जाणवो ॥ प्रौढोक्तिनो घाट ॥३९४॥ सागरमांहि मळे घणां ॥ नदियो केरां नीर ॥ तेथी सागरमां घणुं ॥ जो आ जळ गंभीर ॥३९५॥

टीका ॥ घणी नदियो भळे छे तेथी समुद्रनुं जळ गंभीर एटले घणुं उत्कृष्ट छे ॥ एवुं जुठुं कारण कल्प्यु माटे प्रौढोक्ति अलंकार छे ॥

۞ अथ संभावनालंकार ॥६४॥ ۞ दोहा॥ आम होय तो काम ते ॥ सिद्ध सर्वथा थाय ॥ एम कहे संभावना ॥ अलंकार कहेवाय ॥३९६॥ सवैयो ॥ जो जन कोई स्व जीवितमां॥ जन लाख कने निज नाम जपावे ॥ श्रावक पाराशि शैव मुनी ॥ परधर्मि कने निज ध्यान धरावे ॥ आधि अनेक उपाधि तजावि ॥ समाधि करावि स्व धाम बतावे ॥ एटलुं काम करे जन जो कदि ॥ तो जन ते हरिकृष्ण कहावे ॥३९७॥ ۞ अथ मिथ्या ध्पवसिति अलंकार॥ ६५॥ ۞ दोहा ॥ कहिये कांई असंभवित ॥ जुठी पाडवा वात ॥ ते तो मिथ्या ध्पवसिति ॥ वदे विबुद्ध जन वात ॥३९८॥ आर्या ॥ सकळ कळा सह शशधर॥ अधिक उदय ते अमासमां थाय॥ त्यारें अष्टम वारे ॥ वामी जन स्वर्गमां जाय ॥३९९॥

टीका ॥ वाम मार्गी स्वर्गे जाय ए वात जुठी पाडवा सारु कह्युं के अमासने दहाडे सोळ कळानो चंद्र उगे॥ अने आठमो वार होय त्यारे वाम मार्गी स्वर्गे जाय॥ मतलब के एवा जोग होय नही अने वामी स्वर्गे जाय नही॥ माटे मिथ्या ध्यवसिति अलंकार छे॥

❁ अथ ललितालंकार ॥६६॥ ❁ दोहा ॥ वर्ण्य वाक्यना अर्थसम ॥ वाक्य वदे जन कोय ॥ ते ललितालंकार छे ॥ समजे बुध जनसोय ॥४००॥ मंदोदरी कहे छे के ॥ शालिनी छंद ॥ आपो सीता राम लैनेज जाशे ॥ ना आपो तो आज लंका लुटाशे ॥ त्यारे बोल्यो रावणो धैर्य धारो॥ पाणी पूर्वे केम मोजां उतारो॥४०१

टीका॥ एमां रावणने कहेवानुं ए छे के॥ लंका लुटाया पहेली धीरज केम छोडीयो छो ॥ तेने बदले कह्युं के पाणी आव्या पहेलां मोजां केम उतारो छो॥ माटे ते ललितालंकार छे॥

❁ अथ प्रहर्षणालंकार ॥६७॥ ❁ दोहा ॥ वण उद्यम आवी मळे॥ इच्छित फळ जे वार ॥ कवि कोविद तेने कहे॥ प्रहर्षणालंकार ॥४०२॥ उपजाति॥ केदार काशी न गयो कदापि ॥ व्रतो न कीधां न तप्यों तथापि ॥ इच्छा घणी कृष्ण मळयानी जेह ॥ स्वगेह बेठां थइ सिद्ध तेह ॥४०३॥

टीका ॥ एमां कृष्णने मळवानी मारी घणी इच्छा हती ते प्रयत्न कर्या विना घेर बेठां सिद्ध थई॥ माटे प्रहर्षणालंकार छे॥

प्रहर्षण भेद बीजो॥ दोहा॥ निज इच्छाथी अधिक फळ॥ प्राप्त थाय जे ठार॥ प्रहर्षणालंकारनो॥ कहिये बिजो प्रकार॥४०४ उपजाति ॥ स्वर्गे जवानी रुचि उर धारी ॥ संभारिया में मनमां मुरारी॥ त्यां तो थइ अक्षर धाम प्राप्ति॥ सर्वे क्रिया केरि थई समाप्ति ॥४०५॥ प्रहर्षण भेद त्रीजो॥ दोहा॥ साधन फळ प्राप्ततणुं॥ शोधे क्यांई जेह ॥ सत्य मळे साक्षात फळ॥ त्रिजो प्रहर्षण तेह ॥४०६॥ उपजाति॥ हुं खोळतो सदगुरु कोइ एवो॥ मने म-

ळावे हरिनेज तेवो ॥ ते खोळतामांज टळ्या उताप ॥ मळ्या मने श्रीहरि आपआप ॥४०७॥

टीका ॥ श्रीहरिनो मेळाप करावे एवा सदगुरुनो शोध करतां साक्षात श्रीहरि मळ्या ते प्रहर्षणालंकार थयो ॥

अथ विषादनालंकार ॥६८॥ दोहा ॥ इच्छितार्थथी उलटुं ॥ काम थाय जे ठार ॥ कवि कोविद तेने कहे ॥ विषादनालंकार ॥४०८॥ हरिगीत छंद ॥ वाटे विचरतां थाकिने वाहनतणी इच्छा करी ॥ त्यां राजच मुनी अश्विनीने ॥ शुभ वछेरी अवतरी ॥ उपाड एह वछेरि कहिने ॥ दूत लाग्यो ताडवा ॥ चडवानुं वाहन इच्छतां ॥ ए तो मळ्युं उपाडवा ॥४०९॥ अथ उल्लासालंकार ॥ ६९॥ दोहा ॥ एकतणा गुण दोषथी ॥ परने गुण के दोष ॥ एवुं वर्णन होय ते ॥ छे उल्लास अदोष ॥४१०॥

टीका ॥ एकना गुणवडे बीजाने गुण ॥१॥ तथा एकना दोषवडें बीजानें दोष ॥२॥ एकना गुणवड बीजाने दोष ॥३॥ एकना दोषवडे बीजाने गुण ॥४॥ एवा चार प्रकार छे ॥ तेमां वळी एकना गुण दोषवडे बीजाने खरेखरा गुण दोष लागे ते ॥ तथा एकना गुण दोषवडे बीजो तेना गुण दोष मानी ले एवा भेद ८ छे।

अथ एकना गुणवडे बीजाने खरो गुण ॥१॥ दोहा ॥ होय कदी जो एकने ॥ बाग भलो घर पास ॥ तो तेना पाडोशीयो ॥ पामे सदा सुवास ॥४११॥ एकना गुणथी बीजाये मानेलो गुण॥२॥ जमवा आवे संत तो ॥ मुज घर पावन थाय ॥ अंबरीष एवी धरे॥ निज उरमां इच्छाय ॥४१२॥

टीका ॥ एमां संत जमवा आव्याथी गुण थयो होत तो खरो गुण कहेवाय॥ पण आ तो एवी ईच्छा करी के संत जमवा आवे तो मारुं घर पावन थाय ॥ माटे संतना गुणथी पोताने मानी लीधो ते गुण कहेवाय ॥

अथ एकना दोषथी बीजाने खरो दोष ॥३॥ उपजाति ॥ पोला छतां वांस कठोर दीसे ॥ घसाय अन्योन्य वळी अ-

तीशे ॥ एथी उठयो पावक एम कीधुं ॥ वांसो बळ्या ने वन बाळि दीधुं ॥४१३॥ ۞ अथ पोताना दोषथी बीजानो मानी लीधेलो दोष ॥४॥ ۞ दोहा ॥ नकटे दर्पण निरखीयुं ॥ कुरूप दीठुं त्यांय ॥ दोष गणी दर्पणतणो ॥ मुक्युं पृथिवीमांय ॥४१४॥ एकना गुणथी बीजाने खरो दोष ॥५॥ दोहा ॥ सुकजीनी कविता सरस ॥ सुणे सउ धरि कान ॥ पण तेथी कुकवीतणुं ॥ घटे मुलकमां मान ॥ ४१५॥ ۞ अथ एकना गुणथी बीजाने मानेलो दोष ॥६॥ ۞ दोहा ॥ होय महा विद्वान जन ॥ सद्गुण बीजा अथाग ॥ पण धन न मळे तेहने ॥ धननुं एज अभाग्य ॥४१६॥

टीका ॥ एमां विद्वान गुणीजनने धन मळ्युं नहिं ॥ तेथी धनने कांई अवगुण थयेलो जणातो नथी ॥ पण कवियें मानी लीधेलो अवगुण छे ॥

۞ अथ एकना दोषथी बीजाने खरो गुण ॥७॥ ۞ उपजाति ॥ विशेष छे वानर जाति जेह ॥ दोडे कुदे छे बळवान तेह ॥ तथापि बुद्धि नथिरे जणाती ॥ तेथी करे राज्य मनुष्य जाती॥४१७ ۞ अथ एकना दोषथी बीजाये मानी लीधेलो गुण ॥८॥ ۞ दोहा॥ चोरे लुटया वणिकने ॥ ज्यां वन हतुं उजाड ॥ पण नहि लिधा प्राण ते ॥ पुरो मानियो पाड ॥४१८॥ ۞ अथ अवज्ञालंकार ॥७०॥ ۞ दोहा ॥ एकतणा गुण दोषथी ॥ नहि परने गुण दोष ॥ कहे अवज्ञा एहने ॥ सज्जन धरि संतोष ॥४१९॥ गुणवडे गुण नहि ते॥ उपजाति ॥ अहो पधार्या गुणवंत संत ॥ जेमां खरुं ज्ञान दिसे अनंत॥ तेनो थयो जोग जहां स्वदेश ॥ पापी जने ज्ञान लिधुं न लेश ॥४२०॥ दोषवडे दोष नहिं ते॥ इंद्रवज्रा छंद ॥ सत्संगि संसार विषे ठरे छे॥ संसारनां काम बधां करे छे॥ संसारमां दुर्गुण छे विशेष॥ सत्संगिने ते वळगे न लेश॥४२१॥ ۞ अथ अनुज्ञालंकार॥ ७१॥ ۞ दोहा ॥ दोष विषे गुण देखिने ॥ मागे दोष सदाय ॥

नाम अनुज्ञा एहनुं ॥ कहे महा कविराय ॥४२२॥ महिपतिना मनमां सदा ॥ उपजे फिकर अपार ॥ गरीब भक्तो मने सदा ॥ करजो जग कर्त्तार ॥४२३॥ ❀ अथ लेशालंकार ॥७२॥ ❀ दोहा ॥ दोष विषे गुग कल्पना ॥ गुणमां दोष विचार ॥ अलंकार विदजन कहे ॥ ते लेशालंकार ॥४२४॥ ❀ अथ दोषमां गुण कथन ॥ ❀ दोहा ॥ माता गुण सूतना गणे ॥ अंध मूक सूत तोय ॥ मा जाणे जीवो घणुं ॥ वंझा न कहे कोय ॥४२५॥ ❀ अथ गुणमां दोष कथन ॥ ❀ कवित ॥ बोले घणुं तो कहेशे बकवा करे छे बहु ॥ न बोले तो कहे ए अपंडित शुं उच्चरे ॥ क्षमा धरे तो कहेशे ए तो छे अशक्तिमान ॥ शौर्य धरे तो कहेशे दीले न दया धरे ॥ उदारपणुं धरे तो कहेशे उडाउ ए छे ॥ कसर करे तो कहे कंजुस शुं वावरे ॥ गुणीजनतणा गुण विषे गुण गणे नही ॥ द्वेषी जन तो सदैव दोष कल्पना करे ॥४२६॥ ❀ अथ मुद्रालंकार ॥७३॥ ❀ दोहा ॥ प्रस्तुत पदथी सूचवे ॥ सूचववानो अर्थ ॥ ते मुद्रालंकार छे ॥ समजे बुद्धि समर्थ ॥४२७॥ चामर छंद ॥ रोज रोज राखि पांचनेज थीर कीजिये ॥ चामर क्षितीस एज चित्तमां धरीजिये ॥ छंदनूं सुछत्र एज कृष्ण कीर्त्ति गाईये ॥ अन्य राज चिन्हथी अती नहीं फुलाईये ॥४२८॥

टीका ॥ एमां एक राजाने उपदेश कर्यो के प्रति दिवसे पांच इंद्रियोने राखीने थीर करीये॥ अने हे राजा एज खरुं चामर एटले राज चिन्ह छे एम मनमां धारवुं ॥ अने भगवाननी कीरती गाइये एज छंदनुं कहेतां स्वभावनुं सारुं छत्र छे ते वीना बीजां चीन्हथी अतीशे फुलाइए नही ॥ एमां चामर छंदनुं लक्षण॥ उदाहरणने नाम पण कह्युं ॥ ते ए रीते के पहेला पांच अक्षरमां॥ र गण॥ ज गण॥ वळी र गण ज गण अने र गण एवा पांच गण थीर मुकीये तेनुं नाम चामर छंद छे ॥

पुनः॥ दोहा॥ किया खाचरे खुब तो ॥ सेव्या श्री घनशाम॥ जो न समज तो घेर जा ॥ दादो कहेशे नाम ॥४२९॥ ❀ अथ

रत्नावळी अलंकार ॥७४॥ ❀ दोहा ॥ अनुक्रमे के क्रम विना ॥ आवे अवर्ण्य नाम ॥ वर्णन तो तेमां जुदुं ॥ रत्नावळि ते ठाम ॥ ४३०॥ दोहा ॥ सतसंगि हरिचंद छे ॥ मंगळ निज चाहनार ॥ तेणे बुद्ध मुनि गुरु कर्या ॥ उर्द्ध शुक्र शनिचार ॥४३१॥

टीका ॥ हरिचंद नामे वणिक सत्संगि छे ॥ ते पोतानुं मंगळ कहेतां कल्याण इच्छनार छे तेणे बुद्ध कहेतां विद्वान मुनीने गुरु कर्या ते एवा के उर्द्ध शुक्र कहेतां उर्द्ध रेता अने शनिचार कहेतां हळवे हळवे चालनारा पण उन्मत्तनी पठे वेगे चाले नहीं एवा ॥ एमां हरिचंद नामना सत्संगि विषे तथा तेना गुरु विषेनु वर्णन छे ॥ पण तेमां अनूक्रमे सात वारनां नाम आव्यां ॥ जेमके हरि कहेतां रवि ॥ चंद कहेतां चंद्रवार ॥ मंगळ ॥ बुद्ध ॥ गुरु ॥ शुक्र अने शनि ॥ माटे रत्नावळी अलंकार छे ॥ जेम मोतीना हारमां हीरा परोव्या होय तेम देखाय माटे रत्नावळी अलंकार छे ॥ श्लेषालंकारमां अने आमां एटलो फेर छे के श्लेषालंकारमां जुदा जुदा बे अर्थ स्पष्ट होय ॥ अने आमां एक अर्थ बराबर निकळ्यो अने बीजा अर्थवाळां नाम मात्र छे ॥ जेमके आमां हरिभक्त विष बराबर अर्थ छे ॥ पण सातवार पछी आवजो के सातवार सारा छे इत्यादिक कोई वाक्य पूरुं थतुं नथी ॥ माटे रत्नावळी छे ॥ तेमज मुद्रालंकारमां अने रत्नावळीमां पण एज प्रकारनो फेर छे ॥

❀ अथ अनुक्रम रहितनुं उदाहरण ॥ ❀ कवित ॥ पामीने **प्रवरताल** दाडे **धोळेरा**में लीधो ॥ **गढपुरे** पुरो अति **जुनो गढ** जेह छे ॥ **भुज** विशे भेदाया ॥ स**मुळी** वंशवेली गई ॥ अ**धोळ के** पासेर न पाणी पाम्यो तेह छे ॥ पाम्यो नही **जय तलपुरे** पृथवी न पाम्यो ॥ **श्रीपुरी** तो विभीषण अंते पाम्यो एह छे ॥ पाम्यो **वडो दर**बार कनकना कुं**भ रूचे** ॥ **सुर त**रू सम तहां तरु गेह गेह छे ॥४३३॥

टीका ॥ एमां कह्युं के प्रवर एटले उत्तम ताल (जोग) पामीने रामचंद्रजीये धोळे दहाडे ॥ जे जुनो गढ ते पुरेपुरो लीधो ॥ रामे गढ लीधो ते तो लंकागढ छे ॥ एम लक्षणाथी समजाय छे ॥ जेमके बीजो कोई गढ रामे लीधानी वात प्रसीद्ध नथी॥ रावणना वीशे हाथ कपाया अने मूळसहित वंशवेली गई॥ वीश हाथ छेदाया छे ते प्रसिद्ध छे ॥ माटे अध्याहारथी समजाय छे ॥ अने मरती वखते अधोळ कै पासेर पाणी पाम्यो नही॥ मतलब के तिलोदक अंजळी आपनार कोइ रह्युं नही॥ ए जय पाम्यो नही॥ अने तलपुर पृथ्वी पण पाम्यो नही ॥ अंते लक्ष्मी अने नगरी तो विभिषण पाम्यो अने ज्यां घेर घेर सुरतरु एटले कल्पवृक्ष छे ॥ अने मनने गोठे एवा सोनाना कळशवाळो मोटो दरबार पण ते पाम्यो ॥ एमां वरताल धोळेरा आदिक नाम अनुक्रम वगर आव्यां ॥ तोपण रत्नावळी अलंकार छे ॥

❁ अथ तद्गुणालंकार ॥७५॥ ❁ दोहा ॥ तजिने गुण पोतातणो ॥ परनो धर्यो जणाय॥ तो तेने तद्गुण कहे ॥ अलंकार कविराय ॥४३३॥ उ०॥ श्वेत पुष्प सणगार सजी ॥ नखथी शिखा समेत ॥ जो श्री घनशामे धर्यो ॥ पुष्पतणो गुण श्वेत ॥४३४॥

टीका ॥ श्रीजीनुं स्वरूप घनशाम छे तेणे नख शिखा सुधी श्वेत पुष्पना सणगार धर्याथी पुष्पनो श्वेत गुण पोते धारण कर्यो जणाय छे॥ आ ठेकाणे गुण शब्दे करीने रंग जाणवो ॥

❁ अथ पूर्व रूपालंकार ॥७६॥ ❁ दोहा॥ निज गुण तजि पर गुण धरे ॥ फरिने स्वगुण पमाय ॥ अलंकार ए तो भलो ॥ पूर्व रूप कहेवाय ॥४३५॥ उ०॥ स्रगधरा छंद ॥ धोळे वेषे जनो जे रही निज घरमां सेवता श्रीहरीने॥ पुरो वैराग्य पामी घर तजी भगवो वेश लीधो धरीने ॥ एवा संतोनि अर्चा करि अति उजळी धोति ओढाडी अंगे ॥ पूर्वावस्था प्रमाणे सकळ मुनिसभा शोभिते श्वेत रंगे ॥४३६॥

पुनः॥ टीका ॥ राजकोटमां मीस्त्री लक्षमणदासे साधुओने जगन्नाथीनी चादरो ओढाडी ते समे एक कविये कहेलो दोहरो ॥

धोळाने भगवा करे ॥ आचारज महाराज ॥ भगवाने धोळा कर्या ॥ लक्ष्मणदासे आज ॥४३७॥ पूर्वालंकार भेद बीजो॥ दोहा॥

एक वस्तु वहि जाय पण॥ शोभा तेनी तेह॥ पूर्व रूप ते पण कहे॥ जाणभेदु जन जेह ॥४३८॥ श्रीजी थया अदर्श पण॥ अवध्य अने रघुवीर॥ शोभावे सतसंगने॥ धर्म धुरंधर धीर ॥४३९॥ ❁ अथ तद्गुणालंकार ॥७७॥ ❁ दोहा॥ गुण संगतिनो न ग्रहे॥ रहे तेमने तेम ॥ एह अतद्गुण जाणजो॥ उचरे कविवर एम ॥४४०॥ वशी सदा वरतालमां॥ कर्यो संतनो संग॥ तोय न लाग्यो तेहने॥ तेह संगनो रंग ॥४४१॥

टीका ॥ उल्लासा अलंकारमां एकना गुण दोषवडे बीजाने गुण दोष कह्या अने अवज्ञा अलंकारमां एथी विरुद्ध एटले एकना गुण दोष बीजाने लागे नहि॥ तद्गुणा अलंकारमां पोतानो गुण तजीने पारको गुण ग्रहण करे एम कह्युं ते तो उल्लासा अलंकारना जेवुं थयुं॥ अने अतद्गुणा अलंकार ने अवज्ञा अलंकारने मळतापणुं आव्युं ॥ हवे तेमां फेर एटलो छे के उल्लास ने अवज्ञा ए बेमां साधारण गुण जेमके क्रोध ने अक्रोध पवित्र ने अपवित्र इत्यादिक गुण समजवा॥ अने तद्गुण ने अतद्गुणा अलंकारमां ॥ राता॥ पीळा॥ आदिक रंग समजवा ॥ वळी बीजो भेद ए छे के उल्लास ने अवज्ञामां पारको गुण बिजाने प्राप्त अने अप्राप्त थाय ॥ अने तद्गुण अने अतद्गुणमां पारका गुणवडे बीजा रंगाय अने न रंगाय एटलो भेद छे॥ विशेशोक्तिमां कह्युं छे के॥ पुष्कळ कारण छतां कार्य उपजे नहीं॥ अने अतद्गुणा अलंकारमां कह्युं के मळेलानो गुण ग्रहण करे नही ॥ पछी अवज्ञा अलंकारमां कह्युं के एकना गुण के दोषवडे बीजाने गुण के दोष न थाय ए बे अलंकारनु लक्षण विषेशोक्तिमां मळी जाय छे॥ तेमां फेर एटलो छे के उल्लासा अलंकारथी उलटो अवज्ञा अलंकार छे ॥ अने तद्गुणा अलंकारथी उलटो अतद्गुणा अलंकार छे एटलो भेद छे ॥

❁ अथ अनुगुणालंकार ॥७८॥ ❁ दोहा॥ अन्य वस्तुना जोगथी॥ स्वगुणोत्कर्ष जणाय॥ अलंकार अनुगुण भलो॥ तो तेने कहेवाय ॥४४२॥ कुळाभिमानी द्विज हतो॥ वळी थयो विद्वान॥ मान मळ्युं महिपतितणुं॥ अधिक वध्युं अभिमान ॥४४३॥ ❁ अथ मिलितालंकार ॥७९॥ ❁ दोहा॥ जूदुं कांई जणाय नहि॥ सदृश वस्तूमांय॥ ते मिलितालंकार छे॥ तेम समजवुं त्यांय ॥४४४॥

तिलक कर्युं कस्तूरिनुं ॥ श्री घनश्यामे भाळ ॥ जूदुं लेश जणाय नहि ॥ कस्तूरि ने कपाळ ॥४४५॥ पुनः॥ गायतणुं ने थोरनुं ॥ दुध मळेलुं होय ॥ कीयुं गायनुं थोरनुं ॥ कळी शके नहि कोय ॥४४६॥ ۞ अथ सामान्यालंकार ॥८०॥ ۞ दोहा ॥ जूदां बेय जणाय पण ॥ सरखापणुं अपार ॥ दिसे न कांई विशेषता ॥ सामान्यालंकार॥ ४४७॥ इंद्रवज्रा छंद ॥ व्यासादि मोटा मुनिनो समाज ॥ आव्यो प्रभु पास प्रणाम काज ॥ संत स्वरुपे मळि संतमांय॥ बेठा सउ ते न जुदा जणाय ॥४४८॥ ۞ अथ उन्मिलितालंकार ॥८१॥ ۞ दोहा॥ भासे तेनो भेद पण ॥ बेसा दृश्य जणाय ॥ उन्मिलितालंकार ते ॥ समजूने समजाय ॥४४९॥ निशि अंधारी घन चड्यो ॥ श्यामे श्याम जणाय ॥ ज्यारे झबके वीजळी ॥ त्यारे घन वरताय॥ ४५०॥ पुनः॥ उपजाति ॥ चर्च्युं घणुं केशर कृष्ण अंगे ॥ सोनानि माळा मळि तेह संगे ॥ चाले हरि चंचळ माळ थाय ॥ त्यारेज ते माळ जुदी जणाय ॥४५१॥ ۞ अथ विशेषकालंकार ॥८२॥ ۞ दोहा॥ सदर्श जे बे वस्तुओ ॥ विशेषथी परखाय ॥ विषेशकालंकार ते ॥ गुणवंता कवि गाय ॥४५२॥ उ०॥ सृग्धरा छंद ॥ माताये श्रीहरीने बहु मणिमयमां पालणामां निहाळ्या॥ भ्रांति थै तेडि लेतां प्रति मणि प्रभुने ज्यां जुए त्यांज भाळ्या ॥ डाबे गाले निहाळ्यो छबिपर जमणा गालनो बिंदु जाणी॥ तेथी साचा हरीने लई निज उरमां चांपिया स्नेह आणी ॥४५३॥ ۞ अथ उत्तरालंकार ॥८३॥ ۞ दोहा॥ अभिप्राय उर कांई धरी ॥ आपे उत्तर गूढ ॥ एह उत्तरालंकृति ॥ नहि समजे जन मूढ ॥४५४॥

टीका ॥ कांईक उंडा अभिप्राय सहित गुप्त उत्तर आपे ते उत्तरालंकार होय तेना बे भेद छे ॥ पुछया वगर उत्तर आपे ते उन्नेय प्रश्नोत्तर कहेवाय ॥ पुछयाथी उत्तर आपे ते निबद्ध प्रश्नोत्तर कहेवाय॥ केटलाएक ग्रंथोमां एनुं नाम गूढोत्तरालंकार लख्युं छे ॥ पण कुवलयानंदमां तेनुं नाम उत्तरालंकार लख्युं छे ॥ माटे अमे

पण एज नाम राख्युं छे ॥

दोहा ॥ संते पंथ जनारने ॥ कह्युं अहो गुणवान ॥ जळ उन्मत्त नदीतणुं ॥ प्रीतेथी कर पान ॥४५५॥

टीका ॥ एमां पुछया वगर उत्तर आप्यो ते एवा अभिप्रायथी के जो आ माणस वेला नदीना जळनुं पान करे तो तेनी बुद्धि पवित्र थाय ॥ अने प्रगट भगवानने ओळखे ॥ माटे ते उन्नेय प्रश्नोत्तर छे ॥ हवे निबद्ध प्रश्नोत्तर कहीये छईये ॥

उ० ॥ दोहा ॥ पुछयुं पवित्र माणसे ॥ क्यां निवास सुख दान ॥ तें सुणीने संते कह्युं ॥ गढपुर जा गुणवान ॥४५६॥

टीका ॥ एमां गढपुर जा एम कहेवामां उंडो अभिप्राय ए छे के त्यां प्रगट भगवान बिराजे छे ॥ अने मोटां मुक्तनां मंडळ छे माटे त्यां परम सुख छे ॥

पुनः ॥ दोहा ॥ सूक्ष्म जनोई तांतणा ॥ क्यां लगि टकशे एह ॥ खांडुं टकशे क्षत्रि कर ॥ त्यां लगि टकशे तेह ॥४५७॥

टीका ॥ एक क्षत्रि पुत्रे विप्रना पुत्रने पुछयुं के तारी जनोईना झीणा तांतणा छे ते क्यांसुधी टकशे ॥ त्यारे विप्रे जवाब दीधो के ज्यांसुधी क्षत्रिना हाथमां तरवार टकशे त्यांसुधी ॥ आ जनोईना तांतणा टकशे ॥ एमां गूढार्थ ए छे के क्षत्रिनी तरवारवडे अमारी कोटमां जनोई टकी रही छे ॥ माटे क्षत्रिना हाथमांथी तरवार जशे त्यारे अमारी जनोई जशे ॥

अथ चित्रोत्तरना भेद बे ॥ दोहा ॥ प्रश्नतणुं जे वाक्य ते ॥ उत्तर पण ए होय ॥ प्रश्न घणांनो पण वळी ॥ उत्तर एकज सोय ॥४५८॥ चित्रोत्तर कोई कहे ॥ पण उत्तर कहेवाय ॥ जो बे जूदा पाडियें ॥ तो सोथी वाधि जाय ॥४५९॥

टीका ॥ प्रश्ननुं जे वाक्य होय तेज वाक्य उत्तरनुं होय अथवा जूदा जूदा प्रश्ननो उत्तर एकज होय पण जूदा जूदा उत्तर न होय तो ते बय प्रकारना चित्रोत्तर कहे छे ॥ पण ते उत्तरालंकारज छे ॥ जो चित्रोत्तरालंकार जूदो मानीये तो छेवट कह्युं छे के बधा मळीने सो अलंकार कह्या तेमां बाध आवे केमजे एक अलंकार वधी जाय ॥

दोहा ॥ अभक्तने संस्त्रतितणी ॥ क्यांसूधी आकाश ॥ उत्तर-मां संते कह्युं ॥ क्यांसूधो आकाश ॥४६०॥ पुनः॥ कोयलडी टहुका करे ॥ कोठीमां फळ थाय ॥ काकडि सळगावाय छे ॥ कोळ शलडी खाय ॥४६१॥

टीका ॥ कोई प्रतिवादी श्रीजीने प्रश्न पुछवा आव्यो तेने उत्तर आपवा एक सतसंगी बाळकने बेसाड्यो ॥ अने आज्ञा करी के जेम ते बोले तेमज तुं पण बोल-जे ॥ पछी वादीये पुछ्यु के कोयलडि टहका करे मतलब के कोय माणस लडीने ट-हुका करे ॥ त्यारे उत्तर दीधो के कोयलडि एटले कोयल टहुका करे ॥ वळी पछ्युं के कोठीमां फळ थाय॥ मतलब के माटीनी के लोढानी कोठी होय तेमां फळ थाय त्यारे बाळके पण एज वाक्य कह्युं के कोठीमां फळ थाय ॥ मतलब एवी नीकळी के कोठांना झाडमां फळ थाय॥ वळी वादीये पुछ्युं के काकडि सळगावाय छे॥ मतलब के चीभडानी काकडि सळगावाय छे॥ त्यार बाळके कह्य के काकडि सळगावाय छे॥ मतलब के चीथरानी काकडि सळगावाय ॥ वळी पुछ्युं के कोल शेलडी खाय॥ मत-लब क मोटो उंदर अथवा घुश शेलडी खाय ॥ त्यारे बाळके कह्युं के कोळ शेलडी खाय ॥ मतलब के शेलडी पीलवानो कोळ शेलडी खाय ॥

❀ अथ चित्रोत्तरनो बीजो भेद ॥२॥ ❀ दोहा ॥ कणबी घोडो खाटलो ॥ निशाळियो सरदार ॥ शोभे केवा होय ते ॥ उत्तर पाटीदार ॥४६२॥

टीका ॥ एक पडितने पांच विद्यार्थीयोये पांच प्रश्न पुछयां ॥ तेना उत्तर भिन्न भिन्न न आपतां अभिन्न एटले एकज उत्तर आप्यो के पाटीदार तेथी पांचेना उत्तर थया जेम के एके पुछ्युं के कणबी केवो होय ते शोभे॥ त्यार कह्युं के पाटीदार एटले जमीनदार होय ते शोभे॥ घोडो पाटी काढे छे एवो होय ते शोभे ॥ खाटलो पाटीवाळो शोभे ॥ निशाळियो लाकडानी के पथ्थरनी पाटीवाळो शोभे॥ अने स-रदारनी साथे शिपाईनी पाटी होय ते शोभे॥ अनेक प्रश्ननो एकज उत्तर थाय एवा अनेक प्रकार छे जेम के ॥

दोहरो ॥ नाम कहो शोभातणुं ॥ कहो बोजनुं नाम ॥ कौरव पांडव शुं कर्युं ॥ उत्तर भारत काम ॥४६३॥

टीका ॥ एके पुछ्युं के शोभानुं बीजुं नाम कहो ॥ त्यारे बीजे पुछयुं के बोज-नुं बीजुं नाम कहो ॥ त्यारे त्रीजे पुछयुं के कौरव ने पांडवे मळीने शुं कर्युं ॥ ते त्र-

ण्येने उत्तर एकज आप्यो के भारत एटले शोभानुं बीजुं नाम भा ॥ अने बोजनं बीजु नाम भार ॥ अने कौरव पांडव मळीने कर्युं ते भारत इत्यादी ॥ जेम अतिशयोक्तिना घणा भेद छे पण ते बधा मळीने अतिशयोक्ति अलंकार एकज गणाय छे ॥ तेमज गुढोत्तर अने चित्रोत्तर मळीन उत्तरालंकार गणाय छे ॥

❀ अथ सूक्ष्मालंकार ॥८४॥ ❀ दोहा ॥ पर मन इच्छा जाणिने ॥ जणाववा स्व विचार ॥ साभिप्राय क्रिया करे ॥ ते सूक्ष्मालंकार ॥४६४॥

टीका ॥ कोई माणस पारका मननी इच्छा जाणीने तेने पोतानो विचार जणाववा वास्ते मर्मभरेली कांइ क्रिया करे ते सूक्ष्मालंकार कहेवाय ॥

उ०॥ उपजाति ॥ श्रीजी करें ज्ञान भरी सभानें ॥ वर्णी उभा भोजन पुछवाने ॥ ते श्रीजीये आशय जाणी लीधो ॥ लै पुष्प गोटो कर उर्ध्व कीधो ॥४६५॥

टीका ॥ श्रीजीमहाराज सभामां ज्ञान वार्त्ता करता हता त्यां मुकुंदानंद ब्रह्मचारी रसोई तयार करीने श्रीजीने बोलावा आव्या ते वेगळे उभा रह्या ॥ अने कांइ बोली शक्या नही ॥ त्यारे श्रीजीमहाराजे तनो अभिप्राय जाणीने फुलनो गोटो लेने उंचो हाथ करीने समजाव्या जे आटले सूर्य आवशे त्यारे जमवा आवशुं ॥

❀ अथ पिहितालंकार ॥८५॥ ❀ दोहा ॥ गुप्त काम कृत कोईये ॥ ते समजी लेनार ॥ चेष्टा मार्मिक जा करे ॥ ते पिहितालंकार ॥४६६॥

टीका ॥ कोईये कांइ छानुं काम कर्युं होय ते वात जाणी लेनार बीजुं माणस एवी चेष्टा करे के जेथी एम जणाय के त वात में जाणी छे ॥ ते पिहितालकार छे। सूक्ष्मालंकारमां भविष्यकाळे काम थवानी सूचना छे ॥ अन पिहितालंकारमां थयेली वात में जाणी छे एवी सूचना छे ॥ एटलो फेर छे ॥

उ०॥ इंद्रवज्रा छंद ॥ एकादशीनी करवा कथाय ॥ छाना जमी व्यास गयाज ज्यांय ॥ ते जाणनारे मुखवास दीधो ॥ ते जोई व्यासे लव हास कीधो ॥४६७॥

टीका ॥ एक व्यास एकादशीनी कथा करवा छाना जमीने गया ॥ ते वात एक श्रोताये जाणीने व्यासने मुखवास आपवा मांड्यो ॥ ते एटला सारु के तमे जमीने आव्या छो ते वात मे जाणी छे ॥ व्यासे ते जोई लगार हास कर्यो ॥

अथ व्याजोक्ति अलंकार ॥८६॥ दोहा ॥ जे आकार थयातणुं ॥ कारण अन्य कहेज ॥ साची वात छुपाविदे ॥ व्याजोक्ति छे एज ॥४६८॥ उ०॥ सौने प्रभु देखाय पण ॥ नडे नाक नापाक ॥ तेथी नाक कटो कहे ॥ अमे कपाव्युं नाक ॥४६९॥

टीका ॥ एक पुरुषे गुनो करवाथी राजाये तेनुं नाक काप्युं पछे ते परदेशमां जैने लोकोने एवो उत्तर देवा लाग्यो के परमेश्वर सौ माणसनी पासे फरे छे॥ पण तेने जोतां अपवित्र नाक आडु आवे छे ॥ तेथी अमे नाक कपाव्युं एटले हवे परमेश्वर देखाय छे ॥ एवुं सांभळीने कोई बीजाये नाक कपाव्युं तारे तेन कह्युं के तुं कहेजे के हवे मने परमेश्वर देखाय छे एटल आपणि नाक कटानी नात वधशे ॥ नहि तो आपणने नाक कटा कहीने लोको फजेत करशे ॥ छेकापन्हुतीमां बोलेलुं वचन फेरवाय छ अने व्याजोक्तिमां हेतु फेरवाय छे एटलो फेर छे ॥

अथ गूढोक्ति अलंकर ॥८७॥ दोहा ॥ समजावा जन एकने ॥ कहे बिजान वात ॥ श्लेष उक्ति ज्यां उच्चरे ॥ गूढोक्ति साक्षात ॥४७०॥

टीका ॥ काइ एकने संभळाववा सारु बीजा प्रसे श्लेषार्थमां बोलवुं ते गूढोक्ति अलंकार छे ॥ प्रस्तुतांकुरालंकारमां एकनु वर्णन करवामां बीजा प्रस्तुतनुं वर्णन थाय छे ॥ पण तेमां श्लेषार्थ न होय अने आमां श्लेषार्थ जरुर जोईये एटलो फेर छ ॥

उ०॥ दोहा ॥ राम सोनि कहे विप्रनुं ॥ चोरुं नहि को ठाम ॥ सौ सरखा डोसे कह्युं ॥ त रे तो हे राम ॥४७१॥

टीका ॥ एक सोनीनो पुत्र रामो ब्राह्मणनु घराणुं घडतो हतो ॥ तेने ब्राह्मणे करगरीने कह्यु के भाई मारु सोनुं बगाडीश नहि ॥ सारे ते रामे कह्युं के ब्राह्मणनुं भंगीयानुं देवन के फैनुं सोनु अमे चोरीये नहीं ॥ सारे तेनो बाप मांदो खाटलामां सुतो हता तेणे जाण्युं के रखे छोकरो बोले छे एमज करे नहीं तेथी ते छोकराने संभळावा श्रीरामचंद्रजीनी स्तुति करवा लाग्यो ॥ अरे राम तारे तो सउ सरखा.

एमां राम शब्दना २ अर्थ थाय छे एटलो श्लेष छे ॥

❀ अथ विवृतोक्ति अलंकार ॥८८॥ ❀ ल०॥ दोहा ॥ कोई कहे द्वि अर्थमां॥ गुप्त कोइनी पास॥ विवृतोक्ति ते जाणिये॥ जो कवि करे प्रकाश ॥४७२॥

टीका ॥ कोइने छानी वात कहेवी होय ते द्वि अर्थमां कवि कहे ते विवृतोक्ति अलंकार कहेवाय॥ गूढोक्ति अलंकारमां अने आमां एटलो फेर छे के गूढोक्ति अलंकारमां एकने संभळाववा बीजाने कहेवुं॥ जेमके सोनीये पोताना दीकराने संभळाववा सारु श्री रामचंद्रजीनी स्तुती करी ॥ अने आमां जेने समजाववुं होय तेने पंडनेज श्लेषार्थमां कहेवुं ॥

उ०॥ उपजाति॥ लुट्या मुनीने न सुण्युं दिवाने ॥ सांजे सुणाव्युं नर नाथ काने ॥ दीवा नथी आ दरबारमांय॥ अंधारु तो घोर घणुं जणाय ॥४७३॥

टीका ॥ एमां साधुओनां पुस्तक लुटनारे लुटी लीधां॥ ते सते राजाना दिवान पासे ते वात संभळावी॥ पण दिवाने कांइ सांभळ्यु नही॥ त्यारे सांजनी वखते राजा पासे जइने ते चतुर साधुए दिवानजीने दुख लागशे एवी शकाथी द्वि अर्थमां संभळाव्यु के दरबारमां दीवा कर्या नथी तेथी अंधारुं घणु जणाय छे॥ एमांथी बीजो अर्थ एवो थयो के॥ आ दरबारमां दिवानजीथी घणुं अंधारुं जणाय छे एवो दिवान छे ॥

❀ अथ युक्ति अलंकारनुं ल०॥८९॥ ❀ दोहा॥ मर्म ढांकवा कारणे॥ क्रियावडे जे ठाम॥ परने ठगवानुं करे॥ युक्ति तेनुं नाम ॥४७४॥ शार्दुल विक्रीडित॥ पाडयो पावक पात्रमां द्विज जने॥ गांजो पिवा कारणे॥ आव्यो अन्य पवित्र विप्र जन ते॥ बोल्यो रही बारणे॥ नेणे नेण मळयां परस्पर परतणां॥ त्यां लाज लागी खरी॥ लाग्यो विप्र सु वैश्वदेव करवा॥ भाळे विभूती धरी॥ ४७५॥ ❀ अथ लोकोक्ति अलंकारनुं ल०॥९०॥ ❀ दोहा॥ लोक उक्तिनी रीतथी॥ कहे वाक्य जो कोय॥ अलंकार लोकोक्ति ते॥ अणमिलितारथ होय ॥४७६॥

टीका ॥ लोकनी बोलवानी रुढी प्रमाणे वाक्यमां खरेखरो अर्थ मळतो न आवे एवो शब्द भेळवीने बोलवुं ते लोकोक्ति अलंकार छे॥ जेमके ॥

दोहा ॥ निजनां छैयां छोकरां॥ उपर धरीने हेत ॥ परणाव्यां पष्टावियां ॥ शोभा कीर्त्ति समत ॥४७७॥

टीका ॥ तेमां छैयां अने छोकरां एम लोकनी बोलवानी रुढी छे ॥ पण ते बे शब्दमांथी खरेखरा जुदा अर्थ नीकळता नथी॥ तेमज छोकरांने परणावे छे पण पष्टावतुं कोइ नथी॥ ए तो बोलवानी रुढी छे॥ वळी आंखो मींचीने दुख सहन करवुं॥ एम बोलाय छे पण सहन करवामां आंख मींचवानुं कारण नथी॥ ते लडवा सारु दोड्यो आवतो हतो पण झखमारीने उभो रह्यो ॥ एमां झखमारी एटले शुं॥ तेनो अर्थ कंइ मळतो आवतो नथी॥ भावार्थ एवो निकळ के हारीने उभो रह्यो॥ तेमज रोटलो बोटलो थाळी बाळी इत्यादी बोलवानी रुढी छे पण तेमां खरेखरो शब्दार्थ नथी॥

❁ अथ छेकोक्ति अलंकार ॥९१॥ ❁ दोहा ॥ जो कांइ लोकोक्तिमां ॥ अर्थ बीजो पण होय ॥ छे ते तो छेकोक्ति शुभ ॥ कहे कवी सौ कोय ॥४७८॥ शालिनी व्रत॥ डोसो बेठो बोल बोले नठारा॥ तेने भेटया शीख देनार सारा॥ रे तुं भाई आ रीते शुं लवे छे॥ छेले क्यारे पाणी पुग्युं हवे छे ॥४७९॥

टीका ॥ घरडो डोसो बकवा करतो हतो ॥ तेने कोईये कह्युं के हवे छेले क्यारे पाणी पहोच्युं छ तोपण एम शुं बके छे? छेले क्यारे पाणी पहोच्युं छे॥ एम बोलवानी रुढी छे॥ तेमां उडो अर्थ ए छे के हवे मात आडी तो थोडी घडी छे॥

❁ अथ वक्रोक्ती अलंकार॥९२॥ ❁ दोहा॥ कक्रोक्ती वांकु वदे ॥ अन्य कल्पिने अर्थ ॥ के मार्मिक भावे करे ॥ अर्थजतणो अनर्थ ॥४८०॥ उ०॥ शार्दूलविक्रीडित वृत ॥ माता हुं घनशाम तो वन विषे जै सारी वृष्टी करो ॥ माता हुं नीलकंठ तो गिरि चडी उंचे स्वरे उच्चरो॥ माता हुं हरिकृष्ण सिंह कदिए काळो न भाळयो अमे ॥ माता हुं वृष पुत्र धुर्वृषनि तो धारो जइने तमे ॥ ४८१॥ हुं छुं धर्म तनूज पुत्र न हतो ते भीमना भाईने ॥ माता

हुं हरि छुं वसो अमरमां तो चित्तमां चाहिने ॥ हुं छुं भक्ति तनूज भक्ति सुत तो वैराग्यने ज्ञान छे ॥ वक्रोक्ती सुणि स्नेह युक्त हृदये रीझ्या कृपावान छे ॥४८२॥

टीका॥ श्रीजीमहाराज अयोध्यामां रात्रीये कथा सांभळीने मोडा घेर आवता हता ॥ त्यारे माताये कह्युं के मोडा आवशो तो बारणां नै उघाडुं ॥ तोपण मोडा आवीने बारणां खखडाव्यां॥ त्यारे माताये कह्युं के कोण छे ए? त्यारे श्रीजीये कह्युं के हे माताजी हुं घनशाम छुं॥ त्यारे माताये कह्युं के काळा मेघ हों तो वनमां जैने त्यारी वृष्टि करो॥ पछे श्रीजी बोल्या के माता हुं नीलकंठ छुं॥ त्यारे माताजी बोल्यां के नीलकंठ तो मोर कहेवाय माटे जो मयूर हो तो पर्वत उपर चढीने टौका करो ॥ पछे श्रीजी बोल्या के माता हुं हरिकृष्ण ॥ एटले माताये कह्युं के हरिकृष्ण तो काळो सिंह कहेवाय ते काळो सिंह तो अमे क्यांईये भाळ्यो नथी॥ पछे श्रीजी बोल्या के हे माताजी हुं वृष एटले धर्मनो पुत्र छुं॥ ते सांभळीने माताजी कहे तमे वृष पुत्र हो तो वृष कहेतां धर्मनी धुरने धारण करो ॥१॥ बीजा श्लोकनो अर्थ ॥ हे माता हुं धर्मनो पुत्र छुं॥ त्यारे माता बोल्यां के धर्म तो युधिष्टीर भीमनो भाई तेने तो पुत्र नहोतो॥ हे माता हुं हरि छुं त्यारे कह्युं के हरि तो इंद्रनुं नाम छे माटे ते हो तो देवताओना जथामां रहो ॥ त्यारे बोल्या के हुं भक्तिनो पुत्र छुं त्यारे माताये कह्युं के भक्तिना पुत्र तो ज्ञान ने वैराग्य छे॥ माताजीनी एवी वक्रोक्ति सांभळीने दयाळु एवा जे श्रीजी ते प्रसन्न थया॥

पुनः॥ दोहरो ॥ कहे जानकी क्यां हवे ॥ मळशे दशरथ लाल ॥ राता रथ दश शुं करिश॥ एक अपावुं हाल ॥४८३॥

टीका ॥ सिताजीये कह्युं के मने दशरथना लाल क्यां मळशे ॥ त्यारे राक्षसीये कह्युं के लाल एटले राता रथ दशने शुं करिश? एक रथ जोईतो होय तो हमणां अपावुं ॥ एमां अविकृत शब्द श्लेष वक्रोक्ति कही ॥ आखा शब्दनो श्लेषार्थ न होय पण शब्दमां फरफार करीने के शब्दने तोडीने श्लेषार्थ करे ते विकृत श्लेष वक्रोक्ति कहेवाय॥ जेमके एक मुसलमान अमलदारना गाडीवाने कोई पासथी लांच लीधी ते वात ते मुसलमान अमलदार जाणी त्यारे गाडीवानने ठबको दीधो के॥

दोहरो ॥ सबेबान लुच्चेइ हे॥ गाडीबान दरबान ॥ सुणि गाडीवाने कह्युं॥ साचुं ए महेरबान ॥४८४॥

टीका ॥ अमलदारे कह्युं के जेटला बान कहेवाय छे ते बधा लुच्चा छे ॥ त्यारे गाडीवाने विकृत वक्रोक्तिमां कह्युं के आप साचुं कहो छो महेरबान ॥ मतलब के आप पण बान कहवाओ छो ॥ तेपण शब्दश्लेष वक्रोक्ति कहेवाय ॥

❁ अथ अर्थश्लेष वक्रोक्ति ॥ ❁ दोहरो ॥ क्यां छे तारो पशुपति ॥ क्यां भिक्षुक भर्तार ॥ मधुवनमां पशु पाळवा ॥ भिक्षुक बळीने द्वार ॥४८५॥

टीका ॥ लक्ष्मीजिये पारवतीजीने पुछयुं के तारो पशुपति क्यां छे अने तारो भीखारि भरतार क्यां छे ॥ त्यारे पारवतीये वक्रोक्तिमां कह्युं के पशुपति वृंदावनमां पशु पाळवा गयो छे अने भिक्षुक बळीराजाने बारणे मागवा गयो छे ॥ मतलब के तारो पति पण पशुने पाळनार अने भीक्षानो मागनारो छे ॥

❁ अथ काकु वक्रोक्तिनुं उदाहरण ॥ ❁ दोहरो ॥ ते तप खरो गणाय जे ॥ पनघटपर तप थाय ॥ ते सुणिने बिजे कह्युं ॥ ते तप खरो गणाय ॥४८६॥

टीका ॥ एमां गणाय ए शब्द उपर भार मुकीने तप खरो गणाय नही एम कह्युं माटे काकु वक्रोक्ति कहेवाय ॥

❁ अथ स्वभावोक्ति अलंकार ॥९३॥ ❁ दोहरो ॥ जाति स्वभाव वर्णवे ॥ जात्यादिकनो जेह ॥ स्वभावोक्ति शुभ नामनो ॥ अलंकार छे एह ॥४८७॥ ❁ अथ वालंदनो जाति स्वभाव ॥ ❁

टीका ॥ रामचंद्रजी वनमां जातां वस्तिनां लोकोये पादर जतां रोक्या अने कह्युं के दशरथ राजा देह मुकशे ने भरत राज करशेज नहि ॥ माटे अमारो राजा कोण ते ठरावीने पछी जाओ ॥ तारे रामे कह्युं के राजा थवाने कोण ना पाडशे ॥ आ बाळको रमे छे तेमांथी गमे तेने पुछो तोपण राजा थवानी ना पाडशे नहि ॥ पछी तेमांथी एक वालंदनो छोकरो हाथमां आव्यो ॥ तेने पुछयुं के तने राजगादी मळे तो तुं केवी रीते राज कर ॥ त्यारे ते बाळके पोताना जाति स्वभाव प्रमाणे उत्तर आप्यो तेनुं कवित ॥

सोनानो सजायो नें शलाडीए सोनानी करुं ॥ चांदीनो तो चीपीयो कराविने वत्तां करुं ॥ नरेणीयें लटकावुं लुमखा हीरा मो-

तीना ॥ खोटुं नही वचन आ कहुं छुं खरेखरुं ॥ कातर ने कांशको करावुं उंचा कुंदननो ॥ कोथळी तो कीनखाबनी विशेष वावरुं ॥ मळे राजगादी तो आ खादीनो रुमाल खोई ॥ उमदा एकादी शाल पाथरणे पाथरुं ॥४८८॥ एमां वालंदनी जाति स्वभावनी वाणीनुं वर्णन कर्युं ॥ ॐ अथ क्रिया जाति स्वभाव ॥ ॐ उपजाति वृत्त ॥ सुमार्ग नीची नजरे निहाळे ॥ प्रलंब माळा करमांहि झाले ॥ ज़ुओ रुडो संत समुह जाय ॥ रस्ते जतां कीर्तन तेह गाय ॥४८९॥

टीका ॥ एमां संतनी जाती स्वभावनी क्रियानुं वर्णन कर्युं ॥

ॐ अथ भाविकालंकार ॥९४॥ ॐ दोहा ॥ वर्णन भूत भविष्यनुं ॥ करीये साक्षातकार ॥ भाविक नामे ते भणो ॥ अलंकार भणनार ॥४९०॥

टीका ॥ एक ठाकोरे चारणने घोडी आपी ॥ ते घरडी छे एम जाणीने ते चारणे घोडीना मोढा आगळ कान धर्यो अने कह्युं के मने घोडी कांइक कहे छे ॥ त्यारे ठाकोरे पुछयुं के शुं कहे छे॥ त्यारे ते गढवीये कहेलुं भूतार्थ साक्षातकार वर्णन॥

कवित ॥ घोडी कहे छे जे मने घणा घणा जुग थया ॥ कौरवने पांडव तो काले थइ गया छे ॥ रामने रावण लड्या ते मारी नजरें तरे ॥ थंभमांथी नरसिंह हमणाज थया छे ॥ सुरने असुर मळी सागर वलोव्यो तेना ॥ घमकारा घणा मारे काने वागी रह्या छे ॥ लाव्य गाडुं जोडावी तो आवुं तारी साथे आज ॥ पाळजे मने जो तारा दीलमाही दया छे ॥४९१॥

टीका॥ एमां घोडीनुं घरडापणुं जणाव्युं ॥ अथ भाव्यर्थ साक्षात्कार वर्णन॥

कवित ॥ मंदोदरी रावणने कहे सुणो मारा नाथ ॥ लीधी लंका रामे एवुं नजरे नीहाळुं छुं ॥ पुत्र परिवारसोत आवियुं तमारुं मोत ॥ भडभड मोटी चिता सळगती भाळुं छुं ॥ चांदलो ने चोटलो न चुडो ते तो जाणे हुं तो ॥ विधवा थइने मारा तनमांथी

टाळुं छुं ॥ विभीषणे लीधुं राज तमारुं थयुं अकाज ॥ एवुं एवुं देखी आंसु आंखमांथी टाळुं छुं ॥४९२॥ ۞ अथ उदात्तालंकार ॥९५॥ ۞ दोहा ॥ अदभुत काम थयुं हतुं ॥ एथी आ प्रख्यात ॥ स्थळ वखाणिये एम कही ॥ एनुं नाम उदात्त ॥४९३॥ उ०॥ हिंडोळे हिंच्या हरी ॥ मुगट धर्यो तो शीर ॥ कर मुरली लीधी हती ॥ त आ तळाव तीर ॥४९४॥ पुनः॥ अहो हरि भक्तो जुओ ॥ भलुं भेटिया गाम ॥ कृत्याने कृत्यारिये ॥ हणी हती आ ठाम ॥४९५॥ ۞ अथ उदात्तालंकार बीजो॥ ۞ दोलतनो दई दाखलो॥ वर्णन करिये वात॥ अद्‌भुतता एमां दिसे ॥ ए पण अन्य उदात्त॥४९६॥ उ०॥ कोहिनूर (हिरो) धन कोटिनो ॥ गयो विलायत देश ॥ ते पंजाब नृपाळनी ॥ लक्ष्मी केरो लेश ॥४९७॥ ۞ अथ अत्युक्ति अलंकार ॥९६॥ ۞ दोहरा॥ उदारता शुरवीरता॥ इत्यादिक गुण जेह ॥ अद्‌भुत असत्य वर्णवे ॥ अत्युक्ति छे एह ॥४९८॥ चक्रवर्त्ति कविने कर्या ॥ रिझ्यो भोज भूपाळ ॥ ते राजाना त्रासथी ॥ डरे सात पाताळ ॥४९९॥ पुनः॥ एकत्रीशो सवैयो ॥ जोबन वरताळो जोरावर धंध मचावे पाडे धाड ॥ तेनां पगलांना पडघाथी कलकत्ते देवाय कमाड ॥ जेपुरमां पण जेना नामे बहु रोतुं छानुं रहे बाळ॥ जेना भयथी राते जागे काशीनो कंपे भूपाळ ॥५००॥

टीका॥ अद्‌भुत न जुठुं सूरवीरपणुं के उदारता आदिक वर्णवे ते अत्युक्ति अलंकार छे॥ अने हवेली ने चंद्र मंडळनो योग थायज नहीं तेने योग थयो कल्पे त संबंधातिशयोक्ति॥ अने जेने योग थवानो शंभव होय जेम के कल्पवृक्षनो आदर करवाना संभव छे तेम छतां अमे कल्पवृक्षने आदरता नथी एवो अयोग कल्पे ते असंबंधातिशयोक्ति अलंकार छे॥

۞ अथ निरुक्ति अलंकार ॥९७॥ ۞ दोहा ॥ अर्थ कल्पिए नामनो ॥ जोगे जूदी रीत ॥ अलंकार ए तो कहो ॥ निरुक्ति नाम खचीत ॥५०१॥ अदालते जडजे कर्यो ॥ अणसमजे अन्या-

य ॥ जोतां ते तो जडज (मूर्खज) छे ॥ एवुं नाम जणाय ॥५०२॥ ۞ अथ प्रतिषेधा अलंकार ॥९८॥ ۞ दोहा ॥ होय प्रसिद्ध निषेध पण ॥ वदिये वळी निषेध ॥ प्रतिषेधालंकार ते ॥ समजे पुरुष सुमेध ॥५०३॥ कह्युं क्षत्रिये विप्रने ॥ सजवो आ संग्राम ॥ ते तो लइने लाडवा ॥ जमवानुं नथी काम ॥५०४॥ ۞ अथ विधि अलंकार ॥९९॥ ۞ दोहा ॥ सिद्ध थवानो विधि कहे ॥ होय वस्तु तो सिद्ध ॥ अलंकार विधि नाम छे ॥ समजे पुरुष प्रसिद्ध ॥५०५॥ रणमां माथां रडवडे ॥ अस्त्रशस्त्र अथडाय ॥ क्षत्री सुत ए अवसरे ॥ खरो क्षत्रि देखाय ॥५०६॥ ۞ अथ हेतु अलंकार ॥१००॥ ۞ दोहरो ॥ कारण कारज साथ ज्यां ॥ वर्णन करे विचारि ॥ होय हेतु ए नामनो ॥ अलंकार सुखकारि ॥५०७॥ प्रभु पधार्या लोजमां ॥ संत वसे जे ठाम ॥ उद्धव मत उतकृष्टता ॥ करवानें ते काम ॥५०८

टीका ॥ एमां कारण अने कार्यनुं साथे वर्णन कर्युं ॥ वळी जणावनार अने जाणवुं ते बेनुं ज्यां साथे वर्णन होय ते पण पेला प्रकारनोज हेतु अलंकार छे जेम के ॥

दोहा ॥ देवालयना घंटनो ॥ घोष थयो परभात ॥ समय सु ईश्वर स्मरणनो ॥ थवानी जाणी वात ॥५०९॥ ۞ अथ हेतु अलंकार बीजो ॥ ۞ कारण ने कारज मळी ॥ एकज कहिये एह ॥ हेतु अलंकृतिनो कहो ॥ भेद बीजो तो तेह ॥५१०॥ कामादिकने कळि विषे ॥ जीत्या जनो अनेक ॥ ते तो श्रीहरीनी कृपा ॥ एज समजवी एक ॥५११॥ हरिगीत छंद ॥ प्राचीन अर्वाचीन जनना मत तपाशि अखंडिते ॥ शत आ अलंकारो लख्या छे अप्य दीक्षित पंडिते ॥ अनुसार एनो लै विहारीलाल आचार्ये सही ॥ कृत अलंकारा दर्श ग्रंथ ॥ न शब्द निर्लेज रज्ज कहि ॥५१२॥

इति अर्थालंकार शत निरूपण नाम प्रथम प्रकरणं ॥

❀ अथ रसवदादि प्रकरणं ॥ ❀ अथ नव रसनां नाम ॥ ❀ रस शृंगार ने हास्यरस ॥ करुणा रौद्रसु वीर ॥ भय बिभत्स अद्भुत अने ॥ शांतसु नव रस धीर ॥१॥

टीका ॥ रति एटले प्रीतिमांथी शृंगार रस उपजे छे ॥ कह्युं छे के ॥ विषयतो विरतिश्च हरौ रतिः॥ मतलब के परमेश्वरमां प्रीति होय तेनुं नाम पण रति कहेवाय ॥ पण आपणा देशना कवियो स्त्री पुरुषनी प्रीतिनेज शृंगाररस कहेवा लाग्या तेथी रसनी नवनी संख्याना नियम रह्यो नही ॥ संख्यावाचक शब्दोमां वसु ८ आठ संगीत स्वर ७ सात काव्यना रस नव कह्या छे ॥ अने वाछल्यरस आदी नवा रसो कल्पवा पड्या अने अतिशे निर्लज वर्णनने रस कहेवा लाग्या ॥ सत्पुरुषो एवा निर्लज वर्णनने शृंगाररस कहेता नथी पण अनितीनुं वर्णन कहे छे ॥ सुंदरदासे ॥ ब्रह्मानंद स्वामिये तथा मुक्तानंद स्वामि आदिके कह्युं छे के ॥

दोहरो ॥ रसिक प्रिया रस मंजरी ॥ इन आदिक रस ग्रंथ ॥ मुक्त कहे मतिमंदकुं ॥ सबहि नरकके पंथ ॥२॥ पिता पास पण वांचतां ॥ कन्या लाजे कोय ॥ जरुर कविता जांणवी ॥ अनितिनी ए होय ॥३॥ राम सिताना स्नेहनुं ॥ वर्णन रस शृंगार ॥ फाग फटाणां रस नही ॥ वळि रस नहि व्यभिचार ॥४॥

टीका ॥ निर्लज ग्रंथो घणा थवाथी आपणा देशमां स्त्रियोने भणाववानो चाल बंध करवो पड्यो होय एम जणाय छे ॥ माटे विद्वानोये एवा ग्रंथोनो नाश करीने नव रसमय नीतिना ग्रंथो प्रवर्त्ताववा जोईये ॥

❀ अथ स्थायी भाव ॥ ❀ दोहरा ॥ जे गुणमां ते रस रहे ॥ स्थायि भाव छे नाम ॥ ते नव गुण तमने कहुं ॥ सुणजो सुजन तमाम ॥५॥ रति हांसी ने शोक रिस ॥ हीमत भय निंदाय ॥ अद्भुतता शांति वळि ॥ स्थायी भाव गणाय ॥६॥ ❀ अथ आलंबन उद्दीपना दिवि भाव कथनं ॥ ❀

टीका ॥ परमेश्वरनी मूर्त्तिने जोईने भक्तने रति उपजे ॥ कामीने स्त्री पुरुषने जोईने रति उपजे ॥ लोभीने धन जोईने ने कोईने पुत्रादिकने जोईने अतिशे रति कहेतां प्रीति उपजे ते शृंगाररसनुं आलंबन कहेवाय ॥ कोईनुं भोळापणुं अथवा भू-

लथी अवळी क्रिया करतां जोईने मनमां हसवुं आवे ते हास्यरस अने जेने जोयाथी हसवुं आवे ते हास्यरसनुं आलंबन कहेवाय ॥ कोइनुं दुख के दीलगीरी जोईने के सांभळीने दया उपजे ते करुणारस ॥ कोईना क्रोधनुं वर्णन ते रौद्ररस ॥ ने कोईना उत्साहनुं एटले हीमतनुं वर्णन ते वीररस ॥ भयनुं वर्णन के देखाव जाइने मनमां जे रस उपजे ते भयानकरस अने कोईनी निंदा के कशोभानुं वर्णन के देखावथी मनमां जे रस उपजे ते बिभत्स ॥ आश्चर्य उपजे ते अद्भुतरस ॥ एटले आश्चर्य ते अद्भुतरसनो स्थायी भाव ॥ अने जेनाथी ते उपजे ते रसनुं आलंबन जाणवुं ॥ जे जोईने के सांभळीने मनमां शांति उपजे अने काम क्रोध लोभ मोह आदिक दुर्गुण रहे नहीं ते शांतरस कहेवाय ॥ रस एटले स्वादनुं नाम छे ॥ माटे सज्जनने जेमां स्वाद उपजे नहीं ते रस कहेवाय नही ॥ पण श्वान सूकर जेवा पामर जीवना रस जुदा छे ॥ जेम के खरने साकरमां स्वाद लागे नहि ॥ जेना जोगथी रसनी पुष्टि थाय तेने रसनु ॥ उद्दीपन ॥ कहेवाय जेम के उत्सव थतो होय ने प्रभुना महीमानां कीर्तन गवातां होय त्यारे प्रभुमां प्रीतिनी पुष्टि थाय छे ॥ अने वेश्याओ गाति होय ने मधुपान थतुं होय त्यारे विषयी जीवने विषयरसनी पुष्टि थाय ॥ मेघ गर्जना ॥ वसंत रुतुने बाग इत्यादिक जोइने भक्तने प्रभु सांभरे छे अने विषयीने स्त्री पुरुष सांभरे छे अथवा रसनी पुष्टि थाय छे माटे ते शृंगाररसनुं उद्दीपन छे ॥ हास्यरसमां बधा हशी रह्या पछी बीजो हसवा लागे तो बधाने फरीथी वधारे हसवुं आवे ते हास्यरसनुं उद्दीपन छे ॥ रणसंग्राम वीररसनुं आलंबन छे ॥ लडाइना वाजां वाग सिंधुडा राग गवाय ते वीररसनुं उद्दीपन छे ए रीते नवे रसनुं जाणी लेवुं ॥ ए आलंबन ने उद्दीपननुं नामज विभाव छे केमके मनमां रहेला रति आदीक स्थाइ भाव तेने विशेषे प्रगट करे माटे तेनुं नाम विभाव अने ते पछी आंख्यमां आंसु आवे रोमांच थाय इत्यादिक चीन्ह जणाय ते अनुभाव गणाय ते अनुभावने पण सहायता एटले पुष्टी करे ते व्यभिचारीभाव अथवा सहकारीभाव कह्या छे तेनी संख्या तेत्रीश छे ॥

❀ अथ व्यभिचारीभावनां तेत्रीश नाम ॥ ❀ निर्वेद ॥१॥ एटले वैराग्य ॥ शृंगाररस के वीररस आदिक कोई रस उपजे त्यारे बीजी सर्वे वस्तुमांथी राग उठी जाय एवी चेष्टा जणाय ते ॥ ग्लानि ॥२॥ एटले वहालाना वियोगथी मोढुं झांखु पडी जाय ते ॥ शंका ॥३॥ एटले मनमां शंका थाय के मारा शा दोषथी प्रभु मने मळता नहो होय ते ॥ असुया ॥४॥ एटले कोई उपर इरषा उपजे के मने मळवा आवतां प्रभुने बीजा भक्ते रोक्या हशे पछी तेना गुणमां

दोष कल्पे ते ॥ मद ॥५॥ एटले शृंगाररसथी के वीररसथी मनमां मद चडे ते ॥ श्रम ॥६॥ एटले प्रभुने मळवा महेनत करे ते ॥ आलस्य ॥७॥ एटले वियोगथी कांई काम सुजे नहि अने आळस थाय ते ॥ दीनता ॥८॥ एटले घणा प्रेमथी प्रभु आगळ दीनता देखाडे ते ॥ चिंता ॥९॥ एटले वियोगथी चिंता थाय ते ॥ मोह ॥१०॥ एटले मनमां मुझवण्य थाय॥ योग्य अयोग्यनुं भान रहे नहीं ते ॥ स्मृति ॥११॥ एटले वारे वारे प्रभु सांभरे ते ॥ धृति ॥१२॥ एटले प्रभुमां विश्वासथी धीरज राखे ते ॥ लज्जा ॥१३॥ एटले वियोगथी रोवाइ जवाय पण लोकनी लाज आवे ते॥ चपळता ॥१४॥ एटले प्रेमने वश थइने आमथी आम दोडे ते ॥ वीररसमां चपळता होय ॥ करुणारसमां पण तेनुं दुख मटाडवा दोडे ने क्रोधमां पण दोडाय इत्यादि केटलाएक भाव घणा रसमां प्रवर्ते छे ते माटे आ व्यभिचारी कह्या छे॥ हर्ष ॥१५॥ एटले आनंद उपजे ते॥ आवेग ॥१६॥ एटले उतावळे कांई करवानो वेग मनमां आवे ते ॥ जडता ॥१७॥ एटले रसमां लीन थई जवाय ते ॥ गर्व ॥१८॥ एटले मनमां अभिमान आवे ते ॥ विषाद ॥१९॥ एटले मनमां खेद उपजे ते ॥ उत्साह ॥२०॥ एटले मनमां हीमत आवे ते ॥ निंद्रा ॥ २१॥ एटले उंघ आवे ते ॥ अपस्मार (मूर्छा) ॥२२॥ एटले शरीरनुं भान विसरी जाय ते ॥ स्वप्न ॥२३॥ एटले स्वप्नमां प्रभु देखाय ते ॥ विबोध ॥२४॥ एटले एकदम जागी उठवुं ते ॥ अमर्ष ॥२५॥ एटले क्रोध चडाववो ते ॥ अवहीत्थ ॥२६॥ एटले लाजे करीने शरीरनो विकार ढांकवो ते ॥ उग्रता ॥२७॥ एटले बिवरामणुं रुप करवुं ते ॥ मती ॥२८॥ एटले बुद्धी ॥ व्याधी ॥२९॥ एटले वियोगथी मंदवाड आववो ते ॥ उन्माद ॥३०॥ एटले गांडा जेवुं थई जवुं ते ॥ त्रास ॥३१॥ भय पांमवुं ते ॥ वीतर्क ॥३२॥ एटले मनमां

उपरा उपरी विचार थवा ते ॥ मरण ॥३३॥ एटले वियोगना दुःखथकी अथवा अतिशे अदभुत रस उपजवाथी मरणावस्था जेवुं थाय ते ॥ ꕥ अथ रसवदलंकार ॥१॥ ꕥ दोहा ॥ स्थायि भाव ज्यां अंगि छे ॥ अंग होय रस एक ॥ ते रसवदलंकार छे ॥ जाणे जन सविवेक ॥७॥

टीका ॥ रति हांसी आदिक जे नव स्थायि भाव छे तेमांनो कोई भाव ते अंगी होय अने नव रसमांनो कोई रस अंग होय ते रसवदलंकार छे ।। रती स्थाई भावनो शृंगाररस सजाती छे अने शोक स्थाई भावनो करुणारस सजाती छे॥ ए रीत बे सजाती मळ्या होय अथवा विजाती मळ्या होय तोपण रसवदलंकार थाय जेमके ॥

दोहरो॥ अति रति करिनें हुं नमुं॥ भक्ती धर्म कुमार॥ रोम कुपमां जेहना ॥ छे ब्रह्मांड अपार ॥८॥

टीका॥ एमां भक्तनी अती प्रीति ते स्थाई भाव छे ने अंगी छे ॥ अने रोम कुपमां अनेक ब्रह्मांड कह्यां ते अद्भुतरस छे ते अंग छे॥ ए रीते रति स्थाई भावने अद्भुतरस मळ्यो ते रसवद अलंकार कहेवाय ॥ एमां रति अने अद्भुतरस ए बे विजाति छे ॥

ꕥ अथ रसवद अलंकारनो बीजो भेद ॥ ꕥ दोहरो ॥ वर्णन करीयें एक रस॥ थाय बीजानुं अंग॥ ते रसवद अलंकार छे॥ मळेल रस बे संग ॥९॥ उ०॥ उपजाति वृत्त ॥ श्री रामचंद्रे अति रीस आणी ॥ उत्साहथी एकज तीर ताणी ॥ छेद्यां रिपूनां दश सर्व शीर॥ एवा रघुनंदन शूरवीर ॥१०॥

टीका ॥ एमां रघुनाथजीनी शुरवीरतानुं वर्णन कर्युं ते वीररस छे॥ पण प्रथम कह्युं के रीस चडावीने तीर ताण्यो ते रौद्ररस छे पण ते अवांतर छे माटे ते वीररसनुं अंग छे अने वीररस अंगी छे॥ अंग एटले शरीर ने अंगी एटले जीव माटे जे रस प्रधान होय ते जीव कहेवाय॥ ए रीते रौद्र ने वीर ए बे रस मळवाथी रसवद् अलंकार थयो ॥

❁ अथ प्रेयोऽलंकार ॥२॥ ❁ दोहा ॥ भाव कह्या तेत्रीश छे ॥ एके अंग थनार ॥ अंगी एके रस जहां ॥ ते प्रेयोलंकार॥११॥ उ०॥ उपजाति ॥ अहो थया अंतर्धान श्रीजी ॥ काया अमारी ह-जि तो रहीजी ॥ धिक जीववुं आ जगमां अमारुं ॥ जरुर आ भाग्य ठर्युं नठारुं ॥१२॥

टीका ॥ एमां श्रीजी उपरनो अति प्रेम अने तेना वियोग रुपी विप्रलंभ शृंगाररसनुं वर्णन कर्युं ते अंगी छे ॥ अने हवे जीववुं धिक छे एम कह्युं ते निर्वेद एटले वैराग्य ते तेनुं अंग छे माटे प्रेयोलंकार छे ॥

प्रेयोलंकार बीजो ॥ दोहरो ॥ भाव अंग ज्यां होय वळि ॥ भाव अंगि पण होय ॥ ते प्रेयोलंकार छे ॥ कहे एम कवि कोय ॥ १३॥ उपजाति वृत॥ भीती सउने यम दूतकेरी ॥ विचारणा एवी थइ घणेरी ॥ त्यां काळने त्रास पमाडनार ॥ श्रीजी स्मर्या बंध पडया विचार ॥१४॥

टीका ॥ एमां यमदूतनो भय कह्यो ते अंग छे ॥ अने काळने भय पमाडनार श्रीजी तेना भयनुं वर्णन कर्युं ते भय अंगी छे॥ ए रीते अंग ने अंगी बेय भय भाव छे माटे ते प्रेयोलंकार छे ॥

❁ अथ रसाभास तथा भावाभासनो दोहरो ॥ ❁ रस के भाव अयोग्य ज्यां ॥ रसाभास ते नाम ॥ तेमज भावाभास ते ॥ समजे सज्जन आम ॥१५॥

टीका ॥ रस अथवा भाव पुरो न होय अथवा अयोग्य होय ते रसाभास ने भावाभास कहेवाय ॥

❁ अथ उर्ज्वस्वित अलंकार ॥३॥ ❁ दोहरो ॥ अंगी भाव गणाय ज्यां ॥ रसभास ते अंग ॥ उर्जस्वित एने कहे ॥ मळे एम बे संग ॥१६॥ उ० उपजाति वृत॥ शियाजिरावे रति भाव आणी ॥ पूज्या प्रभुने निज इष्ट जाणी ॥ द्वेषी दिवाने (विठुबा दिवान) पण हाथ जोडी ॥ प्रीती जणावी वचनेथि थोडी ॥१७॥

टीका ॥ एमां शियाजीरावनो प्रेम रुप रति भाव पुरो छे तेनुं अंग दिवान-जीनो रति रुप रसाभास छे माटे उर्जस्वित अलंकार छे ॥

॥ अथ उर्जस्वित अलंकार बीजो ॥ ॥ दोहरो ॥ भाव अंगी ज्यां होय ते ॥ भावाभासज अंग ॥ ए पण उर्जस्वित छे ॥ अलंकार उत्तंग ॥१८॥ उ० इंद्रवज्रा छंद ॥ जो तुं निहाळी प्रिय मित्र एह ॥ वैरागिनी टोळि जणाय जेह ॥ वैराग्य तेने तन वेष मात्र ॥ टोपी शिरे छे कर तुंबि पात्र ॥१९॥

टीका ॥ एमां कह्युं के हे प्रिय मित्र एमां प्रीतिनो भाव छे ते अंगी छे ॥ ते मित्रने वैरागिनी टोळी देखाडी तेने शरीरे वेष मात्र वैराग्य हतो माटे ते भावाभास छे माटे ते उर्जस्वित अलंकार छे ॥

उर्जस्वित अलंकार त्रीजो ॥ दोहरो ॥ दीसे भावाभास ते ॥ रसकेरुं ज्यां अंग ॥ उर्जस्वित त्रीजो कहे ॥ कवि जन धरी उमंग ॥ २०॥ उ० उपजाति ॥ पिबेक बोल्यो बटु कोण मात्र ॥ तपस्वि छे निर्बळ छेक गात्र ॥ जीतीश हुं हीमत आणी एने ॥ जवा नही देउ जरुर तेने ॥२१॥

टीका ॥ एमां प्रभुनि अयोग्य निंदा करी माटे ते निंदा भावाभास छे ॥ अने पोतानी बहादुरी बतावी ते वीररस छे ते अंगी छे माटे त्रीजा प्रकारनो उर्जस्वित अलंकार छे ॥

उर्जस्वित अलंकार चोथो ॥ दोहरो ॥ रस पूरो ते अंगि छे ॥ रसाभास ते अंग ॥ चोथो उर्जस्वित ते ॥ अलंकार अणभंग ॥२२॥ उ० उपजाति ॥ गरीबने पीड पमाडवामां ॥ छे शूरवीरो बहु आ समामां ॥ संग्राम देखी डरी नासि जाय ॥ शस्त्रो धरी फोगट ते फुलाय ॥२३॥

टीका ॥ एमां बिभत्स रसनुं वर्णन छे ते अंगी छे अने गरीबने पीडा करवामां शूरवीर कह्या ते वीररसाभास छे ते अंग छे माटे ते चोथा प्रकारनो उर्जस्वित अलंकार थयो ॥

❁ अथ समाहीत अलंकार ॥४॥ ❁ दोहरो ॥ करे भावनी शांतता ॥ भाव शांति कहेवाय ॥ ते छे रसनुं अंग ज्यां ॥ समाहीत त्यां थाय ॥२४॥ उ० उपजाति ॥ दुष्टे प्रभु उपर धूळ नांखी ॥ चडी खरी रीस दबावि राखी ॥ क्षमा रुपी खड्ग स्वीकारि लिधुं ॥ उत्साह आंणी जग वश्य कीधुं ॥२५॥

टीका॥ एमां रिस चडी पण दबावी राखी ते भावशांति छे ते अंग छे॥ जगत वश्य कीधुं ते वीररस छे ते अंगी छे माटे समाहित अलंकार छे ॥

❁ अथ भावोदय अलंकार ॥५॥ ❁ दोहरो ॥ एके रसनुं अंग ज्यां ॥ भाव उदय थानार ॥ भावोदय ए नामनो ॥ अलंकार निरधार ॥२६॥ उ० उपजाति वृत ॥ उत्साहथी अर्जुन जुद्ध काज ॥ जतो हतो ज्यां लई सर्व साज ॥ भाळ्या सगा पूज्य भला अभेद ॥ खरेखरो त्यां उपज्योज खेद ॥२७॥

टीका॥ एमां वीररस अंगी छे अने खेद रुपी भाव उपज्यो ते अंग छे॥ माटे भावोदय अलंकार छे ॥

❁ अथ भावसंधि अलंकार ॥६॥ ❁ दोहरो ॥ भावतणुं के रसतणुं ॥ अंग वीरुध बे भाव ॥ भावसंधि तेने कहे ॥ अलंकार कविराव ॥२८॥

टीका ॥ एक एकथी विरुध एवा बे भावनो जोग ते अंग होय ॥ अने रस के भाव अंगी होय ते भावसंधि अलंकार ॥

उ० उपजाति ॥ श्री रामजीमां निज मात केरो ॥ जेवें समे प्रेम वध्यो घणेरो ॥ वने जवुं एम पिता उचारे ॥ उत्साह शंका थइ तेहवारे ॥२९॥

टीका ॥ एमां कौशल्या मातानो प्रेम रुपी भाव ते अंगी छे अने पीतानुं वचन पाळवा वनमां जवानो उत्साह तथा माने रोतां मुकीने केम जवाय ए शंका ते बे भाव एकबीजाथी विरुद्ध थया ते अंग छे॥ माटे भावसंधि अलंकार छे॥ उत्सा-

इथी वनमां जाय तोपण वियोगे प्रेम वधे माटे प्रेमने पुष्टि कर्त्ता छे ॥ अने शंकाथी जो घेर रहे तोपण माताजीनी प्रीतिने ते शंका पुष्टि करे एवी छे ॥ ए रीते जवुं अने शंका ए बे भाव परस्पर विरोधी छे ॥ पण ते बेय माताना प्रेमने पुष्टि करे एवा छे ॥

꧁ अथ भाव शबळता अलंकार ॥७॥ ꧁ दोहरो ॥ कोइक रसनुं अंग ज्यां ॥ घणा भाव कहेवाय ॥ अलंकारनुं नाम ते ॥ भाव शबळता (घणापणु) थाय ॥३०॥ उ० शिखरिणी वृत ॥ वियोगे श्रीजीने दुखभर मुनी सच्चिद कहे ॥ मळे क्यारे स्वामी जन सुखद छेटे नही रहे ॥ दिवानो थै डोलुं घडीक करु निश्चे विविधिना ॥ दिठा स्वप्ने जाग्यो अधिक भय लाग्यो प्रभु विना ॥३१॥

टीका ॥ श्रीजीना वियोगथी सच्चिदानंद स्वामीने दुख थयुं ते विप्रलंभ शृंगाररस छे ते अंगी छे॥ अने ते बोल्या के मने स्वामी क्यारे मळशे ते चिंता भाव॥१॥ वळि कह्युं के ते प्रभु स्वजनने सुखदाता छे ते छेटे रहेशे नहिं ते धृति भाव ॥२॥ दिवानो थै डोलुं ए उन्माद भाव ॥३॥ घडिकमां नाना प्रकारना संशयनो निश्चय एटले निर्णय करुं एम कह्युं ते मति भाव ॥४॥ दिठा स्वप्ने ते स्वप्न भाव ॥५॥ जाग्यो ते प्रबोध भाव ॥६॥ प्रभु विना सुनु देखीने भय उपज्यो ते भय भाव ॥७॥ ए रीते सात भाव उपज्या ते शृंगाररसनुं अंग छे ॥ माटे भाव शबळता अलंकार थयो ॥

꧁ अथ प्रत्यक्ष प्रमाणालंकार ॥८॥ ꧁ दोहरो ॥ शब्द स्पर्श सुरुप रस ॥ गंध वडे जे जाण ॥ वस्तू परखे मन वडे ॥ ते प्रत्यक्ष प्रमाण ॥३२॥

टीका ॥ कोयल छे के कागडो छे ते तेना शब्द उपरथी में जाण्युं ॥ पथ्थर छे के कपास छे ते स्पर्श उपरथी जाण्युं ॥ कसुंबानो रंग छे के केसुडानो छे ते में नजरे जोईने जाण्युं॥ मरचांनी गोळी छे के द्राक्ष छे ते तेना स्वाद उपरथी जाण्युं॥ कस्तुरी छे के बकरांनी लींडी छे ते तेनी गंध उपरथी जाण्युं ॥ मारा जीवमां असारे शांति छे के विक्षेप छे ते मारा मनना अनुभव उपरथी में जाण्युं ॥ ए रीते प्रत्यक्ष प्रमाणना छ प्रकार छे ॥ आठे प्रकारना प्रमाणालंकारमां कोईना संशय उपरथी प्रमाण बतावे ते संशय पूर्वक प्रमाणालंकार छे ॥ ने कोईये संशय कर्या विना पोतानी मेळे तेनुं प्रमाण करे ते साधारण प्रमाणालंकार आठे प्रकारना छे ॥

उ० कवित ॥ एक कहे श्रीजीतणी वाणी अदभुत जाणी ॥ तेथी में तो जांण्या जे आ श्रीहरि साक्षात छे॥ बीजो कहे प्रभुपद स्पर्श में अपूर्व जाण्यो ॥ त्रीजो कहे रुप जोई जाण्या जग तात छे ॥ चोथो कहे चाखी में प्रसादी तेथी थयुं ज्ञान ॥ पांचमो कहे प्रसादी पुष्प सुघ्यां भ्रात छे ॥ छठो कहे अंतरमां अनुभव एवो थयो ॥ तेथी जाण्या प्रभु पुरुषोत्तम प्रख्यात छे ॥३३॥

टीका ॥ श्रीजी महाराजनी वाणी सांभळतां पशु पक्षी पण स्थिर थइ जाय तेथी में जाण्युं के आ साक्षात श्रीहरि छे ॥ बीजो कहे श्रीजीना स्पर्शथी समाधिमां गयेला पण जागृत थाय॥ त्रीजो कहे अदभुत रुप जोईने प्राणीनी नाडीयो ने प्राण खेंचाई जाय।। चोथो कहे तेनी प्रसादि खावाथी अंतःकरण शुद्ध थाय अने आत्मा परमात्मानुं ज्ञान थाय ॥ पांचमो कहे प्रसादिनां पुष्प सुंघवाथी मनमांथी काम क्रोधादिक जता रहे ॥ छठो कहे अनुभवमां तपास करतां मारुं मन कबुल करे छे के आ पुरुषोत्तम भगवान छे।। ए रीते छ प्रकारना प्रत्यक्ष प्रमाणथी केटलाएके श्रीजी महाराजनो निश्चय कर्यो॥ कहेला अर्थने द्रढ करवो ते काव्यलिंग अलंकार कहेवाय पण आठ प्रकारनां प्रमाणमांथी कोई प्रकारना प्रमाणे करीने अर्थ द्रढ करवो ते प्रमाणालंकार कह्या छे ॥

❁ अथ अनुमान प्रमाणालंकार ॥९॥ ❁ दोहरो ॥ धुम होय त्यां वन्हि छे ॥ एवुं जे अनुमान ॥ ते अनुमान प्रमाण छे ॥ समजे सौ विदवान ॥३४॥ उ० दोहरो ॥ चिन्हो सोळे चरणमां ॥ छातीमां श्री वत्स ॥ ए अनुमाने जाणिया ॥ श्री पुरुषोत्तम स्वच्छ (निरंजन) ॥३५॥ ❁ अथ उपमान प्रमाणालंकार ॥१०॥ ❁ दोहरो॥ ज्यां उपमानवडे वळी॥ सिद्ध कह्युं ते थाय॥ छे उपमान प्रमाण ते ॥ अलंकार कहेवाय ॥३६॥

टीका ॥ मळते मळती उपमा बतावीने वात सिद्ध करिये ते उपमान प्रमाणालंकार कहेवाय जेमके ॥

दोहरो ॥ गुलाब्र राता पद्मसम ॥ जाणे जनो सुजाण ॥ जाण्युं पुष्प गुलाब्रनुं ॥ ए उपमान प्रमाण ॥३७॥ उपजाति छंद ॥

जितेंद्रि छे श्रीनर भ्रात जेवा ॥ जितेंद्रि सर्वेश्वर होय एवा ॥ जितें-द्रिय एवा हरिने निहाळ्या ॥ जाण्या प्रभू संशय सर्व टाळ्या ॥३८॥ ۞ अथ शब्द प्रमाणालंकार ॥११॥ ۞ दोहरो ॥ कथन सिद्ध करवा जहां ॥ दइये वचन प्रमाण ॥ ते तो शब्द प्रमाण छे ॥ अलंकार नर जाण ॥३९॥

टीका ॥ श्रुति स्मृति पुराण तथा लोकनी कहेवत लोकाचार तथा आत्मतुष्टी आदिकनुं प्रमाण आपिये ते शब्द प्रमाणालंकार छे ॥

۞ अथ श्रुति प्रमाण ॥ ۞ दोहरो ॥ पुरुष सुक्तमां प्रभुतणुं ॥ पुरुष कह्युं छे नाम ॥ तेथी पुरुषाकारमे ॥ ईश्वर जाण्या आम ॥४०॥ ۞ अथ स्मृति प्रमाण ॥ ۞ खरो अहिंसा धर्म छे ॥ हिंसा महा अधर्म ॥ एम मनुस्मृतिमां कह्युं ॥ मनमां समजो मर्म ॥ ४१॥ ۞ अथ पुराण वचन प्रमाण ॥ ۞ जुग जुगमां जनमे हरी ॥ धर्म थापवा काज ॥ पुराणमां प्रख्यात छे ॥ जे बोल्या व्रज राज ॥४२॥ ۞ अथ लोकाचार प्रमाण ॥ ۞ मोटा जनने मानतो ॥ दैये स्नेह सहीत ॥ उत्तम जननी एह छे ॥ परंपरानी रीत ॥ ४२॥ ۞ अथ आत्मतुष्टि प्रमाण ॥ ۞ उभय पक्ष ज्यां उच्चरे ॥ श्रुति के स्मृति पुराण ॥ तेमां आत्माने गमे ॥ करवुं तेह प्रमाण ॥ ४४॥ वर्ष पांचमे सातमे ॥ करवो विद्याभ्यास ॥ पक्ष जेह मनमां गमे ॥ तेज प्रमाण प्रकांश ॥४५॥

टीका ॥ शास्त्रमां कह्युं छे के पुत्रने पांचमे अथवा सातमे वर्षे विद्यानो आरंभ कराववो ॥ ते बे पक्षमांथी पोताने गमे ते पक्ष प्रमाण करवो तेनुं नाम आत्मतुष्टि प्रमाण छे ॥२॥

۞ अथ अर्थापत्ति प्रमाणालंकार ॥१२॥ ۞ दोहरो ॥ प्रकारांतरे अर्थनी ॥ सीद्धि जहां कराय ॥ ते अर्थापत्ति कहे ॥ प्रमाण पंडित राय ॥४६॥ उ०॥ दोहरो ॥ जे जननुं निज जीवतां ॥ जपे

लाख जण नाम ॥ इश्वर विना बने नहीं ॥ एवुं अदभुत काम ॥ ४७॥ पुनः॥ उ०॥ ब्राह्मणने धरवां घटे ॥ कंठी तिलक निदान ॥ विष्णु रुप कहिं विप्रने ॥ दे छे जन सौ दान ॥४८॥

टीका ॥ ब्राह्मणने कांई दान आपतां एम कहे छे के विष्णु रुपाय ब्राह्मणाय संप्रददे ॥ एना अर्थ उपरथी जणाय छे के ब्राह्मणे तो विष्णु रुप जे तुळसीनी कंठी ने उर्द्ध पुंड्र तिलकादि धारण करवां पण त्रिपुंड्र के विभूति करी होय अने रुद्राक्षनी माळा धारी होय त्यारे विष्णु रुप केम कहेवाय ॥ ए अर्थापत्ति प्रमाणालंकार छे ॥

पुनः॥ उदा०॥ दोहरा ॥ दुधा धारी आ जुओ ॥ करे नही आहार ॥ अर्थथकी समजाय छे ॥ जीवे दुध आधार ॥४८॥ ❁ अथ अनुपलब्धि प्रमाणालंकार ॥१३॥ ❁ दोहरो ॥ नथि दीठुं नथि सांभळ्युं ॥ नथिनुं एज प्रमाण ॥ अनुपलब्धि ए तो कहे ॥ अलंकार नर जाण ॥५०॥ उ०॥ उत्तम नरपतिनो अयश ॥ नथिज एवुं धार ॥ प्रमाण तेनुं एह छे ॥ सुण्यो न कोई ठार ॥५१॥ पुनः॥ कौस्तुभ मणि बीजो नथि ॥ तेनूं कहुं प्रमाण ॥ बिजो नथी दीठो सुण्यो ॥ ए उपरथी जाण ॥५२॥ पुनः॥ कवित ॥ एक सतसंगीतणो तात जात्रा जवा चाल्यो ॥ जुदा जुदा मित्रे जुदी वस्तुओ मगावि छे ॥ अष्ट अंग नारी तजे पैसानो प्रसंग तजे ॥ एवा संत लावो वाणी सुपुत्रे सुणावि छे ॥ ताते सर्व तिर्थ जोयां त्यां जई तपास कर्यो॥ पुत्र पासे बधी वात आवीने बतावी छे॥ स्वामिनारायणतणा संप्रदाय विना क्यांई ॥ एवी संत तणी रीत नजरे न आवि छे ॥५३॥ ❁ अथ संभव प्रमाणालंकार ॥१४॥ ❁ दोहरो ॥ संभव कहिये तेहनो ॥ जेवुं वर्णन थाय ॥ संभव प्रमाण नामनो ॥ अलंकार कवि गाय ॥५४॥ उ०॥ महा पापि जननो कदी ॥ थाय खरो उद्धार ॥ सु जनो ते पण संभवे ॥ हरि इच्छा आधार ॥५५॥ पुनः॥ अजामेळ जे उद्धर्यो ॥ एमां नथि नवाई ॥ श्री

हरि केरा स्मरणथी ॥ उद्धरेज हे भाई ॥५६॥ ۞ अथ ऐतिह्य प्रमाणालंकार ॥१५॥ ۞ दोहरो ॥ कोईतणुं नहि वचन पण ॥ अफवा वचन प्रमाण॥ ए ऐतिह्य प्रमाण छे॥ जाणे जनो सुजाण॥५७

टीका ॥ जे वचननो कहेनार कोई नकी नही पण लोकमां चालती वात होय ते अफवा कहेवाय तेनुं प्रमाण आपवुं ते ऐतिह्य प्रमाणालंकार ॥

उ०॥ दोहरो ॥ इंडां मींडां जेहने ॥ कान तेंहने थान ॥ ते कहेवत छे लोकनी ॥ प्रमाण एह निदान ॥५८॥

टीका ॥ जे प्राणीने कानने ठेकांणे मींडां छे तेओ इंडां मुके छे ॥ अने जेनें कान छे तेने धवराववाने थान एटले स्तन छे ॥ ए वचव कोई शास्त्रनुं नथी के कोइ प्रसिद्ध माणसनुं नथी माटे ऐतिह्य प्रमाणालंकार छे ॥

इति रसवदादी पंचदशालंकार निरूपण द्वितीयं प्रकरणं ॥२॥

۞ अथ संसृष्टि अलंकार ॥१॥ ۞ दोहरो ॥ शब्दालंकृति बे मळे ॥ बे अर्थालंकार ॥ शब्द अर्थ ए बे मळे ॥ ते छे त्रणे प्रकार ॥१॥ मोती परवाळां मळे ॥ पण ते जुदां जणाय ॥ एक एकनी गरज नहि ॥ संसृष्टि कहेवाय ॥२॥ संसृष्टि प्रकार पहेलो ॥१॥ दोहरो ॥ ऊ०॥ धर्मानुज प्रिय धर्म सुत ॥ धर्म प्रवर्त्तन कार ॥ प्रभु परमेश्वर पूज्य पति ॥ वंदु विश्वाधार ॥३॥

टीका ॥ एमां धर्म जे युधिष्टिर तेना नाना भाइ अर्जुन तेने प्रिय तेज प्रभु धर्मदेवना पुत्र अने एकांतिक धर्म प्रवरतावनारा ए रीते धर्म शब्दना त्रण अर्थ जुदा थाय माटे यमकालंकार छे ॥ अने प्र प पू प ॥ एवा अक्षरो आव्या ते अनुप्रासालंकार छे तेनां लक्षण आगळ कहेवाशे ॥ ए शब्दालंकार मळ्या ते एवा के एमां यमकालंकार न होत अने एकला अनुप्रास होत के अनुप्रास न होत ने यमकालंकार होत तोपण खामी जणात नही ॥ अने ते बंने अलंकार स्पष्ट देखाय छे कोई कोईनां अंग के अंगी नथी माटे संसृष्टि अलंकार छे ॥

۞ अथ बीजा प्रकारनो संसृष्टि ॥ ۞ दोहरो ॥ नीरद जे-

वी शाम छबि ॥ ते हरिनी संभार ॥ चरण कमळ रुपी भला ॥ कर मन अलीआ गार ॥४॥

टीका ॥ एमां मेघ जेवी शाम छबि श्री हरिनी कही ते उपमालंकार छे अने चरणने कमळ रुपी कह्या तथा मन रुपी भमराने कह्युं ते रुपकालंकार छे ते बे अलंकार स्पष्ट देखाय छे पण एकबीजाने संबंध नथी माटे संसृष्टि अलंकार छे ॥

❀ अथ त्रीजा प्रकारनो संसृष्टि ॥ ❀ वैतालि ॥ भगवा भगवानने भज ॥ अघकारि अघकामने तज ॥ भजने भव रोग तो टळे ॥ सुख प्राप्ति अति जीवने मळे ॥५॥

टीका ॥ एमां अरधा श्लोकमां यमक छे अने अरधामां रुपकालंकार छे ते बे जुदा जुदा जणाय छे माटे संसृष्टि अलंकार छे ॥

❀ अथ संकरालंकार ॥ ❀ दोहरो ॥ जेम पाणिने पय मळे ॥ जूदां नही जणाय ॥ तेम अलंकृति बे मळे ॥ संकर ते कहेवाय ॥६॥ ❀ अथ अंगांगी भाव संकर ॥२॥ ❀ दोहरो ॥ एक अलंकृति अंग ज्यां ॥ बीजी अंगी होय ॥ ते अंगांगी भाव छे ॥ कहे कवि सौ कोय ॥७॥ उपकारक ते अंग छे ॥ अंगी तें उपकार्य ॥ अंगी ते तो मुख्य छे ॥ अंग गौण छे धार्य ॥८॥ उदा०॥ दोहरो ॥ जुओ मेघनो नाद शुभ ॥ शंखथकी उपजाय ॥ रूपक अतिशय उक्ति ते ॥ विभावना पण थाय ॥९॥

टीका ॥ एमां श्रीजीना कंठ रुपी शंखमांथी मेघना जेवो नाद थाय छे ॥ ए रीते रुपकातिशयोक्ति अलंकार छे ते विभावनानुं अंग छे ॥ अने मेघना जेवो नाद थवानुं कारण शंख नथी माटे चोथा प्रकारनी विभावना थई ते अंगी छे ॥ ए रीते बे अलंकार मळ्या ते अंगांगी भाव संकरालंकार थयो ॥ एमां रुपकातिशयोक्तिमांथी विभावना थाय छे माटे ते अंग अंगी भाव छे ॥

❀ अथ समप्राधान्य संकरालंकार ॥३॥ ❀ दोहरो ॥ बेय अलंकृति मुख्य ज्यां ॥ उपकारक अन्योन्य ॥ ते तो समप्राधान्य छे ॥ जाणे ते जन धन्य ॥१०॥ उदा०॥ दोहरो ॥ इंद्रप्रस्थ अवलो-

किने ॥ उपजे अति अचंभ ॥ जेमां पारसमणितणा ॥ थळ थळ दीसे थंभ ॥११॥

टीका ॥ एमां जो कविनो भाव साचेसाची एवी रिद्धि वखाणवानो होय तो उदातालंकार छे ॥ अने जेम आ हवेलीना अग्र चंद्र मंडळने अडे छे ॥ एवी रीते पारसमणिना थंभ होय नही पण अतिशयोक्तिथी वखाणवानो कविनो भाव होय तो संबंधातिशयोक्ति छे ॥ ए रीते बे अलंकार मुख्य जणाय छे माटे समप्राधान्य संकर छे ॥ ज्यारे संबंधातिशयोक्ति करिये त्यारेज स्मृद्धिनुं अतिशे वखाण थाय अने तेमांथी उदात्ताऽलंकार थाय ॥ अने ज्यारे स्मृद्धिनुं अतिशे वखाण करिये त्यारे उदात्तालंकार थाय अने तेमांथी संबंधातिशयोक्ति थाय माटे ते बे अलंकार एक एकना अंगी छे ने बे सम प्राधान्य छे ॥ लाख रुपैये शेर तो पाशेरनुं केटलुं मुल ॥ ए प्रश्नमां पुछनारनो अभिप्राय अमुल्य हीरा कणी विषे होय तो तेनो बीजो अर्थ थाय ॥ अने बोरडीनी के पीपरनी लाख विषे पुछवानो अभिप्राय होय तो जुदो अर्थ थाय तेमज चोथी विभावना ने रुपकातिशयोक्ति ए बेमां तथा उदात्तालंकार ने संबंधातिशयोक्तिमां कविना मननो जेवो भाव तेवो अलंकार थाय ॥

❁ अथ संदेह संकरालंकार ॥४॥ ❁ दोहरो ॥ जुदा ते समजाय नही ॥ एह हशे के एह ॥ एवो ज्यां संशय रहे ॥ ते संकर संदेह ॥१२॥ वृष्टि सदा विज्ञाननी ॥ करे प्रभु घनशाम ॥ परिकर के परिकरांकुर ॥ कियो हशे आ ठाम ॥१३॥

टीका ॥ एमां वर्षाद जेवा शाम प्रभु कहेतां परमेश्वर एवो अर्थ करिये तो परिकरालंकार थाय ॥ अने प्रभु कहेतां समर्थ एवा अने घनशाम छे नाम जेनुं एवो अर्थ करिये तो परिकरांकुराऽलंकार थाय माटे एमां परिकरालंकार हशे के परिकरांकुरालंकार हशे एवो संशय रहे छे माटे संदेह संकर अलंकार छे ॥

❁ अथ एक वाचकानु प्रवेश संकरालंकार ॥५॥ ❁ दोहरो ॥ दीसे वाचक एकमां ॥ बेनो अनुप्रवेश ॥ अलंकार ए नामनो ॥ जांणो एह प्रदेश ॥१४॥

टीका ॥ वाचक शब्द एकमां बे अलंकारनो अनुप्रवेश थाय कहेतां एक अलंकारनो प्रवेश थया पछी बीजा अलंकारनो प्रवेश थाय ते एक वाचकानु प्रवेश संकर अलंकार कहेवाय ॥

उदा०॥ दोहरो॥ शेलुं वादाळियुं धर्युं ॥ जो श्रीहरिये शाम॥ एमां छे पूर्णोपमा ॥ वाचकलुप्ता नाम ॥१५॥

टीका॥ जेम काकतालियं ए पद बे उपमानुवाचक छे तेमज वादाळियुं ए पद पूर्णोपमानुं अने लुप्तोपमानुं वाचक छे तेमां ते बे अलंकार दूध पाणीनी रीते मळीने रह्या छे॥ तेमज शब्दालंकार अने कोई अर्थालंकार एकज पदमां दूध पाणीनी पेठे मळीने रह्या होय ते पण एक वाचकानुं प्रवेश अलंकार छे॥ अने जो शब्दालंकार ने अर्थालंकार जुदा जुदा पदमां होय तो संसृष्टि अलंकार थाय॥ एक वाचकानुं प्रवेशनुं उदाहरण॥

वैताळीय छंद ॥ खडमां खडमांकडी यथा ॥ पद थापी पद उर्द्ध ले तथा ॥ तन दीव्य अदीव्यने भजे ॥ तन आ तो जन ते पछी तजे ॥१६॥

टीका॥ एमां शब्द अलंकार अने उपमा अलंकार दूध पाणीनी पेठे मळी गयेला छे माटे एक वाचकानुं प्रवेश संकरालंकार छे॥

❀ अथ विचित्र संकरालंकार ॥६॥ ❀ दोहरो ॥ संसृष्टि (आशाधरे संसृष्टि पण एमां गण्यो छे पण कुवळयानंदमां गण्यो नथी) आदिक जहां॥ संकर मळे घणाय ॥ विचित्र संकर नामनो॥ अलंकार ते थाय॥१७॥ उदा०॥ दुमिलिया छंद॥ घनशाम चढ्यो घनशाम प्रभु॥ करुणामय द्रष्टिनि वृष्टि करो ॥१॥

टीका॥ एमां यमकालंकार तथा अनुप्रासालंकार छे माटे संसृष्टि संकर छे॥ अने घनशाम ते साभिप्राय विशेषण धारीये तो परीकरालंकार छे अने साभिप्राय नाम धारीये तो परिकरांकुरालंकार छे ते बे संदेह संकर छे॥

शुभ शंख थकी घन नाद करो ॥ वळि वादाळियुं पट अंग धरो ॥ २ ॥

टीका॥ शंख रुपी कंठथी घननो नाद करो कह्युं तेमां रुपकातिशयोक्ति तथा चोथी विभावना ते अंगांगी भाव संकर छे॥ वादळियुं पट धरो कह्युं तेमां वाचक धर्मलुप्ता तथा केवळ धर्मलुप्ता अलंकार एक वाचकानु प्रवेश संकर छे॥

मणि माणिक लूण उतारु महा प्रभु ॥ प्रेम धरी मनमांहि खरो ॥ ३ ॥

टीका ॥ मणि माणक तमारा उपर लूण उतारीने नांखी दउं एमां उदातालंकार तथा संबंधातिशयोक्ति सम प्राधान्य संकर छे ॥

क्षण मात्र छबि निरख्याथि ॥ अलौकिक आनंद थाय उरे उभरो ॥ ४ ॥ १८ ॥

टीका ॥ क्षण मात्र छबि जोवाथी चौद लोकमां न मळे एवो अक्षर धामना जेवो आनंदनो उभरो छातिमां थाय छे॥ एमां त्रीजा प्रकारनो विशेषालंकार तथा नेत्रे जोवाथी छातिमां उभरो थाय ते असंगति अलंकार छे॥ वळी दुधपाक आदीकना उभरानी स्फुरति थाय छे माटे समासोक्ति अलंकार छे ए अंगांगी भाव संकर छे॥ ए रीते आ छंदमां घणा संकर अलंकार छे ॥ माटे विचित्र संकरालंकार आशाधर भटे कह्यो छे ॥ एमां नवां उदाहरण मुकवाथी टीका लांबी करवी पडे अने समजाववुं कठण पडे माटे आवी गयेलां उदाहरणो मुक्यां छे ॥

इति श्री विहारीलालाचार्य विरचिते अलंकारादर्शे संकरालंकार निरूपण नाम तृतियं प्रकर्ण ॥ ३ ॥

अथ अनुप्रासादि शब्दालंकार निरूपणं ॥ दोहरो॥ हीरा मोतीना भर्या॥ छे अर्थालंकार॥ समजो तेम सुवर्णना॥ (सोनाना अथवा सारा अक्षरोना) छे शब्दालंकार ॥१॥ छे चित्रालंकार तो ॥ रुपानार मणिक ॥ जो ते रचतां आवडे ॥ अलंकार छे ठीक ॥२॥ उत्तम मध्यम ने त्रिजो ॥ कनिष्ट कहिये तेह ॥ थाय घणो क्लिष्टार्थ तो ॥ अधम जाणवो एह ॥३॥ शब्द युक्तिमां चित्रमां ॥ रसमय कविता होय ॥ नहि क्लिष्टारथ होय तो ॥ सर्वोपरि शुभ सोय ॥४॥ अथ शब्दाऽलंकार विषे दोहरो ॥ ग्रंथोमांहि अनेकधा॥ छे शब्दालंकार ॥ मुख्य मुख्य तेमां कहुं॥ छे जे छये प्रकार ॥५॥ अथ स्फुटानुंप्रास॥१॥ लक्षण दोहरो ॥

पद आवृत्ति चरणमां ॥ आदि मध्य के अंत ॥ व्यंजन के स्वर भेदथी ॥ स्फुटावृत्ति कहि संत ॥६॥ उ०॥ शाम नाम सुख धामना ॥ चरण करण भव पार ॥ भज मन तज तुं विषय सुख ॥ अधिक वार धरि प्यार ॥७॥

टीका ॥ एने गुजराती भाषामां फड कहे छे ॥ छेकानुप्रास आदिक काव्य प्रकाशकमां कह्या प्रमाणे राख्या छे ॥

❀ अथ छेकानुंप्रास ॥२॥ ❀ लक्षण दोहरो ॥ व्यंजन एक अनेकनी ॥ एकावृत्ति थाय ॥ ते छेकानुंप्रास छे ॥ गुणवंता कवि गाय ॥८॥

टीका ॥ जेमां व्यंजननी आवृत्ति होय ते एवी रीते के एक वारे जे व्यंजननी आवृत्ति थई गई एज व्यंजननी बीजी वार आवृत्ति न थाय पण तेथी जुदा व्यंजननी थाय ॥ एवी रीते जुदां जुदां घणां व्यंजननी आवृत्ति थाय ॥ तेमां स्वर पण जुदा जुदा होय ते छेकानुंप्रास छे ॥

उदा०॥ हरि हीरो बांधे बुधो ॥ शुभ शोभे तन तेनुं ॥ ते छेकानुंप्रास छे ॥ अधिक मुल्य छे एनुं ॥९॥

टीका ॥ एमां हकार बेवार आव्यो पण तेमां स्वर जुदा छे ॥ तेमज रकारमां पण जुदा स्वर छे ते बे व्यंजननी एकवार आवृत्ति थई तेनी बीजी आवृत्ति थाय नही ॥ ए रीते एक पछी एक बीजां व्यंजनोनी आवृत्ति थाय ते छेकानुंप्रास छे॥ भाषामां तेने अक्षर सगाई कहे छे ॥

❀ अथ वृत्यनुंप्रास ३ नुं लक्षण ॥ ❀ दोहरो ॥ एक व्यंजनावृत्ति के ॥ बहुकेरी बहु वार ॥ वृत्यनुंप्रास कहे कवि ॥ एना भेद अपार ॥१०॥ उ०॥ धाराधर प्रेर्यो खरो ॥ ठर्यो सुरेश्वर क्रूर ॥ हरिवर कर धार्यो गिरी ॥ डर्यो पुरंदर उर ॥११॥ केम करे कुळ जन कदी ॥ कुकर्मकेरुं काम ॥ दूर रहे दिल दोषथी ॥ देखि दुःखनुं धाम ॥ १२ ॥

टीका ॥ पेहेला दोहरामां `र। व्यंजन घणी वार आवे ॥ अने बीजा अर्धा दो-

हरामां ।क। घणी वार आवे छे ॥ अने अर्धामां ।द। व्यंजन बहु आवे छे माटे ते बधां वृत्तनुपासनां उदाहरण छे ॥ देशी भाषाने मते छेकानुंप्रास तथा वृत्तनुंप्रासमां अक्षर सगाइ छे एना बीजा भेद घणा छे ॥

❁ अथलाटानुं प्रास ॥४॥ ❁ लक्षण दोहरो ॥ शब्दतणी आवृत्तिमां ॥ अर्थ एक ज्यां होय ॥ छे लाटानुंप्रास ते ॥ कहे कवि सौ कोय ॥१३॥ उ०॥ कमळ चरण ने कमळ कर ॥ कमळ वदन कहेवाय ॥ एवा श्री हरिकृष्णनुं ॥ ध्यान धरे मुनिराय ॥१४॥ (आने भाषामां यमक पण कहे छे) ॥ ❁ अथ अंत्यानुंप्रास ॥५॥ ❁ चरण अंत अनुप्रास ते ॥ छे अंत्यानुप्रास ॥ भारति भूषण आदिमां ॥ प्रसिद्ध छेज प्रकाश ॥१५॥

टीका ॥ लखनोरमां छपायेला श्री गिरीधरदास कृत भारति भूषण ग्रंथमां तथा हरिचरणदास कृत चमत्कार चंद्रिकामां आ अनुप्रास लखेलो छे तेनी प्रवृत्ति संस्कृत काव्यमां थोडी छे पण भरतखडना देशोनी भाषामां तो ते विना चालेज नही॥

उ०॥ मालति छंद ॥ सदा घनशाम ॥ जपो शुभ नाम ॥ महा सुखकार ॥ करे भव पार ॥१६॥

टीका॥ बेद उत्तम गणाय छे पण तेनी भाषा तथा तेना लघु गुरु अक्षरना नियम वगरना त्रिपदादिक छदोना नियम प्रमाणे आज कोई संस्कृत कवि कविता करे तो ते प्रमाण थाय नही ॥ केमके वेदना छंदोना नियम ने संस्कृत छदोना नियम जुदा छे॥ वेदना छंदोमां लघु गुरुनो नियम नथी तेथी किया अक्षर उपर भार मुकवो तेने वास्ते स्वरनी निशानीयो करवी पडे छे॥ एमज सस्कृत छंदो करतां भाषाना केटलाएक छदो जुदा छे ॥ तथा भाषानी कविताना केटलाएक नियम पण जुदा छे ॥ भाषामां चरणने छेडे अनुप्रास न होय तो पीतना रोगवाळानां आंगळां खरी पड्यां होय एवी ते कविता लागे ॥ कह्युं छे के ॥

उपजाति छंद ॥ पादांतना प्रास विनानि मीठी ॥ कदापि देशी कविता न दीठी ॥ शुं पाव तारा पतथी सडया छे ॥ पादांतना प्रास खरी पडया छे ॥१७॥ ❁ अथ यमकालंकार ॥६॥ ❁ दोहा ॥ शब्दतणी आवृत्तिमां ॥ जूदा अर्थ जणाय ॥ ते शब्दालंकारमां ॥ यमक नाम कहेवाय ॥१८॥

टीका ॥ एक भगवा लुगडांवाळो बावो घरबारी थवा चहातो हतो ॥ तेने एक खरा संते उपदेश कर्यो के ॥

दोहरो ॥ भगवा भज भगवानने ॥ विषसम विषय विसार॥ भवन कर्याथि नहि मळे ॥ भवसागरनो पार ॥१९॥

टीका ॥ एमां भगवा भगवा ॥ विष विष॥ भव भव॥ एवा शब्दो बबे वार आव्या ॥ तेना अर्थ जुदा जुदा थाय छे माटे यमकालंकार छे ॥ वळी सव्यपेत यमक॥ अव्यपेत यमक॥ तथा महा यमक आदिक यमकना पण अनेक भेद कविप्रियामां तथा काव्य प्रकाशादिकमां छे ते ग्रंथ मोटो थई जाय माटे अमे लखता नथी॥

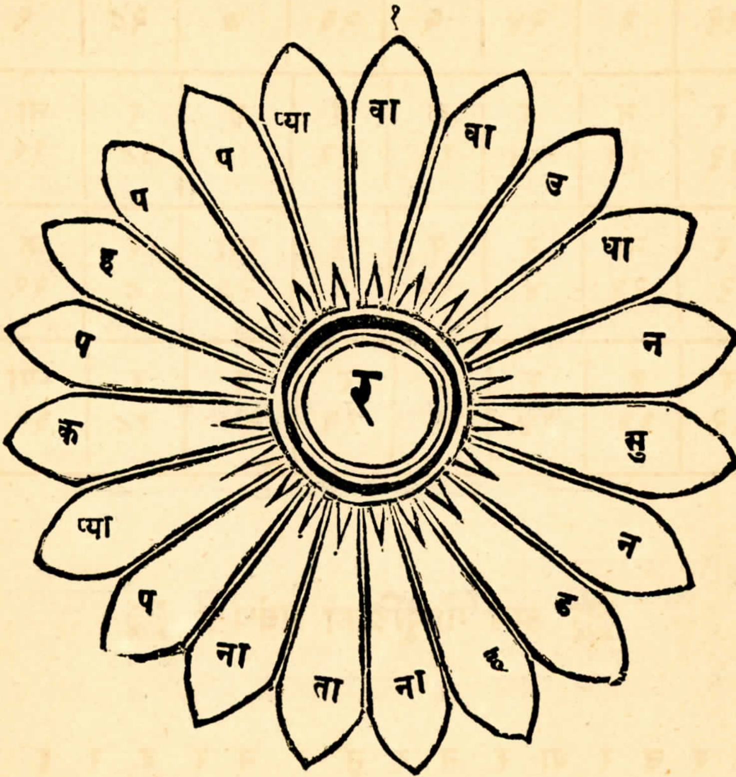
इति श्री शब्दालंकार प्रकरणं ॥

❁ अथ चित्रालंकार ॥७॥ ❁ दोहा ॥ कमळ प्रबंधादिक बहु ॥ तथा गतागत थाय ॥ इत्यादिक बहु भेद छे ॥ वळी नवा कल्पाय ॥ २० ॥

❁ अथ बहुदळ कमळ प्रबंध ॥ दोहरा ॥ ❁

वार वार उर धार नर ॥ सुरनर डर हरनार ॥ तारनारपर प्यार कर ॥ पर हर पर पर प्यार ॥२१॥ १ ॥ आ दोहरो अश्व गतिमां

गोमुत्रिकामां तथा कपाट प्रबंधमां पण वंचाय छे ॥ ॥ ॥



अथ अश्वगति प्रबंध ॥ दोहरो ॥

वा १	र २२	वा ३	र २४	उ ५	र २६	धा ७	र २८	न ९	र ३०
सु ११	र ३२	न १३	र ३४	ड १५	र ३६	ह १७	र ३८	ना १९	र ४०
ता २१	र २	ना २३	र ४	प २५	र ६	प्या २७	र ८	क २९	र १०
प ३१	र १२	ह ३३	र १४	प ३५	र १६	प ३७	र १८	प्या ३९	र २०

अथ गोमूत्रिका प्रबंध ॥

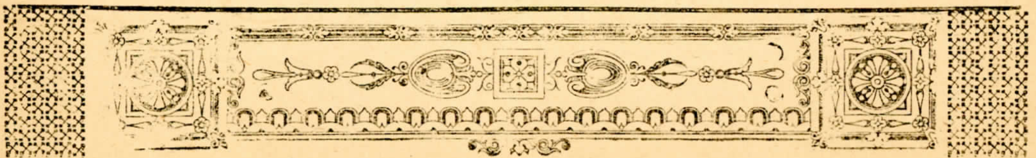
वा र वा र उ र धा र न र सु र न र ड र ह र ना र

ता र ना र प र प्या र क र प र ह र प र प र प्या र

अथ कपाट प्रबंध ॥



वा	र	ता
वा	र	ना
उ	र	प
धा	र	प्या
न	र	क
सु	र	प
न	र	ह
ड	र	प
ह	र	प
ना	र	प्या

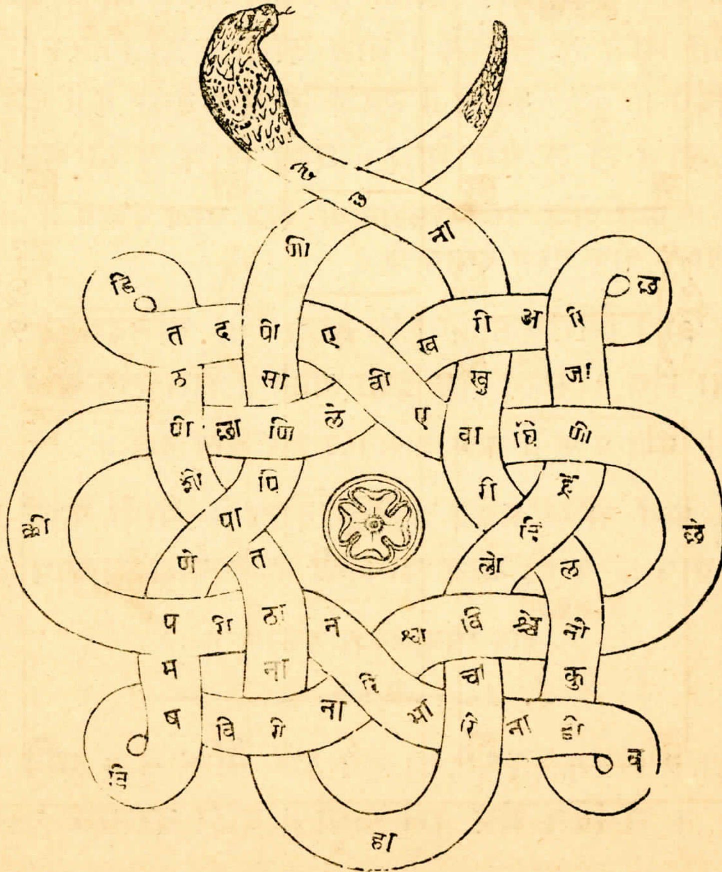


दोहरो ॥ जे विशेष वैराग्यथी ॥ संत तजे संसार ॥ नारी काळी नागीणा ॥ कही करे उद्धार ॥२२॥

❀ अथ नागपास प्रबंध ॥ स्रग्धरा छंद ॥ ❀

॥ स्त्री निंदा ॥

॥ दे छे नारी खुवारी दिलनी कुडी वडी नारि भारी नठारी ॥
॥ पक्की पीछाणी लेवी खरि अरि छरि जाणी हृदिल्यो विचारी ॥
॥ हारी नाठा तपाशी पीठ तडि तदपी एविए वाघीणी छे ॥
॥ निश्चे विश्वारि नारी विष विषमपणे पापीणी सापीणी छे ॥२३॥



स्रग्धरानी टीका ॥ नारीने खरेखरी शत्रुनी छरी जेवी जाणीने ह्रदयमां विचारी लेवी ॥ तेनाथी हारीने नाठा तोपण तेनी पीठे तडी अर्थात् दोडी ॥ ते आखा विश्वनी शत्रु छे ॥

वात ॥ नारदमुनिये प्रसन्न थैने एक राजाने कह्युं के मागे ते आपुं ॥ त्यारे ते राजाये त्रणवानां माग्यां ॥ एक तो लाज एटले घणी आबरु मागी ॥ तथा निरंतर विवाह आदिक उत्सवो माग्यां ॥ तथा वत्स एटले पुत्र माग्या ॥ त्यारे मुनिये कह्युं के ते तो तने बिजा देवो पण आपशे ॥ अने मारी पासे तो सदा नभे एवो लाभ माग ॥ पण जे लाभने वात मात्रमां भय छे तेवो लाभ हे भला राजा तुं न ले ॥ दोहरो ॥ लाज उत्सवो वत्स द्यो ॥ एज लाभनी आश ॥ कहे मुनि ते लाभने ॥ वात वातमां त्रास ॥२४॥ ❀ अथ गतागत प्रबंध ॥ ❀ श्लोक ॥ लाज उत्सव देवो दे ॥ देवो दे वत्स उजला ॥ लाभ ले तुं नभे तेवा ॥ वाते भे न तुं ले भला ॥२५॥

टीका ॥ एमां पहेलुं चरण उलटावाथी बीजुं चरण वंचाय छे ॥ अने त्रीजुं चरण उलटावाथी चोथुं चरण वंचाय छे ॥

❀ अथ निरोष्ठक ॥ ❀ दोहा ॥ दीनदयाळ दया करे ॥ थाय संतनो संग ॥ लागे तेह दया थकी ॥ संत संगनो रंग ॥२६॥

टीका ॥ एमां प फ ब भ म व अने उ स्वर आवे नहीं ॥

❀ अथ अधर प्रबंध ॥ ❀ दोहा ॥ पापी फावे पापमां ॥ भावे पापे पाप ॥ पापी वावे पाप बी ॥ भे पामे माबाप ॥२७॥

इति चित्रालंकार प्रकरण ॥

दोहा ॥ संवत् (१९५२) दृग शर भक्ति भू ॥ शुदि बीज कार्तिक मास ॥ ते दिन ग्रंथ पुरो कर्यो ॥ वशि वरताले वास ॥२८॥

भूल चुक थाळो कहीं ॥ हृदय न धरशो रोष ॥ साक्षर जनो सुधारजो ॥ क्षमा करी मुज दोष ॥२९॥ उद्धव मत आचार्य जे ॥ भगवत्प्रसाद बाळ ॥ जय श्री सहजानंदनी ॥ वदे विहारीलाल ॥३०॥ शार्दूलविक्रीडित ॥ धामी अक्षर धामना प्रभु बहु नामी रूपावान छे ॥ जेनुं शंकर शेष आदि सुर सौ धारे सदा ध्यान छे ॥ कीधां प्रोढ पराक्रमो कळि विषे मानुष्य काया धरी ॥ ते सर्वे सत्संगिने सुख तथा शांती करो हे हरी ॥३१॥ ६१९ ॥

इति श्री विहारीलालाचार्य विरचित अलंकारा दर्श ग्रंथ समाप्तः ॥

आर्या गीति ॥ तपाशि त्र्यंबक तनुजे ॥ भारत कविता गणाधिपे जेम ॥ ञ्यंबक सुत शास्त्रीये ॥ बदरीनाथे (गायकवाड सरकारना मुख्य शास्त्री) तपाशिआ तेम ॥१॥

अलंकारादर्शनुं शुद्धिपत्रक.

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	ओळ
गणाना	टाणांना	प्रस्ता०४	प्रस्ता. १५
टाणाना तथा पुराणीए	बे वचे तथा जोइए	,,	१६
बद्रीनाथजी	बदरी नाथजी	,,	१८
इती	इति	,,	१९
हरी	हरि	१	१
शार्दुल	शार्दूल	१	२
बुद्धी	बुद्धि	१	५
बुद्ध	बुध	१	५
सिद्धी	सिद्धि	१	७
सिद्धी	सिद्धि	१	८
बुद्धी	बुद्धि	१	८
तणा ॥	लघूता ॥	१	१९
भूळ	भूल	२	१०
उपमा न ठरेयं	उपमान ठरेय	२	२५
उपमा न कहेय	उपमान कहेय	३	४
मुख्य	मुख	५	१०
लोधांकापति	लोधीकानापति	७	१६
रुपकऽलंकार	रपकालंकार	८	२०
समताद्रष्य	सम ताद्रष्य	९	१९
दाडुर	दादुर	१२	२०
त	ते	१३	१
घरसे	वरसे	१४	२३
सिद्धस्पदा	सिद्धास्पदा	१५	१
अडोळ	अडोल	१६	३
भ्रांति	भ्रांति	१६	२५
सुधां शु	सुधांशु	१७	१
तडुपरि	तदुपरि	१७	११

शुद्धापन्हुति अलकार	शुद्धापह्नुति अलकार	११	२३
न्हतिशयोक्ति	ह्नवातिशयोक्ति	१८	१
डुर्गपुर	दुर्गपुर	१८	२३
तुल्पयोगिता	तुल्ययोगिता	२०	२
मत्पंगमां	प्रसंगमां	२०	१०
तुल्पयोगिता	तुल्ययोगिता	२०	१२
तुल्पयोगिता	तुल्ययोगिता	२०	१३
तुल्पयोगिता	तुल्ययोगिता	२०	१९
तुल्प	तुल्य	२०	२०
सराणीय	सराणीये	२०	२३
सौने	सौनो	२१	११
जांणो	जाणे	२२	११
पदाथ	पदार्थ	२३	२३
अैक्यारोय	अैक्यारोप	२३	२५
भैक्याराय	अक्यारोप	२३	२७
अथवा	तथा	२३	१७
उदाहरमां	उदाहरणमां	२४	१८
नही	नदी	२६	१४
समोक्तिमां	समासोक्तिमां	२७	६
उचरुं	उचारुं	२७	१५
दादाषाचरना	दादाखाचरना	२८	२७
नागमाळा	नाग माळा	२९	१
अगे	अंगे	२९	२
छ	छे	२९	१२
मलिया	मळिया	२९	१७
मराल	मराळ	२९	१७
सारुप्प	सारुप्य	३०	१
सारुप्प	सारुप्य	३०	२
तो वध्यो	तो श्रेष्ठ वध्यो	३०	४
छांयमंई	छांयमांई	३०	५
अप्रस्तुत	प्रस्तुत	३०	७
पशुंओ	पशुओ	३०	१०
सारुप्प	सारुप्य	३०	२२

उदाहरमां	उदाहरणमां	३१	१८
को विद	कोविद	३१	२४
तेमां न	ते मान	३२	१२
अभिलाषा	अभिलाष	३४	९
आक्षेपा अलंकार	आक्षेपालंकार	३६	५
घर	घेर	३६	६
तवुं	तेवुं	३७	१०
अंगागी	अंगांगी	३९	३
हनुमंतनुं	हनुमतनुं	४२	४
सौ तेहवारे	सौ जन तेहवारे	४२	१४
सप्त	सत्य	४४	४
दहेज तेह	दहेज वन तेह	४४	१७
गीती	गीति	४६	२
कुसंगिया	कुसंपिया	४६	१२
जगन	जगने	४७	१९
शुद्धांत रे	शुद्धांतरे	४९	१४
हरिं	हरि	५१	२६
दयाळ	दयाय	५४	१३
सच्चिदानंजी	सच्चिदानंदजी	५४	१८
समाधिलंकार	समाधि अलंकार	५४	२५
डुष्कर	दुष्कर	५५	२१
डुष्कर	दुष्कर	५५	२४
हतु	हेतु	५६	९
एक हेवी छे	ए कहेवी छे	५८	१०
कहीय	कहीये	५८	११
कहवत	कहेवत	५८	१४
भूंज	शूंज	५९	५
ध्पवसिति	ध्यवसिति	५९	२२
ध्पवसिति	ध्यवसिति	५९	२४
वात	व्रात	५९	२४
ध्पवसिति	ध्यवसिति	६०	३
राजच मुनी	राज चमुनी	६१	८
सुकजीनी	सुकविनी	६२	५

भक्तो	भक्त	६३	२
विदजन	विद् जन	६३	४
क्षितीस	क्षितीश	६३	१६
वे	बे	६४	१२
विष	विषे	६४	१४
अलंकार	लंकार	६६	११
पडित	पंडित	६९	१८
अनक	अनेक	६९	२४
मळीन	मळीने	७०	४
तनो	तेनो	७०	१५
जा	जो	७०	१८
छ	छे	७१	१४
बिजान	बिजाने	७१	१६
काई	कोइ	७१	१८
सानीनो	सोनीनो	७१	२४
शकाथी	शंकाथी	७२	१५
परस्परपरतर्णा	परस्पर तर्णा	७२	२३
निकळ	निकळे	७३	१०
ऋक्रोक्ति	वक्रोक्ति	७३	११
फरफार	फेरफार	७४	२४
माट	माटे	७५	२०
कर	करे	७५	२४
भूताथ	भुतार्थ	७६	१४
ढाळु	ढाळुं	७७	२
न	ने	७७	१९
कही	कहीं	७८	२३
वाग	वागे	८०	१८
एटल	एटले	८०	२३
नहा	नहीं	८०	३०
अर्थाषत्ति	अर्थापत्ति	८९	७
दुधा	दूधा	,,	९
नथि	नथी	,,	१३
वा शाम	वी शाम	९१	१

अलीआ गार	अली आगार	९१	२
——	ते संकरालंकारनो पहेलो भेद छे.	,,	१०
उदातालंकार	उदात्तालंकार.	९२	४
जुदा	जूदा	,,	१५
नही	नहि	,,	१६
जांणो	जाणो.	,,	२५
उदाता	उदात्ता	९४	३
निरर्व्याथि ॥	निरख्याथि	,,	५
अलौकिक	अलौकिक ॥	,,	,,
रुपानार मणिक	रपाना रमणिक	,,	२०
फड	झड	९५	५
पीतना	पतना	९६	२२

सुरत "विक्टोरीया" प्रेस.